प्रमोद सागर

हनुमान सिद्धी

मनोजवं मारूततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

हनुमान सिद्धि

संयोजन एवम् प्रस्तुति

प्रमोद सागर

आध्यात्मिक गुरू

◆ ज्योतिष एवम् प्राच्य गुह्य विद्याण्वेषी

◆ भाग्यशाली रत्न सलाहकार

◆ तंत्र-मंत्र-यंत्र विश्लेषक

◆ फेंगशुई एडवाईज़र ◆ पिरामिड विशेषज्ञ

◆ एक्युप्रेशरिस्ट ◆ हस्तरेखाविद्

2212696

प्रकाशक

अमित पाकेट बुक्स

सखुजा मार्किट, नज़दीक चौक अड्डा टांडा,
जालन्धर-8

50/-

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश न छापें तथा सामयिकों में भी प्रकाशित न करें।

रचना : हनुमान सिद्धि

लेखक : प्रमोद सागर

मूल्य : 50 रुपये

मुद्रक : सरताज प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर

टाईप सैटिंग : सनशाईन कम्प्यूटर, जालन्धर।

प्रकाशक :

अमित पाकेट बुक्स

सखुजा मार्किट, नज़दीक चौक अड्डा टांडा,
जालन्धर-8 फोन : 0181-2212696

अपनी बात

॥ॐ हनुमते नमः॥
मनोजवं मारूततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

स्वामी से बड़ा सेवक और भगवान से कहीं अधिक भक्त की महिमा और प्रभाव होता है। इस तथ्य का सर्वाधिक उपयुक्त उदाहरण भगवान श्री रामचंद्र जी के परम प्रिय भक्त और अनन्य सेवक महावीर हनुमान से बेहतर कहीं नहीं मिल सकता है। कलियुग के देवता के रूप में सर्व पूज्य और शीघ्र ही भक्तों पर प्रसन्न हो जाने वाले बजरंगबली की बुद्धि, चातुर्य, विद्या, अतुलित बल, पराक्रम, शक्ति और सिद्धियों के समक्ष सारा जगत शीश नवाता है।

अजर-अमर, अखण्ड ब्रह्मचारी, पवन पुत्र, रूद्रावतार, अंजनि नंदन इत्यादि विभिन्न नामों से प्रसिद्ध प्रबल वीर और पराक्रमी श्री हनुमान जी की महिमा सर्वविदित है। कलियुग में हनुमान जी सर्वाधिक शक्तिशाली उपास्य देव हैं। ये शक्ति के महासागर और साहस के प्रतीक हैं। आजन्म ब्रह्मचारी श्री हनुमान जी वानर-वंश के होते हुए भी सर्व-समर्थ देव हैं। इन्हें भगवान भोलेनाथ शिवशंकर का ही अंशावतार माना गया है।

श्री हनुमान जी वेद-वेदांग, ज्योतिष, योग, व्याकरण, तंत्र-मंत्र-यंत्र, संगीत, आध्यात्म और मल्लविद्या के आचार्य होने के साथ-साथ राजनीति, कूटनीति और रणनीति में भी कुशल हैं। इस भौतिक संसार में कोई भी ऐसा कार्य नहीं है जिसे हनुमान जी के लिए सहज में ही सम्पादित कर लेना संभव नहीं हो।

मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री रामचंद्र जी के अनन्य सेवक और प्रिय श्री हनुमान जी की श्रद्धापूर्वक साधना उपासना करने से साधक को बुद्धि, विद्या, ज्ञान, बल, यश, वैभव, कीर्ति, ऐश्वर्य, सुख-शांति, धन-सम्पत्ति, लोकप्रियता, निर्भीकता, धैर्य, सुदृढ़ता और वाक्पटुता जैसे अनेकानेक अद्भुत गुणों की प्राप्ति होती है। प्राचीन शास्त्रों तथा वैदिक ग्रन्थों तक में भी पवनसुत हनुमान जी की साधना-उपासना की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है।

श्री हनुमान जी भगवान भोलेनाथ की भांति भक्तों पर शीघ्र प्रसन्न हो जाया करते हैं और अपने भक्तों के संकट दूर करने के लिए दौड़े चले आते हैं। इसीलिये ये संकटमोचन कहलाते हैं। प्रस्तुत लघु ग्रन्थ में हनुमान जी की कृपा प्राप्ति के लिए विभिन्न मंत्रों, स्तोत्र, कवच, ध्यान, स्तवन, लहरी, प्रार्थना, चालीसा, साठिका, बजरंग बाण, बीसा तथा अन्यानेक तंत्र-मंत्र प्रयोगों का संकलन किया गया है। आशा है कि हनुमान के उपासकों के लिए यह पुस्तक रामबाण का काम करेगी।

आपके स्नेह-पत्रों का बेसब्री से इंतजार रहेगा।

पोस्ट बॉक्स नं. ❸
गंगापुर सिटी-322201 (राजस्थान)
(07463) 235525

प्रमोद सागर

विषय सूची

कलियुग के देवता श्री हनुमान जी	5
हनुमान जी के जन्म की कहानी	6
श्री पासावली प्रश्न चक्रम्	9
श्री हनुमान सिद्धि हेतु आवश्यक तथ्य	12
सर्व मनोकामना पूरक हनुमान यंत्र	17
श्री हनुमत् ध्यानम्	19
हनुमान जी के चमत्कारिक मंत्र	21
मनोकामना पूरक हनुमान मन्त्र प्रयोग	34
विशिष्ट हनुमत तंत्र प्रयोग	35
सर्वकष्ट निवारक संकटमोचक बजरंग बाण	37
बजरंग बाण	38
अथ श्री हनुमदद्वादशाक्षर मन्त्रम्	39
हनुमदष्टादक्षाक्षर मन्त्र प्रयोग	43
श्री हनुमत स्तोत्र	46
श्री हनुमत् स्तोत्राणि	47
हनुमत् कवच	49
श्री एकामुखी हनुमत् कवचम्	51
श्री पंचमुखी हनुमत् कवचम्	54
श्री हनुमदादिषट् कवच प्रयोग	59
श्री शंत्रुजय हनुमत स्तोत्रम्	60
श्री हनुमान स्तुति	63
श्री हनुमान पंचक	64
दसाक्षरी वीर साधन हनुमान मंत्र प्रयोग	65
श्री संकटमोचन अष्टक	66
ऋण मोचन मंगल स्तोत्र	68
श्रीराम प्रोक्त हनुमत् कवचम्	69
श्री एकादशमुख हनुमद् कवचम्	71
श्री पंचमुखीवीर हनुमत्वकवचम्	73
श्री हनुमान-स्तवन	75
अथ श्री सुन्दर काण्ड	77
श्री हनुमान वंदना स्तोत्र	98
श्री हनुमान नमस्कार स्तोत्र	99
अथ श्री हनुमल्लांगूलास्त्र स्तोत्र	100
अथ श्री हनुमान लहरी	104
श्री हनुमंत बीसा सिद्धि	109
श्री हनुमान चालीसा अनुष्ठानम्	110
श्री हनुमान चालीसा	112
अथ श्री हनुमत् साठिका	114
श्री बजरंग चालीसा	116
आरती श्री हनुमान जी की	118
हनुमान सिद्धि प्राप्त करने का सर्वाधिक प्रभावशाली उपाय पारद शिवलिंग	119
पारदयोगी महाबली लंकेश्वर रावण राज	122
पारद शिवलिंग के अनुभूत प्रयोग	123
पारद शिवलिंग की उपासना विधि	124

कलियुग के देवता श्री हनुमान जी

मनोजवं मारूततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥
अतुलित बलधामं-हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानरामामधीशं, रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि॥
ॐ हं हनुमते रूद्रात्मकाय हुं फट्।

अंजनी गर्भ संभूतो, वायु पुत्रो महाबलम्।
कुमारो ब्रह्मचारी च हनुमान से प्रसिद्धिताम्॥

हनुमान जी ज्ञेता, द्वापर और कलियुग में सदैव श्रद्धा-सम्मान के पात्र रहे हैं। कलियुग में तो उन्हें सर्वसमर्थ, प्रत्यक्ष और आशुतोष देवता के रूप में स्मरण किया जाता है। वे शक्ति के आगार, भक्ति के भंडार, धैर्य के हिमालय और सहनशीलता के समुद्र हैं। विद्वता में वे अद्वितीय हैं। राजनीति, कूटनीति और दूतकला के विशेषज्ञ हैं। संगीत में उनकी गहरी रूचि है। वे ज्योतिष शास्त्र, वेद शास्त्र और व्याकरण के ज्ञाता होने के साथ ही मल्लविद्या में भी पारंगत हैं। परम आस्तिक, वैभव-विलास से बहुत दूर, आजन्म ब्रह्मचारी, रोम-रोम से वैष्णव, श्रीराम के अनन्य भक्त, पर दु:ख-कातर और समस्त आपदाओं का निवारण करने में समर्थ हनुमान जी महान योगी, सिद्ध तंत्रज्ञ तथा ज्ञान-विज्ञान के निधान हैं।

कलियुग में यंत्र-तंत्र भक्तों को दर्शन देते रहना-उनके कालजयी क्षमता के प्रमाण हैं। पूर्ण श्रद्धा, शुचिता, आस्था और तन्मयता के साथ यदि कोई व्यक्ति हनुमान जी का स्मरण, चिंतन, वंदन अथवा पूजन करता है, तो वह अवश्य ही संकट मुक्त हो जाता है।

हनुमान जी के जन्म की कहानी

श्री बाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान जी के जन्म की कहानी इस प्रकार है:

शचीपति इंद्र की समस्त अप्सराओं में पुंजिकस्थला नाम की अप्सरा अतिशय रूपमती और गुणवती थी। एक बार उन्होंने श्री दुर्वासा ऋषि का उपहास कर दिया। क्रुद्ध-ऋषि ने उसे श्राप देते हुए कहा-''वानरी की भंति चंचला, तू वानरी हो जा।''

ऋषि का भीषण श्राप सुनते ही पुंजिकस्थला भयभीत हो उठी और ऋषि के चरणों में लोटती हुई दया की भीख मांगने लगी। सहज कृपालु ऋषि द्रवित हो उठे : 'मेरा वचन मिथ्या नहीं हो सकता। वानरी तो तुम्हें होना ही होगा। किंतु तुम इच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ रहोगी : अर्थात् तुम जब चाहो वानरी और जब चाहो मानवी वेष में रह सकोगी।'

इस प्रकार ऋषि के श्राप से पुंजिकस्थला ने कपि योनि में वानर राज महामनस्वरी कुंजर की कामरूपिणी कन्या के रूप में पृथ्वी पर जन्म लिया। वहीं कुंजर पुत्री कपिश्रेष्ठ केसरी की भार्या हो कर 'अंजना' नाम से विख्यात हुई। कपिराज केसरी माल्यवान पर्वत पर शासन करते थे। एक दिन वह गोकर्ण पर्वत पर गये। पश्चिमी समुद्र की ओर से मलावार पर्वत के निकट स्थित वह गोकर्ण पर्वत बड़ा ही पावन और रमणीक तीर्थ स्थल था। वहां तप में लगे ऋषियों को शंबसादन नामक एक दैत्य अपार यंत्रणाएं देता था। देवर्षियों की आज्ञा से उन्होंने शंबसादन का संहार किया और उनसे संतान सुख की प्राप्ति का वर पाया था। समस्त सुविधाओं से सम्पन्न इसी सुंदर पर्वत पर अंजना अपने पतिदेव के साथ सुखपूर्वक निवास करती थी। सुखपूर्वक बहुत दिन बीत गये, पर उनके कोई संतान नहीं हुई।

स्कंद पुराण (वैष्णव खंड) के अनुसार, दुखी अंजना महामुनि मतंग के निकट जाकर कातर स्वर में कहने लगी : 'मुनीश्वर! मेरा कोई पुत्र नहीं है। आप कृप्या मुझे पुत्र प्राप्ति का कोई उपाय बताकर अनुगृहीत कीजिए।' तपोधन मतंग मुनि ने अंजना से कहा : 'तुम सीधे वृषभांचल (वेंकटाचल) पर जाकर वहां के पुष्करिणी तीर्थ में स्नान कर, भगवान बेंकटेश्वर के मुक्तिदायक श्री चरणों में अपना प्रणाम निवेदित करो। पुनः वहां से कुछ ही दूरी पर स्थित आकाश गंगा नाम तीर्थ पर जाकर तप करो और उसका परम पावन जल पी कर वायु देव को प्रसन्न करो। ऐसा करने से तुम्हें देव, दानव और मनुष्य से अजेय तथा अस्त्र-शस्त्रादि से भी अवैध्य अनुपम पुत्र प्राप्त होगा।'

देवी अंजना ने, महामुनि के आदेशानुसार, वृषभाचल की पुष्करिणी में स्नान

कर, वेंकट और वराह भगवान् के श्री चरणों की अनन्य आंतरिक भक्ति के साथ, वंदना की। तदनंतर उन्होंने आकाश गंगा तीर्थ में स्नान कर उसके जल का पान किया। फिर वह उसके तट पर तीर्थ की ओर अभिमुख होकर अत्यन्त श्रद्धा, विश्वास एवं धैर्यपूर्वक तपोरत रही और कायिल क्लेशों की किंचित भी चिंता न कर अखंड तप करती रही।

भगवान् भास्कर मेष राशि पर थे। चित्रा नक्षत्रयुक्त पूर्णिमा तिथि थी। अंजना के कठिन तपश्चरण से तुष्ट पवन देव ने प्रकट होकर अंजना से कहा – 'देवी! मैं तुम्हारे तप से प्रसन्न हूँ। तुम इच्छित वर मांगो, मैं अवश्य प्रदान करूँगा।' पवन देव के प्रत्यक्ष दिव्य दर्शन प्राप्त कर प्रफुल्वमना अंजना उनके श्री चरणों में अपने प्रणाम निवेदित कर विनीत स्वर में बोली : 'महाभाग! मुझे उत्तम पुत्र प्रदान करने का अनुग्रह कीजिए।' प्रसन्न पवन देव ने कहा : 'सुमुखि! चैत की पूनो के दिन मैं ही तुम्हारा पुत्र बन कर तुम्हें जगत में प्रसिद्ध कर दूंगा।'

मनोवांछित वर प्राप्त कर अंजना देवी की प्रसन्नता का कोई पारावर नहीं रहा। अपनी प्राणप्रिया की वर प्राप्ति का संवाद प्राप्त कर कपिराज केसरी भी परम प्रमुदित हुए।

एक दिन परम लावण्यवती, विशाल लोचना माता अंजना ने दिव्य श्रृंगार किया। उनके मनोरम शरीर पर पीतवर्णी साड़ी अत्यंत शोभायमान थी। साड़ी का किनारा लाल रंग का था। वह विविध सुरभित सुमनों के अनुपम आभूषणों से, साक्षात् लौकिक सौंदर्य का विमल विग्रह प्रतीत हो रही थी।

पर्वत शिखर पर खड़ी माता अंजना प्राकृतिक सुषमा का अवलोकन कर मन ही मन मुदित हो रही थी कि सहसा उनके मन-प्राणों में कामना उदित हुई। 'कितना अच्छा होता, यदि मेरा एक सुयोग्य पुत्र होता।' अचानक वायु का तीव्र झोंका आया और अंजना की साड़ी का आंचल कुछ खिसक गया। उनके अंग अनावृत्त हो गये। सहमती हुई सती अंजना ने अपना वस्त्र संभाला और कुपित स्वर में बोल उठी : 'कौन दुरात्मा मेरे पातिव्रत्य पर प्रहार करना चाह रहा है ?' वह श्राप देने के उद्यत हो उठी।

सती साध्वी अंजना को कुपित देख कर तत्क्षण पवन देव प्रकट हो गये और कहा : सुश्रोणि! मैं तुम्हारे पातिव्रत्य को विक्षत नहीं कर रहा हूँ। अतः तुम्हारा भय व्यर्थ है। मैंने अव्यक्त रूप से तुम्हारा आलिंगन करके मानसिक संकल्प के द्वारा तुम्हें बल-पराक्रम से विभूषित कर विलक्षण विवेकशील पारक्रमी पुत्र प्रदान किया है। हे कमलाक्षी! मैंने तुम्हारे साथ केवल हृदय संगम किया है, जिससे तुम्हारा शील खंडित न हो। तुम्हारा पुत्र महान, धैर्यवान, महातेजस्वी, महाबली, महापराक्रमी तथा लांघने और छलांग मारने में मेरे ही सदृश होगा।

अञ्जनाया वचः श्रुत्वा मारुतः प्रत्यभाषत।
न त्वां हिंसामि सुश्रेणि मा भूत ते मनसो भयम्॥
मनसारिम गतो यत् त्वां परिष्वज्य यशस्विनि।
वीर्यान् बुद्धिसम्पन्नस्तव पुत्रो भविष्यति॥
महासत्त्वो महातेजा महाबलपराक्रमः।
लङ्गनेप्लवने चैव भविष्यति मया समः॥

माता अंजना प्रसन्न हो गयी और उन्होंने पवन देव को क्षमा कर दिया। वायु देव की विमल कृपा से अंजना गर्भवती हुई और एक गुफा में श्री हनुमान जी को जन्म दिया।

कल्प भेद से कुछ लोक कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को भी हनुमान जी का अवतरण मानतें हैं। परन्तु बाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण आदि ग्रंथों में लिखा है कि भगवान शिव के ग्यारहवें अवतार चैत्र शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार को श्री हनुमान जी पृथ्वी पर अवतरित हुए।

भगवान शिव के ग्यारहवें रुद्रावतार, मारुतात्मज, केसर नंदन, अंजना पुत्र के पृथ्वी पर चरण रखते ही प्रकृति में ऋतु परिवर्तन हो गया। सर्वत्र रम्यता विराजने लगी। दिशाएं प्रसन्न हो गयी। सूर्य देव की किरणों में अवर्णनीय स्निग्धता और मृदुता भर गयी। सरिताओं में स्वच्छ सलिल बहने लगा। पर्वत उत्सुक आंखों से आंजनेय के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रमुदित प्रपात क्रीड़ारत हो उछल-कूद कर रहे थे। वन-उपवनों और बाग-वाटिकाओं में विविध वर्ण के मनोहर पुष्प खिल उठे थे। उन पर भौंरे गुंजार कर रहे थे। मंद सुगंध वायु मंथर गति से डोल रही थी।

श्री पासावली प्रश्न चक्रम्

(महावीर प्रश्नावली)

यह पासावली प्रश्न चक्रम महर्षि गर्गाचार्य द्वारा रचित है। यह एक मूक प्रश्न पासावली है, जिसके द्वारा प्रश्न का भाव क्या सोचा गया है तथा उसका प्रश्न फल कैसा घटित होगा ? इस बात की तत्क्षण जानकारी हो जाती है। यह एक चमत्कारी प्रश्नफल विधि है।

विधि-प्रश्नकर्त्ता को चाहिए कि सर्वप्रथम पासावली पर कुछ पुष्प तथा दक्षिणा समर्पित करके इसे प्रणाम करे। तत्पश्चात् पूजन वाली एक छोटी सुपारी हाथ में लेकर निम्नांकित मंत्र को इक्कीस दफा जाप करके सुपारी को अभिमंत्रित करें और आँखें बंद करके उस सुपारी को पासावली पर डाल दें। जिस चक्र में सुपारी पड़े उसके अनुसार फल समझ लेना चाहिए।

मंत्र-ॐ नमो भगवती कूष्माण्डणी सर्व कार्य प्रसाधिनी सर्वनिमित प्रकाशिनी ऐहि-ऐहि वरं देहि वरं देहि हलि-हिल मातंगिनी सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि स्वाहा।

१११	११२	११३	११४	१२१	१२२	१२३	१२४
१३१	१३२	१३३	१३४	१४१	१४२	१४३	१४४
२११	२१२	२१३	२१४	२२१	२२२	२२३	२२४
२३१	२३२	२३३	२३४	२४१	२४२	२४३	२४४
३११	३१२	३१३	३१४	३२१	३२२	३२३	३२४
३३१	३३२	३३३	३३४	३४१	३४२	३४३	३४४
४११	४१२	४१३	४१४	४२१	४२२	४२३	४२४
४३१	४३२	४३३	४३४	४४१	४४२	४४३	४४४

श्री महादेव नमस्कृत्यं केवल ज्ञान भास्करम्।
वक्षे सद्गुरूणां दुष्टं ज्ञेयं येन शुभाशुभम्॥

॥ अथ प्रश्न फल कथनम् ॥

111. उत्तम। तुम्हारा शकुन शुभ है। कार्य सिद्धि होगा। व्यापार में लाभ।
112. मध्यम। इस कार्य के करने में लाभ नहीं है।
113. उत्तम। चिंता दूर होगीं। कल्याण होगा।

114. उत्तम। कुल की वृद्धि और लाभ होगा।

121. मध्यम। सम्मान-प्राप्ति। कुछ चिंता होगी। श्री रामेश्वर की पूजा करें।

122. उत्तम। घर में लाभ। मनोकामना पूर्ण।

123. उत्तम। कार्य सिद्धि। कुटुंब की वृद्धि और स्त्री तथा धन लाभ।

124. उत्तम। धन-संतान की प्राप्ति। व्यापार में लाभ। शनिश्चर देव की पूजा करें।

131. उत्तम। सब बातें भली होगी। राज्य का काम मिलेगा। खोयी वस्तु मिलेगी।

132. उत्तम। जो कार्य सोचा है, पूरा होगा। चिंताएं दूर होगी।

133. मध्यम। धन की हानि। सोमवार को शिवजी की पूजा करें।

134. उत्तम। घर में लाभ। शासन से मनोवांछित फल मिलेगा।

141. उत्तम। घर में लाभ। कपड़े के व्यापार में अति लाभ। दु:ख दूर होंगे।

142. उत्तम। भाई-बन्धु, मित्रों से मिलाप। चिंताएँ मिटेगी।

143. उत्तम। मनोकामना सिद्ध होगी। धन-धान्य की चिंता दूर होगी। कल्याण और पुत्र लाभ। गांव जाने का स्वप्न दिखे तो अति उत्तम है।

144. उत्तम। सकल कामना सिद्ध होगी। स्वप्न में देवी के दर्शन हों तो शुभ है।

211. उत्तम। अर्थ सिद्धि और कुल में वृद्धि। सारे मनोरथ सिद्ध।

213. मध्यम। मन में स्त्री अथवा धन की चिंता है। सोलह मास के अंत में फल मिलेगा।

214. उत्तम। कल्याण होगा और गयी वस्तु मिलेगी। धन-धान्य की चिंता दूर होगी।

221. उत्तम। तीन वर्ष से चिंता अथवा दु:ख व क्लेश है। वह दूर होगा।

222. मध्यम। घर में विरोधी की स्थिति है। स्त्री से प्रीति कम है। मित्रों से बोलचाल नहीं है, जिससे क्लेश है। श्री भगवान की पूजा करें।

223. मध्यम। मन में चिंता है। लाभ नहीं होता। घर में क्लेश रहता है। कुछ दिन में लाभ होगा।

224. पराये घर की फिक्र है। नव ग्रहों की पूजा करें।

231. उत्तम। सुख और लाभ होगा। एक महीने के अंत में फल मिलेगा।

232. मध्यम। इस काम को न करें। डर है, सुख न मिलेगा। घर में विरोध है और व्यापार में लाभ नहीं है।

233. मध्यम। इस काम के करने से चिंता होगी। कुछ और काम करें।

234. सामान्य है। घर में विरोध रहता है और कुटम्ब में एका नहीं है। डरें नहीं, सब दु:ख दूर हो जाएंगे।

241. उत्तम। घर में सुख होगा। कामना सिद्ध होगी।
242. मध्यम। व्यापार में लाभ। सूर्य का व्रत करें, शरीर सुख मिलेगा।
243. उत्तम। व्यापार में लाभ। मन का संदेह दूर होगा।
244. उत्तम। सुख लाभ। चिंताएं दूर होंगी।
311. उत्तम। अच्छे स्थान से लाभ। मनोकामना पूर्ण होगी।
312. उत्तम। मनोकामना सफल होगी। धन-धान्य का लाभ। स्वप्न में गज, अश्व दिखें तो मांगलिक लाभ।
313. सामान्य। धन की इच्छा है, परन्तु बैरी बहुत हैं। चिंता दूर होगी। शकुन सामान्य है।
314. उत्तम। कल्याण होगा। अर्थ प्राप्त होगा। श्री गणेश की पूजा करें।
321. मध्यम। घर में लाभ। व्यापार में लाभ होगा।
322. मध्यम। धन का नाश होगा।
323. अर्थ लाभ, सौभाग्य मिलेगा। शत्रु नाश।
324. उत्तम। कृषि व्यापार में बहुत लाभ। मनोकामना पूर्ण होगी। हनुमानजी का पूजन करें।
331. उत्तम। चिंताएं दूर होंगी। लक्ष्मी की प्राप्ति होगी। कार्य सिद्ध होगा।
332. मनोरथ सिद्ध होंगे। चिंता न करें।
333. उत्तम। काम शुभ होंगे। चिंताएँ मिटेंगी। भाई-बन्धु, मित्र से मिलाप होगा।
334. उत्तम। व्यापार में लाभ। मनोरथ सिद्ध होंगे।
341. उत्तम। सब कार्य सिद्ध होंगे। धैर्य धरें।
342. उत्तम। घर में प्रीति बढ़ेगी और अति लाभ होगा। मनोकामना फलेगी।
343. मध्यम। बैरी बहुत हैं। जो काम विचारा है, सो बनेगा, पर इस काम में लाभ नहीं है।
344. उत्तम। बहुत लाभ होगा। मित्र-बन्धु से मिलाप होगा।
411. उत्तम। मनोरथ सिद्ध होगा। धन-धान्य का लाभ भी।
412. चिंताएं कुछ दिन से मिट जाएंगी। आपकी वस्तु दूसरे के हाथ में है। धैर्य धरें।
413. उत्तम। चिंता मिटेगी। धन-उपार्जन अर्थात् व्यापार करें।
414. उत्तम। कुछ चिंताएँ जो शीघ्र दूर होंगी। व्यापार में सुख लाभ। मनोरथ फलेगा।
421. उत्तम। मन में परदेश जाने की इच्छा है। मनोरथ सिद्ध होगा।

422. मध्यम। मन में चिंता है। पूजन करें। चिंता, रोग दूर होंगे।

423. उत्तम। घर में लाभ बैरी का नाश। सुख-सम्पत्ति मिलेगी। कुटुम्ब में फल पुत्र का लाभ, परन्तु क दीप-दीपक देवता के मंदिर में जलाएं।

424. मध्यम। घर में चिंता है, दूर होगी। मनोकामना सिद्ध होगी।

431. उत्तम। लाभ होगा, किसी स्थान की प्राप्ति होगी। मनोरथ सिद्ध होंगे।

432. उत्तम। लाभ है। चिंता दूर होगी। धन-धान्य का लाभ और सुख होगा। परदेश जाएं तो सम्मान पाएंगे।

433. मध्यम। मन में चिंता है। शंका न करें। सुख होगा।

434. उत्तम। शरीर में क्लेश है अथवा भाई-बन्धु से मेल नहीं है। मनोकामना पूर्ण होगी।

441. उत्तम फल प्राप्ति होगी। कोई उपाय करें। मनोरथ सिद्ध होगा।

442. मध्यम। इस काम के करने से सुख न मिलेगा। शिवजी के मंदिर में एक दीपक का प्रकाश करें।

443. मध्यम। यह काम अशुभ है। इसमें चिंता होगी और काम बिगड़ेगा। नवग्रह पूजन से कल्याण होगा। शकुन मध्यम है।

444. उत्तम। व्यापार में लाभ। मन में कुछ चिंता होगी। कुछ दिन बाद सकल कामना सिद्ध होगी। श्रीराम नाम की गोली बनाकर जल में डालें अथवा जीवों को चुगाएं। सुखदायी फल मिलेगा।

श्री हनुमान सिद्धि हेतु आवश्यक तथ्य

जन-मानस में आंतियाँ फैली हुई हैं, कि हनुमान से संबंधित साधनाओं को प्रातः के 'सवा प्रहर' नहीं करना चाहिए। जबकि ऐसा किसी भी शास्त्र या पुराण में नहीं लिखा है, यह तो मात्र लोगों के मन में एक भ्रामक प्रस्तुति उपस्थित की है, जिससे वे इसे क्लिष्ट मान लें, जबकि हनुमान तो अत्यधिक नम्र और सरल स्वभाव के देव हैं।

श्री हनुमान पवन देव के पुत्र तथा रुद्रावतार माने गये हैं। इनके जन्म के समय ही अनेक देवों ने इन्हें वरदान लेकर अजर-अमर बना दिया था। अखण्ड ब्रह्मचर्य के पालन के कारण ही ये सर्वाधिक पूज्य माने जाते हैं। हनुमान जी साधना अगर भक्ति, श्रद्धा, समर्पण एवं संलग्नता से की जाये, तो उनकी कृपा अवश्य प्राप्त होती है तथा उनके जैसी ही भक्ति, अखण्डता, अडिंगता, सौम्यता और बल प्राप्त होता है।

हनुमत् सिद्धि की विशेष बात यह है कि इनका पूजन विधान जिस विधि से

आरम्भ हो, चाहे वह पंचोपचार हो या षोडशोपचार, उसी विधि से समाप्त करना चाहिए, क्योंकि अधिकांश साधक समयानुसार पूजन विधान को छोटा या बड़ा कर लेते हैं।

साधक को पूर्ण एकाग्रता से सिद्धि सम्पन्न करनी चाहिए।

श्री हनुमान के प्रिय दिवस तो मंगल और शनि माने गये हैं। इन दिनों में इनकी सिद्धि करनी चाहिए। ये दिन इन्हें अत्यन्त प्रिय हैं और ग्रहणकाल में सिद्धि करने से साधक को सामान्य फल से सौ गुना फल अधिक मिलता है।

हनुमान जी की सिद्धि करते समय पवित्रता और सात्विकता का विशेष ध्यान देना अनिवार्य है। मांस, मदिरा, अंडे तामसी भोजन आदि का सर्वधा त्याग करना चाहिये। सात्विक वातावरण में स्वच्छ वस्त्र पहनकर एकांत में मंत्रों की साधना करनी चाहिये-क्रोध, द्वेष, हिंसा, आदि का इन दिनों त्याग करके शान्ति, सहयोग एवं प्रेम का वातावरम रखना चाहिये। अनुष्ठान की समाप्ति तक एक समय भोजन करना चाहिये। जप दोनों कालों प्रातः एवं सायं किया जा सकता है। शारीरिक एवं मानसिक शुद्धता रखनी आवश्यक है।

- हनुमान सिद्धि में विशेषतः प्रत्येक वस्तु की शुद्धता तथा स्वयं साधक की अन्तः तथा बाह्य शुद्धि अपेक्षित है।
- इस सिद्धि में प्रयुक्त होने वाला नैवेद्य आदि शुद्ध घी में बना होना चाहिए।
- तिल के तेल में सिन्दूर मिला कर हनुमत् विग्रह (मूर्ति) पर चोला चढ़ाना चाहि।
- हनुमान जी को रक्त चन्दन या केसर के साथ घिसा हुआ श्वेत चन्दन भी लगाने का प्रावधान है।
- लाल तथा पीले पुष्पों को हनुमत्पूजा में चढ़ायें, बड़े पुष्पों में कमल, सूर्यमुखी तथा हजारा पुष्पों को भी चढ़ाने का शास्त्रीय विधान है।
- हनुमान सिद्धि में मूर्ति को नैवेद्य-
- प्रातः गुड़ एवं नारियल का गोला,
- मध्याहून-गुड़, घी, गेहूँ की रोटी का चूरमा
- रात्रि-आम, अमरूद एवं केला समर्पित करना चाहिए।
- हनुमान आरती में देशी घी का दीपक 'एक बत्ती', 'पांच बत्ती' या 'सात बत्ती' का लगाना चाहिए।
- हनुमत् सिद्धि के दिनों में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन नितांत आवश्यक होता है, जो साधना की मुख्य धुरी है।
- इन दिनों में नैवेद्य के रूप में हनुमत् मूर्ति को भोग लगाते हुए नैवेद्य को ही भोजन के रूप में ग्रहण करना चाहिए।

- हनुमान सिद्धि में हनुमान विग्रह को एकटक देखते हुए मंत्र जप करना चाहिए।
- इस सिद्धि में मंत्र जप बोलकर करना चाहि, जिसका उच्चारण स्पष्ट एवं श्रव्य हो। सात्विक तथा श्रद्धाभाव से युक्त स्त्रियाँ भी हनुमान सिद्धि कर सकती हैं।
- हनुमान सिद्धि स्वकल्याण या लोक कल्याण की भावना से करनी चाहिए, जिससे सिद्धि में शीघ्र सफलता मिल सके।
- दूसरे का अनिष्ट या अपकार करने के लिए हनुमान सिद्धि बिल्कुल नहीं करना चाहिए। इससे स्वयं की हानि होने की संभावना रहती है, क्योंकि हनुमान कल्याणकारी देव माने जाते हैं।
- हनुमान सिद्धि के लिए 'मूंगे की माला' का प्रयोग करना चाहिए।
- हनुमान सिद्धि में लाल आसन पर बैठें, लाल धोती एवं लाल चादर का प्रयोग करें। तेल का दीपक तथा अगरबत्ती या धूप पूरे सिद्धि काल में जलते रहने चाहिए।
- हनुमान सिद्धि दास्य भाव से करनी चाहिए, इससे वे शीघ्र प्रसन्न होते हैं।
- हनुमत् सिद्धि में एक समय ही भोजन करें, सूर्यास्त के बाद पूजन आदि करके भोजन करें। इस भोजन में यदि नमक का सेवन न करें, तो अच्छा रहेगा।
- हनुमत् सिद्धि दक्षिम या पूर्व दिशा की ओर मुंह करके सम्पन्न करनी चाहिए।
- सिद्धि के दिनों में सात्विक भाव बनाये रखें, व्यर्थ के बाद-विवाद से बचना चाहि। असात्विक या तामसिक व्यक्तियों के सम्पर्क से दूर रहने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए।
- हनुमान सिद्धि मंगल या शनिवार को करनी चाहिए, आवश्यकता होने पर अन्य शुभ तिथियों या विशेष दिनों में भी सिद्धि कर सकते हैं।
- हनुमान सिद्धि के लिये रक्त चन्दन की मूर्ति या 'हनुमान यंत्र' अत्युत्तम माना जाता है। प्राण-प्रतिष्ठित रक्त चन्दन की मूर्ति या यंत्र प्राप्त कर पूजा में प्रयुक्त करें।

यंत्र-पूजन

साधक पूर्व या उत्तराभिमुख हो लाल आसन पर बैठें, लाल धोती पहन कर ऊपर लाल उत्तरीय या गुरु वस्त्र ओढ़ लें, अपने सामने छोटी चौकी पर लाल वस्त्र बिछा दें, तांबे या स्टील की प्लेट पर यंत्र स्थापित करें और षोडशोपचार पूजन के बाद यंत्र पूजन आरम्भ करें-

विनियोग

दायें हाथ में जल लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण करें-

ॐ अस्य हनुमत् मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, हनुमान देवता, हुं बीजम्, स्वाहा शक्तिः सकलाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

निम्न संदर्भों का उच्चारण करते हुए दाहिने हाथ से निर्दिष्ट अंगों को स्पर्श करें-

ॐ ईश्वर ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे।
हनुमान देवताये नमः हृदि।
हुं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तये: नमः पादयोः।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।
ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

अंग न्यास

ह्रां हृदयाय नमः।
ह्री शिरसे स्वाहा।
ह्रूं शिखायै वौषट्।
ह्रैं कवचाय हुम्।
ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः अस्त्राय फट्।

वर्ण व्यास

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लृं लृं नमः।

एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं नमः।
चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं मं नमः।
तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं नमः।
यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं नमः।

ध्यान

दोनों हाथ जोड़ कर ध्यान करें-

ॐ दहन तप्त सुवर्ण समप्रभं,
भयहरं हृदये विहितांजलिम्।
श्रवण कुण्डलशोभिमुखांबुजे, नमत वानरराजमिहाद्भुतम्॥

इसके पश्चात् लाल हकीक माला या मूंगा माल से एक माला मूल मंत्र का जाप करें-

ॐ ह्रीं हस्फ्रें ख्फ्रें हश्ख्फ्रें हसौः ॐ॥

हनुमान दीनों का क्लेश करने के लिए सदैव उद्यत रहते हैं, सर्वकाम पूरक हैं, संकट रूपी प्रलय घटा को विदीर्ण करने वाले और सर्वव्यापी हैं, ऐसे देव की साधना उपासना करना ही सर्वश्रेष्ठ की प्राप्ति है।

सर्व मनोकामना पूरक हनुमान यंत्र

हनुमान जी शक्ति के आगार हैं, भक्ति के भंडार हैं, धैर्य के हिमालय हैं और सहनशीलता के समुद्र हैं। विद्वता में वो अद्वितीय हैं। राजनीति, कूटनीति और दूतकला के विशेषज्ञ हैं। समस्त प्रकार की आपदाओं का निवारण करने में समर्थ हनुमान जी महान योगी, सिद्ध-तंत्रज्ञ और ज्ञान-विज्ञान के निधान हैं। त्रेतायुग में प्रदर्शित उनका शौर्य-पराक्रम आज भी विख्यात है।

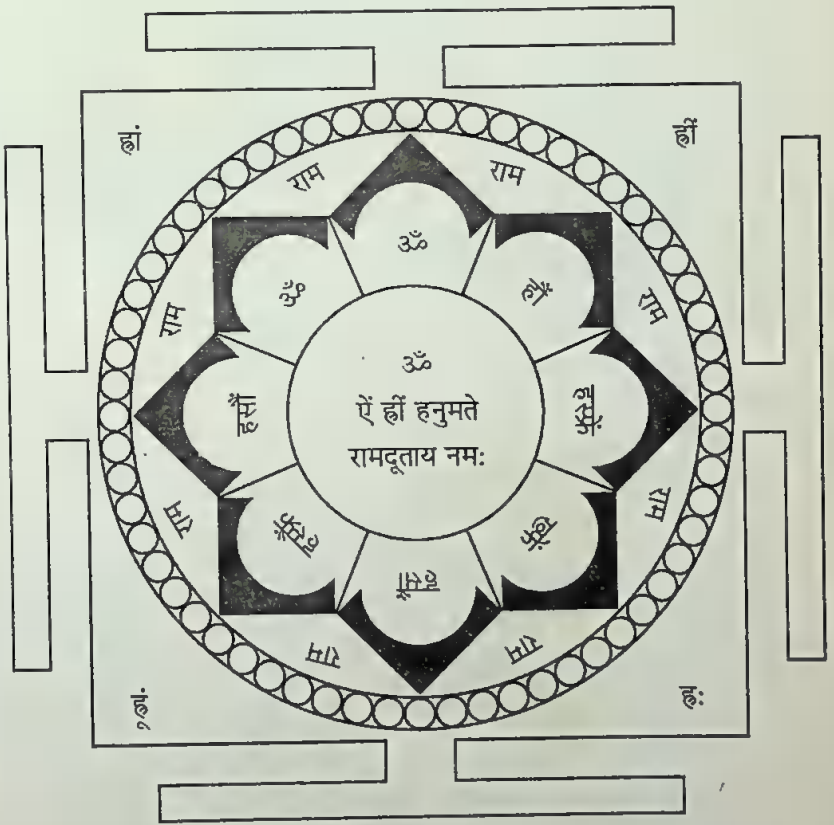

(श्री हनुमान यन्त्र)

श्री हनुमान यंत्र-यह यंत्र हनुमान जी का विशिष्ट यंत्र है। इस यंत्र का विधिवत् पूजन प्राण प्रतिष्ठादि करके अपने पास रखने से समस्त प्रकार की बाधाओं तथा शत्रुओं का नाश होता है तथा हनुमान जी की कृपा प्राप्त होती है।

सर्व सिद्धिदायक हनुमान मंत्र

यह मंत्र समस्त प्रकार के कार्यों की सिद्धि के लिए प्रयोग किया जाता है। मंत्र सिद्ध करने के लिए हनुमान जी के मंदिर में जाकर हनुमान जी की पंचोपचार पूजा करें और शुद्ध घृत का दीपक जलाकर भीगी हुई चने की दाल और गुड़ का प्रसाद लगाकर निम्न मंत्र का जप करें। कार्य सिद्धि के लिए एक माला का जप प्रतिदिन 11 दिन तक करे और अंत में दशमांश हवन करें।

ओम् नमो हनुमते सर्वग्रहान् भूत भविष्यद्वर्तमानान् दूरस्थ समीपस्यान् छिंधि छिंधि भिंधि भिंधि सर्वकाल दुष्ट टबुद्धानुच्चाट्योच्चाट्य परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय साधय। ओम् नमो हनुमते ओम् ह्रां ह्रीं ह्रूं फट्। देहि ओम् शिव सिद्धि ओम् ह्रां ओम् ह्रीं ओम् ह्रूं ओम् ह्रः स्वाहा।

श्री हनुमत् ध्यानम्

रामेष्टमित्रं जगदेकवीरं
प्लवंगराजेन्द्रकृत प्रणामम्।
सुमेरू शृंगागमचिन्त्यामाद्यं
हृदि स्मेरहं हनुमंतमीड्यम्॥

महावीर मन्त्र

हनुमान जी का ध्यान करके इस मन्त्र का 22 हजार बार जप करके केले और आम के फलों से हवन करें। हवन करके 22 ब्रह्मचारियों को भोजन करा दें। इससे भगवान महावीर प्रसन्नतापूर्वक सिद्धि देते हैं।

'ॐ ह्रौं हस्फ्रें ख्फ्रें हस्त्रौं हस्ख्फ्रें हसौं हनुमते नमः।'

हनुमन्मन्त्र (उदररोग नाशक मन्त्र)

इस मन्त्र को प्रतिदिन 11 बार पढ़ने से सब तरह के पेट के रोग शंत हो जाते हैं।

'ॐ यो यो हनुमंत फलफलित
धगधगित आयुराषः परूडाह।'

हनुमान्माला मन्त्र

श्री हनुमान जी के सम्मुख इस मन्त्र के 51 पाठ करे और भोज पत्र पर इस मन्त्र को लिखकर पास में रखले तो सर्व कार्यों में सिद्धि मिलती है।

'ॐ वज्र काय वज्रतुण्ड कपिल पिंगल ऊर्ध्वकेश महाबल रक्तमुख तडिज्जह्व महारौद्र दंष्ट्रोत्कट कहहकरालिने महादृढ़प्रहारिन लंकेश्वरवधाय महासेतुबंध महाशैलप्रवाह गगनचर एह्येहिं भगवन्महाबल पराक्रम भैरवाज्ञापय ऐह्येहि महारौद्र दीर्घपुच्छेन वेष्टय वैरिणं भंजय भंजय हुँ फट्॥'

हनुमद् मन्त्र

इस मन्त्र का नित्य प्रति 108 बार जप करने से सिद्धि मिलती है।

'ॐ एं ह्रीं हनुमते रामदूताय
लंका विध्वंसनपायांनीगर्भसंभूताय
शाकिनी डाकिनी विध्वंसनाय
किलि किलि बुवुकरेण विभीषणाय
हनुमद्देवाय ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा।'

हनुमद् उपासना मन्त्र

इस मन्त्र का पाठ ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके करना चाहिए। अष्टगंध से 'ॐ हनुमते नमः' ये लिखकर हनुमान जी को सिन्दूर और चमेली का शुद्ध तेल केशर और लाल चन्दन का गंध लगायें। कमल, केवड़ा और सूर्यमुखी के फूलों को पूजन करें। इस प्रकार देवशयनी एकादशी से देवोत्थानी एकादशी एक नित्य पूजन करें। तुलसी पत्र पर 'राम-राम' लिखकर भी चढ़ायें। इस प्रयोग से हनुमान जी प्रसन्न होकर अभीष्ट सिद्धि प्रदान करेंगे।

ॐ श्री गुरुवे नमः

'ॐ जेते हनुमंत रामदूत चलो वेग चलो लोहे का गदा, वज्र का लंगोट, पान का बीड़ा, तले सिंदूर की पूजा, हंहकार पवनपुत्र कालंचचक्रहस्त कुबेरखिलुं मरामसान खिलुं भैरव खिलुं अक्षखिलुं वक्षखिलुं मेरे पे करे घाव छाती फट् फट् मर जाये देव चल पृथ्वीखिलुं साडे वारे जात की बात को खिलुं मेघ को खिलुं नव कौड़ी नाग को खिलुं येहि येहि आगच्छ आगच्छ शत्रुमुख बंधना खिलुं सर्व-मुखबंधनाम् खिलुं काकणी कामानी मुखग्रह-बंधना खिलुं कुरू कुरू स्वाहा।'

हनुमान जी के चमत्कारिक मंत्र

1. ॐ नमो हनुमते पाहि पाहि एहि एहि सर्वग्रहभूतानां डाकिनी शाकिनीनां सर्वविषयान आकर्षय आकर्षय मर्दय मर्दय छेदय छेदय अपमृत्यु प्रभूतमृत्यु पशोषय शोषय ज्वल प्रज्वल भूतमंडलपिशाचमंडल निरसनाय भूतज्वर प्रेतज्वर चातुर्थिकज्वर माहेश्वरज्वर छिंधि छिंधि भिन्दि भिन्दि अक्षि शूल कक्षि शलू शिरोभ्यंत रशूल गुल्म शूल पित्त शूल ब्रह्मराक्षतं कुलप्रबल नागकुलविषं निर्विषं कुरु कुरु फट् स्वाहा।

2. ॐ हौं हस्फ्रें हरुफैं हस्त्रौं हस्ख्रें हसौं हनुमते नमः।

इस मंत्र को 21 दिनों तक बारह हजार जप प्रतिदिन करें फिर दही, दूध ओर घी मिलाते हुये धान का दशांश आहुति दें। यह मन्त्र सिद्ध होकर पूर्ण सफलता देता है।

3. ॐ दक्षिणमुखाय पञ्चमुखहनुमते कराल वदनाय नरसिंहाय, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं हैं हौं ह सकल भूत प्रेतदमनाय स्वाहा।

इस मंत्र की जपसंख्या 10 हजार है, जप पश्चात हवन अजगंध से करना चाहिये।

4. ॐ हरिमर्कट मर्कट वामकरे परिमुंचतिमुंचति श्रंखलिकाम्।

इस मंत्र का जाप एक सौ आठ बार 21 दिनों तक प्रतिदिन करने से सिद्धि प्राप्त होती है एवं कैद में पड़ा मनुष्य कैद से छूट जाता है।

5. ॐ ऐं श्रीं हीं ह् हस्फ्र हख्रें हस्त्रौं हख्रें हसौं।

यह 11 अक्षरों वाला मंत्र अति फलदायी है इसे 11 हजार की संख्या में प्रतिदिन जपना चाहिए।

6. ॐ यीं यों हनुमन्त फलफलितधन्यधागित आयुराप परुडार ॐ।

प्रत्येक मंगलवार को व्रत रखकर इस मंत्र का 25 माला जाप करने से 25 मंगलवार में यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इस मंत्र के द्वारा पीलिया रोग को झाड़ा जा सकता है।

7. ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा।

इस मंत्र को 18 हजार की संख्या में प्रतिदिन जाप किया जाये एवं 18 दिन में अनुष्ठान पूर्ण किया जाये।

8. ॐ ह्रां ह्रीं फट् देहि ॐ शिवं सिद्धि ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं स्वाहा।

9. ॐ ह्रां सर्वदुष्ट ग्रह निवारणाय स्वाहा।

10. हं पवननन्दाय स्वाहा।

यह दशाक्षरी मंत्र समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है, इसकी जप संख्या एक लाख है।

11. ॐ हं हनुमते रुद्रान्यकाय हूँ फट्।

यह द्वादश अक्षर का महामंत्र है, हनुमान जी का ध्यान एवं पूजन करके इस मंत्र का एक लाख जाप करें।

तत्पश्चात् हवन, तर्पण आदि करना चाहिये। यह मंत्र सभी मनोरथ को पूर्ण करने वाला है।

12. ॐ नमो हनुमते मदन क्षोभं संहर संहर आत्मतत्वं प्रकाशय प्रकाशय हुं फट् स्वाहा।

एक लाख मंत्र जपकर घी मिश्रित तिल से दशांश हवन करें, इसके प्रभाव से सभी विकार नष्ट हो जाते हैं।

13. ॐ हं पवन नन्दनाय स्वाहा।

इस दशाक्षरी मंत्र के द्वारा मंत्रोपासक अपना हित साधन कर सकता है। इसकी जप संख्या एक लाख है। इस मंत्र के द्वारा आयु, आत्मबल एवं विद्या की प्राप्ति होती है।

14. ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय अमुकस्य श्रंखलां त्रोटय त्रोटय बन्ध मोक्षं कुरुकुरु स्वाह।

एक लाख की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

15. ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा।

हनुमान जी का ध्यान कर इस मंत्र का दस हजार जप करें एवं घी एवं तिल मिलाकर दशांश हवन करें। प्रतिदिन 108 बार जप करने से छोटे-मोटे रोग से मुक्ति मिल जाती है, बड़े लोगों के लिये प्रतिदिन एक हजार जाप करना चाहिये।

16. ॐ हनुमते नमः अंजनी गर्भ-सम्भूतः कपीन्द्र सचिवात्तम।

इसकी जप संख्या 12 हजार है। सिद्धि पश्चात् शत्रुओं से रक्षा होती है और इच्छित फल प्राप्त होता है।

17. ॐ हनुमते नमः। आपदामपहर्तारं दातारं सर्व सम्पदाम् लोकाभिरामं श्री रामं, भूयो भूयो नमाम्यहम् श्री हनुमते नमः।

बारह मंगलवारों तक प्रत्येक मंगलवार तक प्रातः काल एवं सायंकाल में बारह-बारह माला इस मंत्र का जाप करना चाहिये।

18. ॐ हनुमते नमः कर्मदेश महोत्साह सर्वशोक विनाशन। शत्रून् संहर माँ रक्ष, श्रियं दापय में प्रभो। ॐ हनुमते नमः।

इस सम्पुटित मंत्र का 12 माला जप सुबह शाम व्रत रखकर 12 मंगलवारों तक करें। शत्रु निवारण, आत्मरक्षा एवं व्यवसाय के लिये अचूक मंत्र है।

19. ॐ पूर्व कपि मुखाय पन्चमुख हनुमते टं टं टं टं टं सकल शत्रु संहरणाय स्वाहा।

शत्रु भय देर करने के लिये यह एक उपयोगी मंत्र है, इसकी जप संख्या 15 हजार है।

20. ॐ पश्चिम मुखाय गरुडासनाय पंचमुखहनुमते नमः, मं, मं, मं, मं, मं, सकल विषहराय स्वाहा।

इस मंत्र की जप संख्या 10 हजार है, इसकी साधना दीपावली की अर्ध रात्रि पर करनी चाहिये। सिद्धि के लिये श्रद्धा और विश्वास अति आवश्यक है। यह मंत्र विष उतारने में अत्यधिक सहायक है।

21. ॐ परकृतयंत्रमंत्र पराहंकार भूत प्रेतपिशाच पर दृष्टि सर्वविघ्न दुर्जनवेटक। विद्यासर्वग्रहमयं निवारय निवारय वध वध पच पच दल दल विलय-विलय कीलय कीलय सर्वकुयान्त्राणिकुदुष्ट वाचं ॐ हं फट् स्वाहा।

22. ॐ ह्रां ह्रीं हैं हनुमते नमः।

23. ॐ हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट॥

इस मंत्र का एक लाख जप करके दूध, दही एवं घी मिश्रित चावल से दशांश हवन करना चाहिये।

24. ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय अनुकस्य श्रंखलां त्रोट्य त्रोटय बन्धमोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र की जप संख्या एक लाख है, फिर आम के पत्तों से दशांश हवन करना चाहिये, इसके प्रभाव से मनुष्य कारागार से मुक्त हो जाता है।

25. ॐ श्री महाञ्जनाय पवन पुत्रावेश्यावेशय ॐ श्री हनुमते फट्।

इस मंत्र की जपसंख्या एक लाख है, मंत्र सिद्धि के उपरान्त यह मंत्र ग्रह पीड़ा निवारण में अत्यधिक उपयोगी है।

26. ॐ नमो भगवते हनुमदारूपरुद्राय सर्व दुष्टजनमुखस्तं मनं कुरु कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ठं ठं ठं फट् स्वाहा।

27. ॐ नमो हनुमते पवनपुत्राय वैश्वानरसखाय हन-हन पापदृष्टि हनुमदाज्ञाया स्फुरः ॐ स्वाहा।

28. ॐ नमो हनुमते अंजनी गर्भसूंभूताय राम लक्ष्मण नन्दकाय कपि सैन्य प्रकाराय पुण्य प्रकाशनाय पर्वतोत्पारनाय सुग्रीवसाधनकाय रणे परोच्चाटनाय कुमार ब्रह्मचर्याय गंभीर शब्दोंयाय ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं सर्वदुष्ट निवारणाय स्वाहा।

29. ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा।

30. ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान् भूतामविष्यद्वर्तमानान् दूरस्थसमीपस्थान् सर्वकाल दुष्टबुद्धिं उच्चाटय उच्चाटय परबलानि क्षोभय मम सर्वकार्य साधय-साधय हनुमते स्वाहा।

इच्छित वर का मंत्र

यह अष्टदशाक्षर मंत्र, मंत्र-महोदधि के अनुसार है। इस मंत्र को किसी शुभ समय स्नान एवं संध्या आदि नित्य कृत्यों से निवृत्त होकर प्रारंभ करना चाहिए। मूल मंत्र का पुरश्चरण विधि से लक्षवार जप करना चाहिए। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश तर्पण एवं तर्पण का दशांश या यथाशक्ति ब्रह्मण भोजन कराना चाहिए। मंत्र के सिद्ध हो जाने पर हनुमान जी प्रसन्न होकर साधक को इच्छित वर दे देते हैं। मंत्र यह है-

ओम् नमो भगवते आंजनेयाय् महाबलाय स्वाहा।

सर्वरोग निवारक मंत्र

निम्न मंत्र को सिद्ध करने के लिए हनुमान जी के किसी भी मंदिर में जाकर, उनकी मूर्ति के समीप तेल का दीपक जलाकर सवा लाख मंत्र जप करना चाहिए। यह अनुष्ठान 41 दिन में पूर्ण कर लेने का विधान है। गुड़ का चूरमा भोग में रखना चाहिए। प्रयोग करने पर मोर पंख से 108 बार मंत्र का उच्चारण कर झाड़ना चाहिए। मंत्र है-

बन में बैठी बानरी जिन जाया हनुमत, वाला, डमरू, ब्याहि, बिलाई, आंख की पीड़ा, मस्तक पीड़ा, चौरासीबाय, बली-बली भस्म हो जाये, पके न फूटे, पीड़ा करे तो गोरखजती रक्षा करे। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरौ मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

श्री हनुमत जंजीरा

इस मंत्र की साधना किसी हनुमान मंदिर में की जानी चाहिए। 21 दिन तक नित्य एक माला का जप करना होता है। जप के समय हनुमान जी का पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजन करें, जप करते समय किसी प्रकार से डरना नहीं चाहिए। जप के पूर्ण होने पर एक नारियल और लाल कपड़े का तिकोना झंडा मंदिर पर चढ़ाएं। थोड़ा हवन भी कर लें। यह मंत्र भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, नजर और जादू-टोने से शरीर की रक्षा करता है।

ओम् हनुमान पहलवान, बरस बारह का जवान, हाथ में लड्डू मुख में पान, खेल-खेल गढ़ लंका में चौगान, अंजनी का पूत राम का दूत, छिन में कीलौ नौ खण्ड का भूत, जाग जाग हनुमान हुंकाला, तातो लोहा लंकाला शीश जटा डग डेरूं उमर गाजे, वज्र की कोठड़ी वज्र का ताला, आगे अर्जुन, पीछे भीम, चोर नाहर, थम्पे से सींव, अजरा झर, भरया भरै, इस घट पिण्ड की रक्षा राजा रामचंद्र जी, लक्ष्मण कुंवर, हनुमान करै।

वशीकरण के लिए मंत्र

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय हनुमते ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय रुं रुं रुं रुं रुं रुद्रमूर्तये सकललोक वशकराय वेदविद्यास्वरूपिणे ॐ नमः स्वाहा।

नोट-यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि उपरोक्त प्रयोगों में प्रयुक्त यंत्र व माला पूर्णतः चैतन्य व प्राण प्रतिष्ठित होनी चाहिए। दिव्यतम वैदिक मंत्रों द्वारा चैतन्यता प्राप्त सामग्री के अभाव में अभीष्ट सिद्धि की कामना न करें।

सर्व कामनापूरक मंत्र

किसी भी मंगलाचार के दिन किसी भी नदी के किनारे जाकर वहां की मिट्टी से हनुमान की मूर्ति बनाकर, विधिवत् पूजा-अर्चना करके उपस्थित मंत्र का जप करें। इस मंत्र का पुरश्चरण 12 लाख मंत्र जप से होता है। मंत्र सिद्ध होने के पश्चात् हनुमान साधक के वशीभूत होकर उसकी हर इच्छा पूरी करते हैं। यदि साधक किसी कठिन समय में इस मंत्र का 15 बार उच्चारण करता है, तो हनुमान जी तत्काल प्रकट होकर उसकी सहायता करते हैं, उसकी इच्छा पूरी करते हैं। मंत्र यह है-

ओम् हनुमानः हनुमतः रामभक्ता
हां हां हूं हूं हा हा स्वाहा।

बंधन मुक्ति मंत्र

निम्न मंत्र के ईश्वर ऋषि, अनुष्टुप छंद और शृंखलामोचक श्री हनुमान जी देवता हैं, ''हम्'' बीज और ''स्वाहा'' शक्ति है। कैद से छूटने के लिए इस मंत्र का विनियोग किया जाता है। इस मंत्र का ध्यान इस प्रकार करें कि हनुमान जी, बाएं हाथ में शत्रुओं को विदीर्ण करने वाला पर्वत एवं दाहिने हाथ में विशुद्ध टंक धारण करने वाले स्वर्ण के समान कांतिमान, कुंडलमंडित वानरराज हनुमान जी का ध्यान करो। पुरश्चरण पद्धति से एक लाख जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। जप के बाद दशांश हवन आम्र पल्लवों से करें। यदि साधक किसी कारण से कारावास में बंद कर दिया जाता है, तो स्वयं के लिए दस हजार जप करें, कारावास से मुक्ति मिल जाएगी। साधक यह प्रयोग स्वयं के साथ-साथ अन्यों के लिए भी कर सकता है।

निम्न मंत्र में अमुकस्य के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लेना चाहिए।

ओम् नमो भगवते आंजनेयाय अमुकस्य शृंखलां त्रोटय त्रोटय बंध मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

निम्न मंत्र की जप-क्रिया भी उपरोक्त मंत्र की भांति है। जब कोई व्यक्ति निर्दोष होते हुए भी कारावास (जेल) में डाल दिया जाए, तो उसे चाहिए कि इस मंत्र को अपने दाहिने हाथ की उंगली से बाएं हाथ की हथेली पर लिखे और मिटा दे। यह क्रम 108 बार करे। यदि लगातार सात दिनों तक यह क्रिया कर ली जाए, तो 21 दिन में ही उसे कारावास से मुक्ति मिल जाएगी। मंत्र यह है-

हरि मर्कट मर्कट वाम करे
परिमुंजित मुंजित शृंखलि काम्।

हनुमत्कृपा प्राप्ति के विशिष्ट मंत्र

प्रस्तुत 8 मंत्र हनुमान जी की कृपा प्राप्त करने के हैं। इनमें से किसी भी 1 मंत्र को 10 से 1,00,000 जप करें 11वें दिन दशांश हवन और स्वयं ब्राह्मणों को भोजन कराने से शीघ्र ही फल प्राप्त होता है।

ओम् हनुमते नमः। (1)
आपदामपहर्तारं दातारं सर्व सम्पदाम्। (2)
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥
श्री हनुमते नमः। (3)
अंजनीगर्भ संभूतः कपींद्र सचिवोत्तमः। (4)

रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष सर्वदा॥
ओम् हं हनुमते रुद्रात्मकाय हूं फट्। (5)
ओम आंजनेयाय विद्महे महाबलाय। (6)
धीमहि तंनो हनुमत प्रचोदयात्॥
ओम् पूर्व कपिमुखाय पंचमुख हनुमते (7)
टं टं टं टं टं सकल शत्रु संहारणाय स्वाहा।
ओम् पश्चिममुखाय गरुड़ास्त्रनाय पंचमुख (8)
हनुमते मं मं मं मं सकल विषहराय स्वाहा।

निम्न मंत्रों में से किसी भी 1 मंत्र को प्रतिदिन 3 हजार की संख्या जप करना चाहिए। 11 दिनों तक संयम-नियम के साथ रहकर जप करते रहें और समाप्ति पर दशांश 33 सौ हवन करें, तो साधक को नि:संदेह हनुमानजी की कृपा प्राप्त होगी और ऊपर आई समस्त विपदाएं टल जाएंगी, तथा सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होगी। मंत्र यह है-

हनुमंनंजनी सूनो वायुपुत्रं महाबलः। (1)
अकस्मादागतोत्पातं नाशयाशु नमोस्तुते। (2)
ओम् हं हनुमते आंजनेयाय महाबलाय नमः
ओम् आंजनेयाय महाबलाय हुं फट्। (3)
ओम् ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः। (4)
हनुमन् उर्वधर्मज्ञः सर्वकार्य विधायकः। (5)
अकस्मादागतोत्पातं नाशयाशु नमोस्तुऽते॥

विशेष-मंत्र जप की समाप्ति पर आरती, स्तुति पाठ और प्रार्थना करना भी आवश्यक है। इन सभी का पालन करते हुए ही जप-साधना करनी चाहिए। हनुमान जी की साधना में क्रोध, द्वेष, वैर, हिंसा, अपवित्रता, कुत्सित विचार, स्वार्थ, छल, चालाकी, अंध-विश्वास, शंका, भ्रम, अस्वच्छता और मानसिक चंचलता का सर्वथा दमन कर देना चाहिए। श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, विश्वास, सहिष्णुता, प्रभु के प्रति समर्पण की भावना, दासभा जैसी मनोस्थिति में किया गया जप ही लाभप्रद होता है।

श्री हनुमंत रोग निवारक मंत्र

शाबर मंत्रों के अथाह सागर में अधिकांश मंत्रों में हनुमान जी को ही प्रमुख देवता मानकर उन्हीं की दुहाई दी जाती है। शाबर मंत्रों का प्रयोग करने से अवश्य ही चमत्कारी प्रभाव पड़ता देखा गया है। यहां पर हम इस अध्याय में हनुमान जी के कुछ रोग निवारक शाबर मंत्रों का वर्णन कर रहे हैं।

अग्रांकित मंत्रों में से अधिकांश मंत्रों का मैंने अनेकानेक लोगों पर प्रयोग किया भी है और अन्य दूसरे शाबर मंत्रियों को भी इन मंत्रों का सफलतापूर्वक प्रयोग करते

देखा है। अतएव इन मंत्रों के प्रयोग और परिणाम के रूप में पूरी तरह से निश्चितता के साथ में यह बात तो कह सकता हूँ कि वास्तव में रोग निवारण हेतु इन मंत्रों का प्रयोग करने से रोग और रोगी पर प्रभाव अवश्य पड़ता है।

बवासीर दूर करने का मंत्र

ॐ काकाकर्ता क्रोरी करता ॐ करता से होय व रसना दशहूं स प्रकटे खूनी बादी बवासीर न होए, मंत्र जान के न बताए द्वादश ब्रह्म हत्या का पाप होय शब्द सांचा पिण्ड काचा तो हनुमान का मंत्र सांचा, फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र एक लाख जाप से सिद्ध होता है। जो व्यक्ति इसे सिद्ध कर लेता है, उसे बवासीर रोग नहीं होता। रात्रि के रखे जल को 21 बार अभिमन्त्रित कर शौच को जाएं तथा शौच के बाद अभिमंत्रित जल से गुदा को धोने से बवासीर रोग दूर होता है।

देह रक्षा का मंत्र

ॐ नमः वज्र का कोठा जिसमें पिण्ड हमारा पैठा, ईश्वर कुञ्जी ब्रह्मा का ताला मेरे आठों धाम का यती हनुमंत रखवाला।

यह मंत्र 1008 बार जपने से सिद्ध हो जाता है। नित्य एक माला (108 बार) जपने से अभिचार प्रभावहीन होता है।

रोग निवारक हनुमान मंत्र

शारीरिक-मानसिक रोग, प्रेत बाधा, या किसी के द्वारा अभिचार:

पीड़ित व्यक्ति पर निम्न मंत्र से अभिमंत्रित जल छिड़कने मात्र से सब प्रकार के कष्ट दूर हो जाते हैं। श्रद्धा परम आवश्यक है। मंत्र इस प्रकार है-

ॐ नमो हनुमते पवन-पुत्राय वैश्वानरमुखाय पापदृष्टि, घोर-दृष्टि, हनुमदाज्ञा स्फरेत-स्वाहा।

उक्त मंत्र का नियमानुसार नित्य जप करने वाले साधक के संकट, हनुमंत कृपा से, चमत्कारिक रूप से स्वत: दूर हो जाते हैं।

पीलिया रोग शमन हेतु

ॐ यों यो हनुमन्त फल फलित धग्धगिति आयु रास परूडाह।

यह 25 अक्षरों का मन्त्र प्लीहा रोग दूर करने में प्रयुक्त होता है। जिस व्यक्ति को यह रोग हो, उसके पेट पर पान का पत्ता रखे और उस पर 8 पर्त लपेटा हुआ वस्त्र रखकर उसे ढक दें, फिर हनुमान जी का स्मरण करके उस पर बांस का एक टुकड़ा रखें। बाद में बेर की लकड़ी से बनी छड़ी लेकर उसे जंगली चकमक पत्थर से प्रगट की गई आग पर उक्त मन्त्र से सात बार तपाएं, फिर उस छड़ी से पेट पर रखे हुए बांस के टुकड़े पर सात बार प्रहार करें। इससे पीलिया रोग नष्ट हो जाता है।

कान दर्द दूर करने का मंत्र

बनरा गांठि बनरी तो ढांट हनुमान अंकटा, बिलारी बाधिनी थनैला कर्ण मूल जाई श्री रामचंद्रवानी जलपथ होई।

कान-दर्द हो तो उपरोक्त मंत्र से झाड़ें। हाथ में बभूति लेकर सात बार मंत्र का उच्चारण करके बभूति को कान से छुआकर नीचे डाल दें।

धरन बैठाने का मन्त्र

ॐ नमो नाड़ी नाड़ी नौ नौ नाड़ी बहत्तर कोठा चले अगाड़ी डिगे न कोठा चले न नाड़ी। रक्षा करे जती हनुमन्त की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

जब नाड़ी निर्धारित स्थान से खिसक जाती है तो पेट में पीड़ा होने लगती है, भूख नहीं लगती तथा खाया-पीया हजम नहीं होता। इसके निवारण के लिए सूत के धागे में नौ गांठें लगाकर प्रत्येक गांठ पर नौ बार उपरोक्त मंत्र फूंके। फिर उसे छल्ले की तरह बनाकर पीड़ित व्यक्ति की नाभि पर रखें और नौ बार पुनः फूंक मारें। ऐसा करने से नाभि अपने स्थान पर आ जाएगी।

उदर रोग नाशक मंत्र

ॐ यो यो हनुमन्तफलफलितधागधीगत आयुराषः षरूडाह।

इस मंत्र को प्रतिदिन 11 बार पढ़ने से सब तरह के पेट के रोग ठीक हो जाते हैं।

कांख में होने वाले फोड़े को झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहाँ बैठा हनुमन्ता आई। पके न फूटै चले ने पीड़ा रक्षा करे हनुमन्त वीर, दुहाई गोरखनाथ की शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश गुरु को।

उक्त मंत्र 21 बार पढ़कर झाड़ने व जमीन की मिट्टी लगाने से कांख का फोड़ा ठीक हो जाता है।

रोग मुक्ति के लिए

मंगलवार को व्रत रखने, लाल वस्त्र धारण करने तथा केवल एक बार लाल रंग का भोजन कर, श्री हनुमान जी की आराधना करने तथा मंगलवार के दिन निम्न मंत्र की एक माला जप करने से निश्चित लाभ होगा।

मंत्र : ॐ मं मङ्गलाय नमः

रोग निवारण के लिए

हनुमान-बाहुक का रोगी की शैया के पास बैठकर पाठ करना अत्यंत लाभकारी होता है।

हनुमान जी के द्वादश नाम से चमत्कारी लाभ प्राप्त होता है। इनके पवित्र नामों के स्मरण मात्र से समस्त भय नष्ट हो जाते हैं, रोग निवारण होता है तथा युद्ध में विजय प्राप्त होती है।

हनुमान जी के द्वादश नाम इस प्रकार हैं :

अंजनीसुत, वायुपुत्र, महाबली, रामेष्ट, फाल्गुनसख, पिंगाक्ष, अमितीवक्रम, उदीध क्रमण, सीताशोकविनाशन, लक्ष्मणप्राणदाता, दशग्रीवदर्पहा और हनुमान।

स्त्रियों की स्तन-पीड़ा निवारण का मंत्र

ॐ वन में जाई अंजनी जिन जाया हनुमन्त।
सञ्जा खधा ढांकिया सब हो गया भस्मन्त॥

उक्त मंत्र सिद्ध करने के बाद राख से रोगी स्त्री से झड़वाएं तथा स्वयं मंत्रोच्चारण करें।

चूहे भगाने का मंत्र

पीत पीताम्बर मूशा गांधी। ले जाइहु तु हनुवन्त बांधी।
ए हनुमन्त लंका के राऊ। एहि कोणे पैसेहु एहि कोणे जाऊ॥

स्नान करके हल्दी की पांच गांठें व कुछ चावल अभिमंत्रित कर घर या खेत में डालने से चूहे भाग जाते हैं।

सिरदर्द दूर करने का मंत्र

लंका में बैठ के माथ हिलावै हनुमन्त।
सों देखि राक्षसगण पराय दूरन्त॥
बैठी सीता देवी अशोक वन में।
देखि हनुमान को आनन्द भई मन में॥
गई उर विषाद देवी स्थिर दर्शाय।
अमुक के सिर व्यथा पराय॥
अमुक के नहीं कछु पीर नहीं कछु भार।
आदेश का मारण्या हरि दासी चण्डी की दोहाई॥

सिरदर्द से पीड़ित व्यक्ति को दक्षिण दिशा में मुंह करके बैठाएं। फिर उसके सिर को दाएं हाथ से पकड़कर उपरोक्त मंत्र सात बार पढ़कर सिर पर फूंक मारें।

आधासीसी दर्द दूर करने का मंत्र

(1)

ॐ नमो वन में ब्याई वानरी, उछल वृक्ष पै जाय।
कूद-कूद शाखान पे कच्चे वन फल खाय॥
आधा तोड़े आधा फोड़े आधा देय गिराय।
हंकारत हनुमानजी आधा सीसी जाय॥

(2)

वन में ब्याई अंजनी कच्चे वन फल खाय।
हांक मारी हनुमन्त से इस पिण्ड से आधासीसी उतर जाय॥

उपरोक्त दोनों मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र से झाड़ने पर आधासीसी का दर्द दूर होता है।

नेत्र रोग दूर करने का मंत्र

ॐ झलमल जहर भरी तलाई, अस्ताचल पर्वत से आई, जहां बैठा हनुमंता, जाई फूटै न पाकै करै, न पीड़ा जाती है, हनुमंत हरे पीड़ा मेरी। भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

ग्यारह बार मंत्रोच्चारण कर नीम की डाली से यह क्रिया तीन दिन तक नियमित करने से नेत्र रोग दूर होता है।

ॐ नमो वन में ब्याई बानरी जहां-जहां हनुमान अंखिया पीर कषवा रो गेहिया थने लाई चारिऊ जाए भस्मंतन गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यह मंत्र 7 बार उच्चारण करने से रोग ठीक हो जाता है।

अण्डवृद्धि रोग तथा सर्प निवारण का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरू को जैसे को लेहु रामचन्द्र कबूत ओ सई करहु राध बिनु कबूत पवन सुत हनुमन्त धाऊ हरहर रावन कूट मिरावन श्रवइ अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ वाँज गर्भहि श्रवइ स्त्री पीलहि श्रवइ शापहर हर जम्बीर हर जम्बीर हर हर हर।

उक्त मंत्र बोलते हुये फूले हुए अंडकोष को हाथ से सहलाने तथा अभिमंत्रित जल रोगी को पिलाने से रोग दूर होता है।

इसी मंत्र से अभिमंत्रित मिट्टी का ढेला यदि सांप के बिल पर रखा जाए तो सांप स्वयं ही बाहर निकल आता है।

बिच्छू का विष उतारने का मंत्र

पर्वत ऊपर सुरही गाई। कारी गाय की चमरी पूछी। ते करे गोबरे बिछी बिआई। बिछी तौर कर अठारह जाति 6 कार 6 पीअरी 6 भूमाधारी 6 रत्न पवारी। 6 कुं हुं कुं हुं छारि। उतरू बिछी हाड हाड पोर पोर ते। कस मारे लील कंठ गरमोर। महादेव की दुहाई, गौरा पार्वती की दुहाई। अनीत टेहरी शडार बन छाई, उतरहिं बीछी हनुमंत की आज्ञा दुहाई हनुमत की।

'ॐ हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा'

प्रयोग करने से पहले मंत्र को होली, दीपावली अथवा सूर्य, चन्द्र ग्रहण काल में सिद्ध कर, मंगलवार से '**ॐ हरि... स्वाहा**' मंत्र सवा लाख जपने से सिद्ध हो जाता है। बिच्छू के काटे को बंध बांधकर मोर पंख या नीम की डाली से झाड़ा दें।

पीलिया रोग निवारण का मंत्र

ॐ वीर वैताल असराल नारसिंह खादी तुर्षादी, पीलिया कूं भिदाती, कारै, जारै पीलिया रहै न नेक निशान जो कहीं रह जाए तो हनुमंत की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र को सिद्ध करने के बाद पीलिया रोग दूर करने हेतु कांसे की एक कटोरी में तिल का तेल लें। इस कटोरी को रोगी के सिर पर रखकर मंत्र जाप करते हुए कुशा (डाभ) से तेल को चलाएं। मंत्र के प्रभाव से तेल जब पीला हो जाए तब कटोरी नीचे रखें। ऐसा तीन दिन तक करने से रोग दूर हो जाता है।

सर्प विष उतारने का मंत्र

जेहि समय गए राम वन माहीं। तिनका तहां कष्ट अति होंही॥
सिय हरण अरु बाली नाशा। पुनि लागी लषन नाग फांसा॥
बिकल हरि देख नाग फांसा। स्मरण करहिं गरुड निज दासा॥
विनता नन्दन बसहिं पहारा। पहुंचे स्मरण ते ही लंका पल पारा॥
रहे लखन बांधि जितने सब नागा। सो गरुड़ देख तुरत सब भागा॥
अमुक अंग विष निर्विष होइ जाई। आदेश श्रीरामचन्द्र की दुहाई॥
आज्ञा विनतानन्दन की आन।

जब रोगी मरणासन्न हो, तब उक्त राम-सार मंत्र का सात या बारह बार उच्चारण कर झाड़ा देने से रोगी को चेतना आती है मंत्र में 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम लें।

दांत का कीड़ा झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को वन में ब्याई अंजनी जिन जाया हनुमन्त, कीड़ा मकड़ा माकड़ा ए तीनों भरमन्त, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

दीपावली की रात्रि से जाप शुरू कर एक लाख बार जपें तो मंत्र सिद्ध हो जाएगा। जब मंत्र सिद्ध हो जाए तब नीम की डाली से झाड़ने पर दांत-दर्द शीघ्र ठीक हो जाता है। मंत्रोच्चारण के समय कटेरी के बीजों का धुआं दें और बांस या कागज की नलकी (फूंकनी) से फूंक मारें।

भूत-प्रेत दूर करने का मंत्र

बांधो भूत जहां तु उपजो छाडो, गिरे पर्वत चढ़ाई सर्ग दुहेली तुजिभ झिलमिलाहि हुंकारे हनुमंत पचारइ भीमा जारि-जारि जारि भस्म करे जों चापैं सिंऊ।

लक्ष्मी प्राप्ति के स्वर्णिम प्रयोग

संसार में कौन ऐसे व्यक्ति होगा जो अपने जीवन में लक्ष्मी प्राप्ति और उसके उपभोग की इच्छा न रखता हो। हरेक व्यक्ति लक्ष्मी (धन) प्राप्त करना चाहता है, प्रत्येक इन्सान के मन में धनवान बनने की इच्छा होती है। लक्ष्मी अर्थात् धन सम्पत्ति आज के युग की प्रत्येक इन्सान की आवश्यकता है। लक्ष्मीवान (धनवान) व्यक्ति को ही सारे सुखों की प्राप्ति होती है किन्तु लक्ष्मी घर में आये कैसे? यह कठिन समस्या है। और आपकी इस कठिन समस्या के निवारण हेतु ही लेखक 'प्रमोद सागर' जी ने 'लक्ष्मी प्राप्ति के स्वर्णिम प्रयोग' नामक अत्यन्त कल्याणकारी पुस्तक की रचना की। यह पुस्तक आपके लिए महान कल्याणकारी है क्योंकि इसमें उन स्वर्णिम सूत्रों के प्रयोग के बारे में आसान ढंग से बताया गया है जिनको उपयोग में लाकर स्वयं आप भी लक्ष्मीवान (धनवान) बन सकते हैं। दरिद्रतानाशक प्रयोग, व्यापार में वृद्धिकारक प्रयोग, इन्टरव्यू एवम् परीक्षा में सफलता प्राप्ति हेतु प्रयोग, बाधित व्यापार की अनिष्टता दूर करने के प्रयोग, पृथ्वी में गड़ा धन प्राप्ति हेतु, असफल कार्य को सफल करने हेतु प्रयोग, भाग्योन्नति कारक प्रयोग, ऋण (कर्ज) मुक्ति प्रयोग, आर्थिक सम्पन्नता हेतु प्रयोग, विदेश यात्रा हेतु प्रयोग, जीवन में सर्वत्र सफलता प्राप्ति हेतु अद्भुत प्रयोग आदि हजारों लक्ष्मी प्राप्ति के स्वर्णिम सूत्र दिये गये हैं। इसके अलावा घर में किसी प्रकार की ग्रह जनित पीड़ा अथवा वास्तु दोष है तो उसके निवारण के उपाय एवम् आसान टोटके भी दिये गये हैं, जिनका उपयोग करके आप ग्रह पीड़ा से मुक्त हो सकते हैं तथा अपने मकान को बिना किसी तोड़-फोड़ के आन्तरिक दोषों से मुक्त करके सुखमय जीवन व्यतीत करें।

आज ही यह पुस्तक मंगाकर लाभ उठायें। पुस्तक का मूल्य 50 रुपये। बिना एडवांस पुस्तक नहीं भेजी जाएगी। असल की पहचान **महामाया पब्लिकेशन्ज** और **अमित पाकेट बुक्स** देख कर ले।

अमित पुस्तक भंडार, नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।

मनोकामना पूरक हनुमान मन्त्र प्रयोग

हनुमान जी की उपासना शीघ्र फल प्रदान करती है। इनकी उपासना से यथा शीघ्र सभी प्रकार के घोर संकट दूर होते हैं। इनकी उपासना 'वीर' और 'दास' दोनों रूपों में होती है। जैसी जिसकी भावेच्छा। विपत्ति निवारण के लिए वीर रूप को तथा सुख-समृद्धि की प्राप्ति के लिए दास्य रूप की आराधना की जानी चाहिए। वीर रूप के लिए राजस उपचार एवं दास्य रूप के लिए सात्विक उपचारों का प्रयोग किया जाता है। यहां कुछ मन्त्र द्रष्टव्य है-

मन्त्र : ह्रों हस्फ्रें खफ्रें ह्रस्यौं हस्टवक्रें हू सौं हनुमते नमः॥

यह बारह अक्षरों वाला महामन्त्र राज है। इसके विनियोग आदि इस प्रकार हैं-

विनियोग-अस्य श्री हनुमन्महामन्त्र राजस्य श्री रामचन्द्र ऋषिः जगतीच्छन्दः श्री हनुमान् देवता ह्र सौं बीजं, हस्फ्रें शक्तिः श्री हनुमान प्रसाद सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास-

श्री रामचन्द्र ऋषये नमः शिरसि
जगतिच्छन्दसे नमः मुखे
श्री हनुमद देवतौ नमः हृदये
हू सौं बीजाय नमः गुह्ये
हस्फ्रें शक्तये नमः पादयोः

इसमें कीलक नहीं है।

विनियोगाय नमः सर्वांगे

मन्त्रोक्त छः बीजों के करन्यास एवं षडंग न्यास करें। पूरे मन्त्र के एक-एक अक्षर से 1. मस्तक 2. ललाटे 3. नेत्रयो 4. मुखे 5. कण्ठे 6. बाहवो 7. हृदये 8. कुक्ष्यो: 9. नाभौ 10. लिंगे 11. जान्वो: 12. चरण्यो: बोलते हुए द्वादशांग न्यास करें।

इसी प्रकार छः बीज और दो पदो से 1. मस्तके 2. ललाटे 3. मुख 4. हृदये 5. नाभौ 6. ऊर्वो 7. जंध्यो: 8. चरणयो: बोलते हुए अष्टांग न्यास करें।

ध्यान-

उद्यत्कोटयर्क संगकाशं जगत्प्रक्षोभ कारकम्।
श्रीरामांघ्रिंध्यान निष्ठं सुग्रीव प्रमुखार्चितम्॥
महाबल समायुक्तं भक्त भीति-निवारकम्।
विन्नासयन्तं नादेन राक्षसान् मारुतिं भजे॥

इस प्रकार ध्यान करके मन्त्र का 12 बारह हजार जप करें। फिर दही, दूध और घी मिले हुए धान से दशांश हवन करें। इस विधान में हनुमत् मन्त्र और उसकी विस्तृत पूजा का भी विधान है।

प्रयोग-

विद्यां वापि धनं वापि राज्यं वा शत्रु विग्रहम्।
तत्क्षणादेव चान्नोति सत्यं सत्यं सुनिश्तिम्॥

इन वचनों के अनुसार सभी वांछित फलों को प्राप्त करता है।

अन्य प्रयोग-अष्टमी या चतुर्दशी को मंगलवार अथवा रविवार के दिन तेल, बेसन और उड़द के आटे से बनाई हुई हनुमान जी की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा करके तेल और घी का दीपक जलाएं तथा विधिवत पूजन कर मालपुआ, भात, शाक, मिठाई, पकौड़े, बड़े आदि का भोग लगाएं। विशेष यह है कि इसमें 27 पान के पत्ते और सुपारी आदि मुख शुद्धि की वस्तुएं रखकर उन्हें तीन-तीन आवरण वाले बीड़े बनाकर हनुमान जी को अर्पित करें। फिर आरती, स्तुति आदि करके अपना मनोरथ निवेदन करें और प्रार्थना पूर्वक विसर्जन करें। इसमें उपरोक्त मन्त्र का जप और उसी मन्त्र से पूजन करने पर सभी कामनाओं की शीघ्र पूर्ति होती है। यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन तथा उन्हें मान देकर दक्षिणा दान पूर्वक यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

विशिष्ट हनुमत तंत्र प्रयोग

शनि शांति के लिए

शनिवार के दिन हनुमान जी के पैर पर लाल सिंदूर अक्षत मिश्रित कर ॐ श्री रामदूताय नमः बोलते हुए चढ़ाएं।

ॐ श्री रामदूताय नमः की तीन माला शनिवार के दिन जपे।

लवंग से बनायी हुई माला चढ़ाएं।

भूत-प्रेत बाधा के तांत्रिक निवारण हेतु

'पंचमुखी हनुमान स्तोत्र' का दिन में नौ बार शुद्धता से पाठ करें। जल्दी ही आपदाओं से मुक्त हो जाएंगे।

हनुमान कृपा के लिए

हनुमान यंत्र और मूंगे की माला या लाल चंदन की माला लें। प्रातः स्नान कर लाल वस्त्र धारण करके आसन पर बैठकर सिंदूर, लाल पुष्प, धूप, दीप, चावल आदि से यंत्र का पूजन करें। नैवेद्य में दाल के बड़े चढ़ाएं। हनुमान चालीसा का ध्यान से पठन करें।

'हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्' मंत्र का 108 बार जाप करें।

बच्चों को नजर आदि से बचाने के लिए

हनुमान के पैर के नीचे का सिंदूर लेकर तिलक करें।

सुख-शांति के लिए

108 बार मंगलवार या हनुमान जयंती, या राम नवमी के दिन 'हनुमान चालीसा' का पाठ कीजिए।

कार्यसिद्धि के लिए

मूंग की माला से 'ॐ हनुमते नमः' मंत्र की चालीस दिन तक चालीस माला गिनें, तो कार्य में सिद्धि अवश्य मिलती है।

सम्मोहन के लिए

हनुमान जी के पैर का सिंदूर लेकर, पतली-सी तिल्ली से, भौहों के बीच छोटा-सा तिलक करें।

तनाव निवारण के लिए

मूंगे के आठ पत्थर लाल धागे में पिरो कर धारण करें। 23 दिन तक प्रतिदिन 'ॐ हुं हुं हनुमते हुं हुं फट्' का केवल पांच बार ध्यान करते हुए उच्चारण करें। 23 दिन के बाद माला को हनुमान मंदिर में चढ़ा दें।

दुर्बुद्धि या कमजोरी निवारण के लिए

बुद्धि हीन तनु जानिके, सुमरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहू कलेश विकार।

इस पंक्ति का हनुमान जी के सामने नियमित रूप से 305 बार उच्चारण करें।

जेल, बंधन से मुक्ति तथा गुम हुए लोगों को वापस लाने के लिए

'हनुमान चालीसा' का प्रतिदिन 305 बार पाठ करें। जेल में रहे व्यक्ति का नाम ले हनुमान जी से विनती करें, तो उसकी रिहाई कुछ दिनों में हो जाएगी।

वीर्य और ब्रह्मचर्य रक्षा के लिए

ॐ नमो भगवते महाबले पराक्रमाय मनोभिलाषितं मनः स्तम्भं कुरु-कुरु स्वाहा।
हर रोज़ दूध को देख कर 23 बार उच्चारण करें, बाद में दूध ग्रहण कर लें।

प्रयोग के समय ध्यान दें

- लाल वस्त्र धारण करें।
- कम बोलें।
- ब्रह्मचर्य के पालन में अचूक रहें।
- मूंगे की माला, या लाल चंदन की माला का उपयोग करें।
- उपवास करें।
- प्रयोग की बात किसी से भी न कहें।
- बंदर को फल, या कोई भी वस्तु खिलाएं।
- प्रयोग के बाद हनुमान जी से क्षमा याचना अवश्य करें।

सर्वकष्ट निवारक संकटमोचक
बजरंग बाण

हनुमान जी की सिद्धि करने वाले इस बात को भली प्रकार जानते हैं कि हनुमान जी एकादश रुद्र के रूप में पूजे जाते हैं। शिव पुराण में हनुमान जी को शम्भु, रुद्राक्ष महादेवात्मज, रुद्रावतार, कपीश्वर आदि नामों से संबोधित किया गया है। रामचरितमानस में राम भक्त हनुमान का जो चरित्र मिलता है उससे यह स्पष्ट है कि स्वामी की भक्ति में निरत रहने वाले कपीश्वर अपने स्वामी को संकटों में जितने सहायक हुए हैं उतने ही अपने भक्तों पर भी कृपालु होते हैं।

इस कलियुग में हनुमान जी दुर्गा जी की भाँति प्रचण्ड देवता माने जाते हैं। इस युग में हनुमान जी की पूजा, सेवा एवं भक्ति सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली और समस्त संकटों को दूर करने वाली मानी जाती है।

बजरंग बाण का पाठ मुक्त कंठ से हनुमान मन्दिर में, घर में, तीर्थस्थल में कहीं भी किया जा सकता है। प्रायः भक्तजन हनुमान चालीसा, संकट मोचन अष्टक और बजरंग बाण का पाठ क्रमशः नित्य करते है। हिन्दी भाषा के सरल शब्दों में लिखी गयी यह स्तुतियाँ अपने में पूर्ण स्तोत्र का महत्व रखती है। मुझे तो ऐसा भी देखने में मिला है कि देहात के अनपढ़ लोग इन स्तुतियों को दूसरों से सुनकर कंठस्थ कर लेते हैं और अपनी उपासना का आधार बना लेते हैं।

छोटे से छोटे शारीरिक क्लेश से लेकर बड़ी से बड़ी मनोकामना की पूर्ति के लिए बजरंग बाण और संकट मोचन का पाठ लोगों को सिद्धि देता है। स्वयं बीमार हों या कोई प्रियजन बीमार हो, शिक्षा की समस्या हो, धन की समस्या हो, नौकरी न मिल रही हो या व्यवसाय न चल रहा हो, किसी प्रकार की भूत-प्रेतादि संबंधी बाधा अथवा अकारण ही व्यक्ति को भय का आभास होता हो या रात्रि में बुरे सपने आते हों इन सबके लिए बजरंग बाण का पाठ हितकारी होता है।

बजरंग बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति से, विनय करे सम्मान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करे हनुमान॥

जय हनुमन्त सतं-हितकारी। सुनि लीजै प्रभु विनय हमारी॥
जन के काज विलम्ब न कीजे। आतुर आय महासुख दीजै॥
जैसे कूदि सिन्धू के पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥
आगे जाये लंकिनी रोका। मारहु लात गई सुरलोका॥
जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखी परमपद लिन्हा॥
बाग उजारी सिंधु मह बोरा। अति आतुर जम कातर तोरा॥
अक्षय कुमार मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धनि सुरुपर नभ भई॥
अब विलंब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अन्तरयामी॥
जय जय लखन प्रान के दाता। आतुर ह्वे दुख करहु निपाता॥
जय हनुमान जयति बल सागर। सुर-समूह सम अति भटनागर॥
ॐ हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरहि मारू वज्र की कीले॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा। हुं हुं हुं हनु अरि उस सीसा॥
जय अंजनिकुमार बलवंता। संकरसुवन वीर हनुमंता॥
बदन कराल काल कुल घातक। राम सहाय सदा प्रतिपालक॥
भूत प्रेत पिशाच निसाचर। अग्नि बेताल काली मारी मर॥
इन्हें मारू तोहे शपथ राम की। राखु नाथ मरजाद राम की॥
सत्य होहु हरि समर्थ पाई के। रामदूत धरू माय धाई कै॥
जय जय हनुमंत अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहि जानत कुछ दास तुम्हारा॥
वन उपवन मग गिरी गृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥
जनकसुता हरि दास कहावौ। ता की शपथ विलम्ब न लावौ॥
जय जय जय धुनि होत अकासा। सुमिरत होय दुसह दुख नासा॥
चरन पकरि कर जोरि मानवों। यहि अवसर अब केहि गोहरावों॥
उठ उठ चलू तोहि राम दोहाई। पाय परो कर जोरि मनाई॥
चम चम चम चम चपल चलंता। हनु हनु हनु हनु हनुमंता॥
ॐ है है हांक देत कपि चंचल। सं सं सहमि पराने खल दल॥
अपने जन को तुरत उबारो। सुमिरत होय आनंद हमारो॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै। ताहि कहा फिरि कवन उबारै॥
पाठ करै बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करे प्राण की॥
यह बजरंग बाण जो जापै। तासों भूत प्रेत सब कापै॥
धूप देय जो जपै हमेसा। ताके तन नहीं रहै कलेसा॥

उर प्रतिति दृढ़ ह्वै पाठ करे धरि ध्यान।
बाधा सब हर करै सब काम सफल हनुमान॥

अथ श्री हनुमद्द्वादशाक्षर मन्त्रम्

'मन्त्र महोदधि' में हनुमद्द्वादशाक्षर मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है-हौं ह्स्फ्रें ख्फ्रेंह् स्त्रौह स्ख्फेंह सौ हनुमते नमः।

हाथ में जल लेकर विनियोग पढ़ते हुए जल को भूमि पर डाल दें।

विनियोग

ॐ अस्य द्वादशाक्षर हनुमन्मंत्रस्य रामचन्द्र ऋषिः, जगती छन्दः, हनुमान् देवता, ह्सौ बीजम्, ह्स्फ्रें शक्तिः, सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ रामचन्द्र ऋषये नमः, शिरसि।
ॐ जगती छन्दसे नमः, मुखे।
ॐ हनुमद्देवतायै नमः हृदि।
ॐ ह्सौं बीजाय नमः, गुह्ये।
ॐ ह्स्फ्रें शक्तये नमः, पादयोः।
ॐ विनियोगाय नमः, सर्वांगे।

तत्पश्चात हृदयादि अंगन्यास करें।

हृदयाद्यंगन्साय

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः।
ॐ ह्स्फ्रें शिरसे स्वाहा।
ॐ ख्फ्रें शिखायै नमः।
ॐ ह्सौं कवचाय हुम्।
ॐ ह्स्ख्फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्सौं अस्त्राय फट्।

करन्यास

ॐ ह्रौं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्स्फ्रें तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ख्फ्रें मध्यामाभ्यां नमः।
ॐ ह्सौं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्स्ख्फ्रें कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्सौं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

तत्पश्चात मन्त्र के बारह अक्षरों का बारह अंगों में न्यास करें :

ॐ ह्रौं नमः, मूर्ध्नि।
ॐ हस्फ्रें नमः, भाले।
ॐ ख्फ्रें नमः, नेत्रयोः।
ॐ हस्त्रौं नमः, मुखे।
ॐ ह्स्ख्फ्रें नमः, कण्ठे।
ॐ हस्त्रौं नमः, बाहवोः।
ॐ हं नमः, हृदि।
ॐ नुं नमः, कुक्षौ।
ॐ मं नमः, नाभौ।
ॐ ते नमः, लिंगे।
ॐ नं नमः, जानुद्वये।
ॐ मं नमः, पादयोः।

उपरोक्त विधि से न्यास करने के बाद ध्यान करें :

ध्यान

बालार्कायुत तेजसं त्रिभुवननप्रक्षोभकं सुन्दरं
सुग्रीवादिसमस्त वानरगणैः संसेव्यपादाम्बुजम्।
नादेनैव समंस्ताराक्षस गणान् संत्रासयन्तं प्रभुं
श्रीमद्राम पदाम्बुजस्मृतिरतं ध्यायामि वातात्मजम्॥

प्रातः कालीन दस हजार सूर्यों के समान जिनकी कांति है, जो त्रिलोकों को भी अशांत करने की सामर्थ्य रखते हैं, सुंदर हैं। सुग्रीव आदि वानर जिनकी चरण सेवा में सदैव रहते हैं। जिनकी घोर गर्जना से राक्षसगण भयभीत हो जाते हैं। जिनका ध्यान भगवान राम के चरणों में ही रहता है उन्हीं मारुतिनंदन का मैं ध्यान करता हूँ।

ध्यान के पश्चात् पीठ देवताओं की स्थापना करें। सर्वप्रथम पीठ के उत्तर में चारों गुरुओं का ध्यान करते हुए पूजन करें:

ॐ गुरुभ्यो नमः, ॐ परमगुरुभ्यो नमः, ॐ परात्पर गुरुभ्यो नमः, ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः।

तत्पश्चात् पीठ के दक्षिण में गणेशजी का आवाहन कर पूजन करें : **'गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि'**। इसके बाद पीठ के मध्य में इष्टदेव को नमन करें : **हनुमद्देवतायै नमः।**

फिर हनुमानजी के विभिन्न स्वरूपों का ध्यान करें :

पीठ के मध्य भाग में ही **ॐ मं मण्डूकाय नमः, ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः, ॐ आं आधारशक्तये नमः, ॐ कुं कूर्माय नमः, ॐ अं अनन्ताय नमः, ॐ पृं पृथिव्यै नमः, ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः, ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः, ॐ रं रत्नमण्डलाय नमः, ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः,** (पीठ के अग्निकोण में) **ॐ धं धर्माय नमः,** (नैर्ऋत्यकोण में) **ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः,** (वायव्यकोण में) **ॐ वैं वैरागयाय नमः,** (ईशान कोण में) **ॐ ऐं ऐश्वराय नमः,** (पीठ के पूर्व भाग में) **ॐ अं अधर्माय नमः,** (दक्षिण भाग में) **ॐ अं अज्ञानाय नमः,** (पश्चिम भाग में) **ॐ अं अवैराग्याय नमः,** (उत्तर भाग में) **ॐ अं अनैश्वर्याय नमः,** (पुनः पीठ के मध्य भाग में) **ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः, ॐ सं संविन्नालाय नमः, ॐ सं सर्वतस्कमलासनाय नमः, ॐ प्रं प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः, ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः, ॐ पं पञ्चाशद्वर्षाढ्य कर्णिकाभ्यो नमः, ॐ अं कर्ममण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः, ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः, ॐ वं वन्हिमंडलाय दशकलात्मने नमः, ॐ सं सत्त्वाय नमः, ॐ रं रजसे नमः, ॐ तं तमसे नमः, ॐ आं आत्मने नमः, ॐ पं परमात्मने नमः, ॐ अं अन्तरात्मने नमः, ॐ हीं ज्ञानात्मने नमः, ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः, ॐ परतत्त्वाय नमः।**

उपरोक्त मन्त्रों द्वारा उन-उन देवताओं की स्थापना और पूजा करके नौ पीठ शक्तियों की पूजा करें। यथा-पूर्व दिशा में **ॐ विमलायै नमः**, अग्निकोण में **ॐ उत्कर्षिण्यै नमः**, दक्षिण दिशा में **ॐ प्रहन्यै नमः**, उत्तर दिशा में **ॐ सत्यायै नमः**, ईशान कोण में **ॐ ईशानायै नमः**, मध्य भाग में **ॐ अनुग्रहायै नमः।**

इसके बाद स्वर्णादि निर्मित यन्त्र अथवा मूर्ति को ताम्र पात्र में रखकर उसमें घी लगाकर उसके ऊपर दूध और जल की धारा गिराएं। फिर स्वच्छ वस्त्र से पोंछकर **''ॐ नमो भगवते हनुमते सर्वभूतात्मने हमनुमते सर्वात्म संयोगपद्मपीठात्मने नमः''** मन्त्र द्वारा पुष्पादि का आसन देकर पीठ के मध्य भाग में उसकी स्थापना करें। फिर ध्यान करके पूर्वोक्त मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर पाद्य से लेकर पुष्पांजलि तक विविध उपचारों से पूजा के बाद इष्टदेव की आज्ञा से आवरण पूरा करें। यथा :

संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः।
अनुज्ञां हनुमन् देहि परिवारार्चनाय मे॥

उपरोक्त मंत्र से पुष्पांजलि देकर आज्ञानुसार क्रमवत सर्वप्रथम षटकोणीय केसरों में फिर अष्ट दलों में, दलों के अग्र भागों में आवरण पूजा करें। अंत में भूपुर-चक्र में दिक्पालों व आयुधों की पूजा करें।

षट्कोणात्मक केसरों में आग्नेयादि क्रम से हृदयादि छह अंगों की पूजा की जाती है :

ॐ ह्रौं हृदयाम नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ हस्फ्रें शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ ख्फ्रें शिखायै वषट्। शिखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्स्त्रौं कवचाय हुम्। कवचश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ ह्स्ख्फ्रें नेत्र त्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ ह्स्त्रौं अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

तत्पश्चात् पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण कर बोलें :

अभीष्टसिद्धि में देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

फिर पुष्पांजलि देकर **'पूजितास्तर्पिताः सन्तु'** उच्चारण करें। इसके बाद कमल को अष्ट दलों में पूर्वादि दिशाओं में दक्षिण क्रम से श्री राम भक्त आदि भी पूजा करें:

ॐ रामभक्ताय नमः। रामभक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ महातेजसे नमः। महातेजः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ कपिराजाय नमः। कपिराज श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ महाबलाय नमः। महाबल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः॥

ॐ मेरुपीठार्चनकारकाय नमः। मेरुपीठार्चनकारक श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ दक्षिणाशाभास्कराय नमः। दक्षिणाशाभास्कर श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः। सर्वविघ्न निवारक श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

इस प्रकार नाम मन्त्रों से पूजन करके पुष्पांजलि दें। यह द्वितीय आवरण की पूजा हुई।

तत्पश्चात् आठ दलों के अग्रभागों में पूवादिक्रम से सुग्रीव आदि की पूजा करें यथा :

ॐ सुग्रीवाय नमः। सुग्रीव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ अंगदाय नमः। अंगद श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ नीलाय नमः। नील श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ जाम्बवते नमः। जाम्बवच्छी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ नलाय नमः। नल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ सुषेणाय नमः। सुषेण श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ द्विविदाय नमः। द्विविद श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ मयन्दाय नमः। मयन्द श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

उपरोक्त रीति से आठ वानरों की पूजा कर पुष्पांजलि अर्पित करें। यह तीसरे आवरण की पूजा हुई।

तद्नन्तर भूपुर-चक्र की दस दिशाओं में इन्द्रादि दस दिक्पालों की पूर्ववत् पूजा करें। यथा :

(पूर्व दिशा में) **ॐ इन्द्राय नमः. इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥**

इसी प्रकार अन्य दिक्पालों के लिए भी वाक्यों का विचार कर पुष्पांजलि अर्पित करें। यह चतुर्थ आवरण की पूजा हुई।

तदनन्तर भुपूर-चक्र के बाह्य भाग में पूर्वादि दिशाओं में वज्र आदि आयुधों की पूजा करें। यथा :

ॐ वं वज्राय नमः। वज्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

इस तरह पूजा समाप्त करके पूष्पांजलि दें। यह पंचम आवरण की पूजा हुई।

आवरण पूजा के बाद पूजनोपचारों द्वारा पूजन का मंत्र जाप करें। (बारह जप का एक पुरश्चरण कहलाता है।) जाप के बाद दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश या फिर बाईस ब्राह्मणों को भोजन करने का विधान है।

हनुमदष्टादक्षाक्षर मन्त्र प्रयोग

'मन्त्र महोदधि' में यह मन्त्र इस प्रकार उल्लिखित है- 'ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा।' इस अष्टादशाक्षर मन्त्र का प्रयोग स्नान एवं सन्ध्यादि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर करना चाहिए।

विनियोग

ॐ अस्य मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, हनुमान् देवता, हुं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

इसके अनन्तर ऋष्यादिन्यास करें-

ऋष्यादिन्यास

ॐ ईश्वर ऋषये नमः, शिरसि।
ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे।
ॐ हनुमद्देवतायै नमः हृदि।
ॐ हुं बीजाय नमः, गुह्ये।
ॐ स्वाहा शक्तये नमः, पादयोः।
ॐ विनियोगाय नमः, सर्वांगे।

इसके अनन्तर हृदयादिन्यास करें।

हृदयादिन्यास

ॐ आञ्जनेयाय नमः हृदयाय नमः। **ॐ अग्निगर्भाय नमः कवचाय हुम्।**
ॐ रुद्रमूर्तये नमः शिरसे स्वाहा। **ॐ रामदूताय नमः, नेत्रत्रयाय वौषद्।**
ॐ वायुपुत्राय नमः, शिखायै वषट्। **ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारकाय नमः, अस्त्राय फट्।**

इस प्रकार अंगन्यास करने के अन्तर उपर्युक्त मन्त्रों के करन्यास भी कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् हनुमान जी का ध्यान करे-

ध्यान

दहनतप्तसुवर्णसमप्रभं भयहरं हृदये विहिताञ्जलिम्।
श्रवण कुण्डलशोभिमुखाम्बुजं नमत वानराज महद्भुतम्॥

अग्नि में तपाये हुए स्वर्ण की चटकीली आभा-सरीखी जिनकी शरीर कान्ति है, जो भय से दूर करने वाले हैं, जिनकी बद्धाञ्जलि हृदय पर विराजमान है, जिनका मुख-कमल कानों में झलमलाते हुए कुण्डलों की छटा से सुशोभित है, उन महान् अद्भुत रूपधारी वानरराज हनुमानजी को नमस्कार करना चाहिए।

इसके अनन्तर सर्वतोभद्र मण्डल पर पण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ-देवताओं की स्थापना कर नौ पीठ-शक्तियों की पूजा करनी चाहिए। क्रमशः पूर्व की ओर से मन्त्रों को पढ़ता जाए और उन पर गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि एक ही साथ चढ़ाता जाए।

ॐ विमलायै नमः (पूर्व में), **ॐ प्रह्व्यै नमः** (वायुकोण में),
ॐ उत्कर्षिण्यै नमः (अग्निकोण में), **ॐ सत्यायै नमः** (उत्तर में),
ॐ ज्ञानायै नमः (दक्षिण में), **ॐ ईशानायै नमः** (नैर्ऋत्यकोण में),
ॐ क्रियायै नमः (ईशानकोण में), **ॐ अनुग्रहायै नमः** (मध्य में),
ॐ योगायै नमः (पश्चिम में)।

इसके पश्चात् सुवर्ण या अन्य किसी धातु से निर्मित मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घृत से लेप करके उस पर दूध या जल की धारा से स्नान करायें, फिर पीठ के मध्य में उसकी स्थापना एवं प्राण-प्रतिष्ठा करके मूल मन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर पाद्य, अर्घ्य, नैवेद्य, पुष्प, गन्ध आदि से पूजन करना चाहिए।

आवरण पूजन के लिए सर्वप्रथम हाथ में फूल लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके हनुमान जी की आज्ञा के लिए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें-

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः।
अनुज्ञां हनुमन् देहि परिवारार्चनाय में॥

इस प्रकार फूल चढ़ाकर '**पूजितास्तृप्ताः सन्तु**' ऐसा कहें। तदनन्तर सबसे पहले षट्कोण केसर में अग्नि कोण से आरम्भ कर क्रमशः छः अंगों का पूजन मन्त्र पढ़कर इस प्रकार करें-

ॐ आञ्जनेयाय हृदयाय नमः, हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (अग्निकोण में),

ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा, शिरः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (दक्षिण में),

ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट्, शिखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (पश्चिम में),

ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रत्रय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (वायुकोण में),

ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारकाय अस्त्राय फट्, अस्त्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (उत्तर में)।

इसके पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण कर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए पुष्पांजलि समर्पित करना चाहिए-

ॐ अभीष्टसिद्धि में देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

इसके अनन्तर अष्टदल कमल पर पूज्य और पूजक अर्थात् अपने इष्ट और स्वयं के मध्य पूर्व दिशा की कल्पना करके पूर्व से आरम्भ कर अन्य दिशाओं में क्रमशः द्वितीयावरण का पूजन करें-

ॐ रामभक्ताय नमः (पूर्व में), **ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः** (वायुकोण में),
ॐ महातेजसे नमः (अग्निकोण में), **ॐ दक्षिणाशाभास्काराय नमः** (उत्तर में),
ॐ कपिराजाय नमः (दक्षिण में), **ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः** (नैर्ऋत्य में),
ॐ महाबलाय नमः (ईशानकोण में)

इस प्रकार द्वितीयावरण का पूजन करके पुष्पाञ्जलि समर्पित करें।

तृतीयावरण का पूजन अष्टकोण के अग्रभाग पर पहले की ही भांति पूर्व से आरम्भ कर अन्य दिशाओं में पूजन करते हुए निम्नोक्त प्रकार से करना चाहिए –

ॐ सुग्रीवाय नमः (पूर्व में अष्टकोण के अग्रभाग पर),
ॐ अंगदाय नमः (अग्निकोण में),
ॐ नीलाय नमः (दक्षिण में)
ॐ जाम्बवते नमः (ईशानकोण में),
ॐ नलाय नमः (पश्चिम में),
ॐ सुषेणाय नमः (वायुकोण में),
ॐ द्विविदाय नमः (उत्तर में),
ॐ मयन्दाय नमः (नैर्ऋत्य में),

इस प्रकार तृतीयावरण का पूजन समाप्त कर पुष्पाञ्जलि समर्पित करनी चाहिए।

सब के अन्त में चतुर्थ आवरण के पूजन में भूपुर पर अर्थात् सर्वतोभद्र के बाह्य भाग पर दसों दिक्पालों की और उनके वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि समर्पित करें। इस प्रकार आवरण पूजन के समाप्त होने पर धूप, दीप, नैवेद्यादि से पूजन कर नमस्कार करें।

इसके अनन्तर मूल मन्त्र का पुरश्चरण विधि से लक्ष बार जप करना चाहिए। उसका दशांश अर्थात् दस हजार होम करना चाहिए, ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर मन्त्र प्रयोग का साधन करना चाहिए।

श्री हनुमत स्तोत्र

हनुमानुवाच

तिरश्चमपि यो राजा समवायं समीयुषाम्।
तथासुग्रीवमुख्यानां यस्तवद्यं नमाम्यहम्॥
सकृदेव प्रसन्नाय विशिष्टायैवराज्यदः।
बिभीषणाययोदेवस्तं वीरं प्रणमाम्यहम्॥
यो महापुरुषो व्यापी महाब्धौ कृतसेतुकः।
स्तुतो येन जटायुश्च महाविष्णुनमाम्यहम्॥
तेजसाप्यायिता यस्यज्वलन्तिज्वलनादयः।
प्रकाशते स्वतंत्रोस्तंज्वलन्तं नमाम्यहम्॥
सर्वतोमुखता येन लीलया दर्षिता रणे।
रक्षसे श्वरयोधानां तं वन्दे सर्वतोमुखम्॥
नृभावन्तु प्रपन्नानां हिनस्ति च सदारुजम्।
नृसिंहतनुप्राप्तौ यस्तं नृसिंह नमाम्यहम्॥
यस्माद्विभ्यति वातार्कज्वलनेन्द्राः समृत्यवः।
भयं तनोति पापानां भीषणंतन्नमाम्यहम्॥
परस्य योग्ते तांवीक्ष्यहरतेपापसन्ततिम्।
पुरस्य योग्य तांवीक्ष्य तं भद्रं प्रणमाम्यहम्॥
यो मृत्युं निजदासानां मारयत्यतिचेष्टदः।
त्रापिनिज दासार्थं मृत्युमृत्युंनमाम्हम्॥
यत्पादपद्मप्रणतो भवत्युत्तमपुरुषः।
तमीशं सर्वदेवानां नमनीयंनमाम्यहम्॥
आत्मभावं समुत्क्षिप्यदास्यं चैवरघूत्तमम्।
भेजहंप्रत्यहंरामंससीतं सहलक्ष्मणम्॥
नित्यंश्रीरामभक्तय किङ्करायकिङ्कराः।
शिवत्योदिशस्तस्य सिद्धयस्तस्य दासिकाः॥
इदंहनुमता प्रोक्तं मंत्रराजात्मकंस्तवम्।
पठेदनुदिनं यस्तु सरामेभक्तिमान्भवेत्॥

श्री हनुमत् स्तोत्राणि

अस्य श्री हनुमत्कवचस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः अनुष्टप् छन्दः श्री हनुमान्देवता मारूतात्मजेति बीजम् अञ्जनी सूनुरिति शक्तिः आत्मनः सकलकार्य सिद्धयर्थ जपे विनियोगः।

ॐ हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ पवनात्मजाय तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ अक्षपद्माय मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ विष्णुभक्ताय अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ लंका विदाहकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ श्री रामकिकराय करतल कर पष्ठाभ्यां नमः।

ध्यान-

ध्यायेद्बाल-दिवाकर द्युतिनिभ देवारिदर्पापहं,
देवेन्द्र प्रमुखेः प्रशंसि यशसं देदीप्यमानंरूचा।
सुग्रीवादिसमस्त वानर युंत सुव्यक्त तत्त्वप्रियं,
संरक्तारूण लोचनं पवनजं पीताम्बरालंकष्तम्।
वज्रांग पिंगलेशाद्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम्।
नियुद्धमुपसंक्रम्य पारावार पराक्रमम्॥
स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कष्ताञ्जलिम्।
कुण्डल द्वय संशोभि मुखाम्बुज हरि भजेत्॥
वामहस्ते गदायुक्तं पाशहस्तं कमण्डलुम्।
ऊर्ध्वदक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत्॥
हनुमान्पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः।
पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः पातु सागर पारगः॥
उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केषरीप्रियनन्दनः।
अधस्ताद्विष्णु भक्तश्च पातु मध्ये च पाविनः॥

अवांतरदिशः पातु सीताशोक विनाशनः।
लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्॥
सुग्रीव सचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः।
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्॥
नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवंगेश्वरः।
कपोलो कर्णमूले च च पातु श्रीरामकिंकरः॥
नासाग्रमञ्जनीसूनुः पातु वक्त्रं कपीश्वरः।
पातुकंठे च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः॥
भुजौ पातु महातेजाः करौ तु चरणायुधः।
नखान्नखायुद्यः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः॥
वक्षो मुद्रापहारी च पार्श्वे पातु भुजायुधः।
लंकाविभंजकः पातु पष्ठदेशे निरन्तरम्॥
नाभि च रामदूतश्च कटिं पात्वनिलात्मजः।
गुह्यंय पातु कपीशस्तु गुल्फौ पातु महाबलः॥
अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः।
अंड्गान्यमित सत्त्वाढयः पातु पादांगुलीः सदा॥
हनुमत्वकवचं यस्तु पठेद्विद्धान् विचक्षणः।
स एव पुरुष श्रेष्ठो भुक्ति मुक्ति च विन्दति।
त्रिकालमेककालं वा पाठेन्मासत्रयं पुनः॥
सर्वारिष्टं क्षणे जित्वा स पुमान् श्रियमाप्नुयात्।
अर्धरात्रौ जले स्थित्वा सप्तबारं पठेद्यदि॥
क्षयापस्मारकुष्ठादिताप ज्वर निवारणम्।
अश्वत्थमूलेर्कबारं स्थित्वा पठति यः पुमान्॥
स एव जयमाप्नोति संग्रामेष्वभयं तथा।
यः करे धारयेन्नित्यं सर्वान्कामानवाप्नुयात्॥
लिखित्वा पूजयेद्यस्तु तस्य गष्हभयं हरेत्।
कारागष्हे प्रयाणे च संग्रामे देवविप्लवे।
यः पठेद्धनुमत्कवचं तस्य नास्ति भयं तथा॥
यो वारां निधिमल्प पल्लवमिवोल्लंध्य प्रतापान्वितो,
वैदेही धन तल्पशोक हरणो वैकुण्ठ भक्तप्रियः।
अक्ष्ज्ञद्युर्जित राक्षसेश्वर महादर्पापहारो रणे,
सोऽयंवानरपुड्गवोऽवतु सदा चास्मान्समीरात्मजः॥

हनुमत् कवच

रामचन्द्रोवाच

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः।
पातुप्रतीच्यां रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः॥
उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः।
अधस्तुविष्णुभक्तश्च पातु मध्यं तु पावनिः॥
लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्।
सुग्रीव सचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः॥
भालं पातु महावीरो भ्रवोर्मध्ये निरन्तरम्।
नेत्रे छायापहारी च पावनः प्लेगेश्वरः॥
कपोले कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः।
नासाग्रमञ्जनीसूनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः॥
वाचं रुद्रिप्रियः पातु जिह्वां पिङ्गललोचनः।
पातु देवः फाल्गुनेष्श्चुबुकं दैत्यदर्पहा॥
पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः।
भुजौ पातु महातेजाः करौ च चरणायुधः॥
नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः।
वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः॥
लङ्काविभञ्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्।
नाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः॥
गुह्यं पातु महाप्रज्ञो लिगं पातु शिवप्रियः।
ऊरू च जानुनि पातु लङ्काप्रासादभञ्जनः॥
जङ्घे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः।
अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः॥
अङ्गान्यमितसत्त्वाढ्यः पातु पादांगुलीस्तथा।
सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवित्॥
हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान्विचक्षणः।
ए एवं पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥
त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं नरः सर्वान्।
रिपून्क्षणाज्जित्वा स पुमान् श्रियमाप्नुयात्॥
मध्यरात्रे जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद्यदि।
क्षयास्मारकुष्ठादितापत्रयनिवारणः॥
अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान्।
अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयं तथा॥

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगताम।
सुदार्ढ्यं वाक्स्फुरत्वं च हनुमत्स्मरणाद्भवेत्॥
मारणं वैरिणां सद्यः शरणं सर्वसम्पदानम्।
शोकस्य हरणे दक्षं वन्दे तं रणदारुणम्॥
लिखित्वा पूजयेद्यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत्।
यः करे धारयेन्नित्यं स पुमाञ्छ्रियमाप्नुयात्॥
स्थित्वा तु बन्धने यस्तु जपं कारयति द्विजैः।
तत्क्षणान्मुक्तिमाप्नोति निगडात्तु तथैव च॥
य इदं प्रातरुत्थाय पठेच्च कवचं सदा।
आयुरारोग्यसन्तानैस्तस्य स्तव्यः स्तवो भवेत्॥
इदं पूर्वं पठित्वा तु रामस्य कवचं ततः।
पठनीयं नरैर्भक्त्या नैकमेव पठेत्कदा॥
हनुमत्कवचं चात्र श्रीरामकवचं विना।
ये पठन्ति राश्चत्र पठनं तद्धथा भवेत॥
तस्मात्सर्वैः पठनीयं सर्वदा कवचद्वयम्।
रामस्य वायुपुत्रस्य सद्भक्तैश्च विशेषतः॥

हनुमत्कवच का पाठ करने वाला विद्वान ही श्रेष्ठ पुरुष होता है तथा उसे ही भुक्ति-मुक्ति की प्राप्ति होती है। तीन महीने तक तीन कालों या एक ही काल में इसका पाठ करने वाला नर सर्वशत्रुओं को क्षण में ही जीत लेता है और असीम संपदा की प्राप्ति करता है। आधी रात को जल में स्थित होकर इस कवच का सात बार पाठ किया जाए तो क्षय, अपस्मार, कुष्ठ आदि तीनों तापों का निवारण होता है। रविवार को पीपल के नीचे आसीन होकर इस कवच का पाठ करने वाले को अचल संपदा की उपलब्धि होती है और संग्राम में विजय मिलती है। हनुमान का स्मरण करने से बुद्धिबल, यश, धैर्य, निर्भयता, आरोग्यता, सुदृढ़ता और वाक्स्फूर्ति की प्राप्ति होती है। सर्व बैरियों का तत्काल नाश, सर्वसंपदा प्रदान करने और शोक का हरण करने में दक्ष रणदारुण का मैं वंदन करता हूं। कवच को लिखकर उसकी पूजा करने वाले की सर्वत्र विजय होती है। इसे भुजा में बांधने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। बंधन में पड़ा व्यक्ति आदि ब्राह्मणों से इस कवच का पाठ कराए तो तत्काल बंधन मुक्ति होती है। नित्य प्रातः इसका पाठ करने वाला आयु, आरोग्य व संतान आदि सर्ववस्तुएं प्राप्त करता है और सबके द्वारा वंदित होता है। इस कवच को पढ़ने के बाद ही श्रीराम कवच पढ़ना चाहिए। किसी भी कवच का एकल पाठ नहीं करना चाहिए। हनुमत्कवच का पाठ किए बिना श्रीराम कवच को पढ़ने वाले का पाठ निष्फल हो जाता है। अतः सदैव दोनों का पाठ करना ही शुभ है। विशेषकर राम व वायु पुत्र के भक्तों इसमें सचेत रहना चाहिए।

श्री एकमुखी हनुमत् कवचम्

एकदा सुखमासीनं शङ्करं लोकशङ्करम्।
प्रपच्छ गिरिजा कान्तं कर्पूरधवलं शिवम्॥

पार्वत्युवाच

भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगत्प्रभो।
शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद्ध्रुवम्॥
संग्रामे सङ्कटे घोरे भूतप्रेतादिके भये।
दुःखदावाग्निसन्तप्तचेतसां दुःखभागिनाम्॥

जगत के कल्याणकारी शंकर एक बार सुख से बैठे थे। तभी गिरिजा ने कांतिमान व कर्पूर से धवल शिव से पूछा.... हे भगवन, देवदेवेश, लोकनाथ, जगतप्रभो, शोकाकुल लोगों की कैसे रक्षा हो सकती है। संग्राम, संकट, गनघोर भूत-प्रेत के भय और दुघदावाग्नि से संतप्त लोगों की रक्षा का कोई उपाय है ?

महादेवोवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया।
विभीषणाय रामणे प्रेम्णा दत्तं च यत्पुरा॥
कवचं कपिनाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः।
गुह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि विशेषाच्छृणु सुन्दरि॥
उद्यदादित्यसङ्काशमुदारभूजविक्रमम्।
कन्दर्पकोटिलावण्यं सर्वविद्याविशादम्॥
श्रीरामहृदयानन्दं भक्तकल्पमहीरुहम्।
अभयं वरदं दोर्भ्यां कलये मारुतात्मजम्॥
हनूमानंजनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः।
रामेष्टः फाल्गुन सखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः॥
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा॥
एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः।
स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत्॥
तस्य सर्वं भयं नास्ति रणे च विजयी भवेत्।
राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन॥
उल्लंघ्य सिन्धो सलिलं सलीलं यः सोकवह्निं जनकात्मजायाः॥
आदाय तेनैव ददाह लङ्का नमामि तं प्राञ्जलिरराञ्जनेयम्॥

हे देवि, सुनो, जगत की हितकामनार्थ मैं तुम्हें वायुपुत्र कपिनाथ कवच के बारे में बताता हूं। इसे राम ने प्रेमवश विभीषण को प्रदान किया था। यह गुह्य कवच है, इस पर भी मैं तुम्हें विशेष इच्छा से बताता हूं। सुनो, हे सुंदरि, सद्य उदित आदित्य की तरह आलोकित, भारी भुजाधारी व विक्रमी, कोटि कामदेव-से लावण्यमय, सर्वविद्या विशारद, श्रीराम के हृदय के आनंद, भक्तों के कल्पवृक्ष, अभय और वरदायक मारुतात्मज, हनुमान, अंजनीपुत्र, वायुपुत्र, महाबल को मैं दोनों हाथ जोड़ता हूँ। राम के इष्ट, अर्जुन के सखा, पिंगलाक्षी, अमित विक्रमी, सागर को पार करने वाले, सीताशोक के विनाशक, लक्ष्मण के प्राणदाता, दशग्रीव के दर्पहारी, कपींद्र के इन बारह नामों को सोते-जागते या आते-जाते पढ़ने वाले को कोई भय नहीं सताता। यह रण में विजयी होता है। राजद्वार को अथवा गह्वर, उसे कहीं भी रंचमात्र भय नहीं होता। जिसने सिंधु सलिल को एक छलांग में पार किया और जनकात्मजा सीता की शोकाग्नि लेकर लंका को जला डाला, ऐसे हनुमान को हाथ जोड़कर मैं नमन करता हूँ।

ॐ नमो हनुमते सर्वसर्वग्रहान् भूतभविष्यद्वर्तमानान् समीपस्थान सर्वकालदुष्टबुद्धिनुच्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभयक्षोभय मम सर्वकार्याणि साधक साधय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ॐ ह्रः स्वाहा परकृत्ययन्त्रमन्त्रपराहङ्कार भूतप्रेतपिशाचदृष्टिसर्वविघ्न दुर्जनचेष्टाकुविद्यासर्वोग्रभयानि निवारय निवारय बन्ध बन्ध लूंठ लूंठ विलुंच विलुंच किलि किलि सर्वकुयन्त्राणि दुष्टवांच ॐ फट् स्वाहा।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः। श्रीहनुमान् परमात्मा देवता। अनुष्टुप्छन्दः। मारुतात्मज इति बीजम्। अञ्जनीसूनुरिति शक्तिः। लक्ष्मणप्राणदातेति कीलकम्। रामदूतायेत्यस्त्रम्। हनुमान् देवता इति कवचम्। पिङ्गाक्षोऽमितविक्रम इति मन्त्रः। श्रीरामचन्द्रप्रेरणया रामचन्द्रप्रीत्यर्थं मम सकल कामनासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

करन्यास

ॐ ह्रीं अञ्जनीसुताय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीं रुद्रमूर्तये तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ ह्रूं रामदूताय मध्यमाभ्यां नमः ॐ ह्रैं वायुपुत्राय अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रौं अग्निगर्भाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रः ब्रह्मास्त्रनिवारणाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

हृदयादिषडंगन्यास

ॐ ह्रां अञ्जनीसुताय हृदयाय नमः॥ ॐ ह्रीं रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा॥ ॐ ह्रूं रामदूताय शिखायै वषट्॥ ॐ ह्रैं वायुपुत्राय कवचाय हुम्॥ ॐ ह्रौं अग्निगर्भाय नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रः ब्रह्मास्त्रनिवारणाय अस्त्राय फट्॥

ध्यान

ध्यान ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखं प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा। सुग्रीवादिसमस्तवानरयंतु सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम्॥ उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं मोञ्जीयज्ञोपवीताभरणरुचिशिखं शोभितंकुण्डलाङ्कम्। भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनादप्रमोदं ध्यायेद्देवं विधेमं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूत-वार्धिम्॥ वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम्। निगूढमुपसङ्गस्य पारावारपराक्रमम्॥ स्फटिकाभंह स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम्। कुण्डलद्वयसंशोभिमुखाम्भोजं हरि भजे॥ सवयहस्ते गदामुक्तं वामहस्त कमण्डलुम्। उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनूमन्तं विञ्चितयेत्॥

प्रात: कालीन दिवाकर के आलोक के समान प्रखर तेजस्वी, राक्षसों के दर्पहारी, देवों में प्रमुख देव, प्रशस्त यशस्वी, देदीप्यमान, रुचिकर, आदि समस्त वानरों से युक्त, सुव्यक्तत्त्वप्रिय, लाल अरुण लोचन वाले, पीले वस्त्रों से अलंकृत कपींद्र का मैं ध्यान धरता हूँ। सद्य उदित कोटि मार्तंडों के प्रकाश से दीप्तिमान, मनमोहन वीरासन की मुद्रा में स्थिति, मौंजी, यज्ञोपवीत व आभूषणों से विभूषित, कुंडलों से सुशोभित, भक्तों के इष्टदायक, मुनिजनों द्वारा प्रणत, वेद-नाद से प्रमुदित, वानर कुलपति तथा सागर को गो-खुर जितना मानने वाले कपींद्र ध्यान धरना चाहिए। वज्रांग, शीश पर पिंगल केशधारी, स्वर्ण कुंडल से मंडित, असीम पराक्रमी, स्वर्ण की स्फटिक कांतियुक्त, दोनों भुजाएं जोड़ें, दोनों कानों में कुंडल धारण किए, कमलमुखी कपींद्र का मैं ध्यान धरता हूँ। दाएं हाथ में गदा व बाएं हाथ में कमंडल धारण किए व दाईं भुजा को तनिक ऊपर उठाए हनुमंत का सदैव ध्यान धरना चाहिए।

ॐ नमो हनुमते शोभिताननाय यशोलंकृताय अञ्जनीगर्भसम्भूताय रामलक्ष्मणानन्दकाय कपिसैन्सप्रकाशन पर्वतोत्पाटनाय सुग्रीवसाहकरण परोच्चाटनकुमार ब्रह्मचर्यगम्भीर शब्दोदय ॐ ह्रीं सर्वदुष्टग्रहनिवारणाय स्वाहा। ॐ नमो हनुमते एहि एहि एहि सर्वग्रभूतानां शाकिनीडाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वेषामाकर्षयाकर्षय मर्दय मर्दय छेदयच्छेदय मर्त्यान्मारय मारय शोषय शोषय प्रज्वल प्रज्वल भूतमण्डलपिशाचमण्डल निरसनाय भूतज्वरप्रेतज्वर चातुर्थिक ज्वरब्रह्मारक्षस पिशाचच्छेदनक्रिया विष्णुज्वरमहेशज्वरान् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि अक्षिशूले शिरोभ्यन्तरे हृक्षिशूले गुल्मशूले पित्तशूले ब्रह्मराक्षस कुलप्रबल नागकुल विनिर्विषझटिति झटिति ॐ ह्रीं फट् घेघे स्वाहा। ॐ नमो हनुमते पवनपुत्र वैश्वानरमुख पापदृष्टि षोढादृष्टिहनुमते का आज्ञा फुरे स्वाहा स्वगृहे द्वारे पट्टके तिष्ठ तिष्ठेति तत्र रोगभयं राजकुलाभयं नास्ति तस्योच्चारणमात्रेण सर्वे ज्वरा नश्यन्ति ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं घे घे स्वाहा।

श्री पंचमुखी हनुमत् कवचम्

ॐ अस्य श्री पञ्चमुखीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः, श्री हनुमान् देवता, रां बीजम्, मं शक्तिः, चन्द्रं इति कीलकम्, ॐ रौं कवचाय हुं, हौं अस्त्राय फट्। इति पञ्चमुखीहनुमत्वकवचस्य पाठे विनियोगः।

भगवान् शंकर जी ने एक दिन पार्वती जी से कहा कि इस पञ्चमुखी हनुमत्कवच स्तोत्र मन्त्र का ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्द, श्री हनुमान देवता, रां बीज, मं शक्ति, चन्द्र कीलक, रौं कवच और हौं अस्त्र है।

ध्यानम्

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि शृणु स्वांग सुन्दरम्।
यत्कृतं देविदेवेशि ध्यानं हनुमतः प्रियम्॥1॥

अब हे देवि-देवेशि! हनुमान जी का जो ध्यान किया गया है, उस परमप्रिय स्वांग सुन्दर ध्यान को मैं तुमसे कहता हूँ, तुम उसे सुनो॥1॥

पञ्चवक्त्रं महाभीमं कपियूथसमन्विम्।
बाहुभिर्दशभिर्युक्तं, सर्वकामार्थ सिद्धिदम्॥2॥

श्री हनुमान् जी का समस्त मनोकामनाओं की सिद्धियों को देनेवाला पाँच मुखों का एवं दश भुजाओं से युक्त कपियूथ समन्वित भीमकाय स्वरूप है॥2॥

पूर्व वानरसद्वक्त्रं कोटि सूर्य समप्रभम्।
दंष्ट्राकरालवदनं भृकुटीलेक्षणम्॥3॥

करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश करने वाले, बड़ी विकट दंष्ट्राओं से विकराल भृकुटि से कुटिल दृष्टि वाले, वानर के मुख का पूर्व में ध्यान करें॥3॥

अस्येव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंह महद्भुतम्।
अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥4॥

इसी के दक्षिण की ओर वाला मुख अतीव अद्भुत एवं नृसिंह के समान है, यह मुख श्री हनुमानजी का विकराल भीषण एवं उग्र तेजवाला शरीर होते हुए भी नाशक है ॥4॥

पश्चिमे गरुडं वक्त्रं वक्रतुण्ड महाबलम्।
सर्वनागप्रशामनं सर्वभूतादिकृन्तनम् ॥5॥

श्री हनुमान जी का पश्चिम से गरुड स्वरूपी मुख है जो कि महान् बलशाली एवं वक्र है तथा समस्त नागों एवं समस्त भूत-प्रेतों का नाशक है ॥5॥

उत्तरे शूकरं वक्त्रं कृष्णं दीप्तनभोमयम्।
पाताले विद्धवेतालज्वररोगादिकृन्तनम् ॥6॥

उत्तर में शूकर (वाराह) के समान कृष्ण मुख है जो कि आकाश के समान भासमान है तथा पाताल में बेताल सिद्धि और समस्त ज्वरादि रोगों का विनाशक है ॥6॥

ऊर्ध्वं ह्याननं घोरं दानवान्तकरं परम्।
येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र ताटकाया महाहवे ॥7॥

हे विप्रेन्द्र! ऊर्ध्व दिशा में घोर हय (घोड़ा) के समान मुख है, दानवों का अत्यन्त नाशकरने वाला है, जिसने कि ताड़क में महान् युद्ध में उपस्थित रहकर दानवों को नष्ट किया था ॥7॥

दुर्गतेः शरणं तस्य सर्वशत्रुहरं परम्।
ध्यात्वा पञ्चमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम् ॥8॥

दुर्गति में शरण देने वाले सर्व शत्रुहर पञ्चमुख रुद्र दयानिधि हनुमान जी का ध्यान करें ॥8॥

खंगं त्रिशूलं खट्वांगं, पाशमंकुशपर्वतम्।
मुष्टौ तु मोदकौ वृक्षं धारयन्तं कमण्डलुम् ॥9॥

खंग, त्रिशूल, खट्वांग, पाश, अंकुश, पर्वत एवं मुट्ठियों में मोदक, वृक्ष, कमण्डलु आदि को धारण करने वाले हनुमानजी को ध्यावें ॥9॥

भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दशमं मुनिपुंगव।
एतान्यायुधजालानि, धारयन्तं भयापहम् ॥10॥

हे मुनिश्रेष्ठ! भिन्दिपाल, ज्ञान मुद्रा आदि दश आयुधों को धारण करने वाले और भय नाश करने वाले श्री हनुमान जी का ध्यान करें ॥10॥

दिव्यमालाम्बरधरं दिव्य गन्धानुलेपनम्।
सर्वैश्वर्यमयं देवं, महद्विश्वतो मुखम् ॥11॥

दिव्य माला एवं दिव्य वस्त्रधारी तथा दिव्य चन्दनानुलेपी, समस्त ऐश्वर्यों वाले विश्वतोमुख श्री हनुमान जी का ध्यान करें ॥11॥

पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णवक्त्रं सशंखवृितं कविराजवर्यम्।
पीताम्बरादिमुकुटैरपि शोभमानं पिंगाक्षमञ्जनिसुतंह्यनिशं स्मरामि ॥12॥

पञ्चमुखी, अच्युत (अनश्वर), अनेक विचित्र वर्णों के मुख वाले, सशंखं, अनेक वाद्य युक्त कपिराजों में श्रेष्ठ, पीताम्बर तथा मुकुटादिकों से सुशोभित पिंगाक्ष (पीली-पीली आँखों वाले), अञ्जनिसुत को मैं दिन-रात स्मरण करता हूँ ॥12॥

मर्कटस्य महोत्साहं सर्वशोकविनाशनम्।
शत्रु संहारकं चैतत् कवचं ह्यापदं हरेत् ॥13॥

उत्साह का वर्धक, समस्त शोकों का विनाशक, शत्रु संहारक, यह हनुमान जी का कवच निश्चित ही समस्त आपत्तियों को हरता है ॥13॥

ॐ हरिकर्मटमर्कटाय स्वाहा ॥14॥

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रु संहारणाय स्वाहा ॥15॥

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय उत्तरमुखाय आदिवराहाय सकलसम्पत्कराय स्वाहा ॥16॥

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकजनवश्यकराय स्वाहा ॥17॥

ॐ अस्य श्री पञ्चमुखीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता, सीतेति बीजम्, हनुमानिति शक्तिः, हनुमत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

पुनर्हनुमानिति बीजम्। ॐ वायुत्राय इति शक्तिः। अञ्जनीसुतायेति कीलकम्। श्री रामचन्द्रवरप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥

अथ न्यासः

ॐ हं हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ वं वायुपुत्राय तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ अं अञ्जीनीसुताय मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ रां रामदुताय अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ रुं रुद्रमूर्तये कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ सीताशोकनिवारणाय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ अञ्जनीसुताय हृदयाय नमः।

ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा।

ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट्।

ॐ कपियूथपाय कवचाय हुम्।

ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ पञ्चमुखीहनुमते अस्त्राय फट्।

अथ विनियोगः

ॐ श्रीरामदूताय, आञ्जनेयाय, वायुपुत्राय, महाबलाय, सीताशोकनिवारणाय, महाबलप्रचण्डाय, लंकापुरीदहनाय, फाल्गुनसखाय, कोलाहलसकलब्रह्माण्ड - विश्वरूपाय, सप्तसमुद्रनिरन्तरोल्लंघिताय, पिंगलनयनायामितविक्रमाय, सूर्यबिम्बफलसेवाधिष्ठित निराकृताय, सञ्जीवन्या अंगदलक्ष्मणमहाकपिसैन्यप्राणदात्रे, दशग्रीवविध्वंसनाय, रामेष्टाय, सीतासहरामचन्द्रवर प्रसादाय, षट्प्रयोगागमपञ्चमुखीहनुमन्मन्त्रजपे विनियोगः॥

ॐ हरिमर्कठमर्कटाय स्वाहा ॐ हरिमर्कठमर्कटाय वं वं वं वं स्वाहा। ॐ हरिमर्कठमर्कटाय फं फं फं फं फं फट् स्वाहा (इति पूर्वे)। ॐ मर्कटमर्कटाय खं खं खं खं खं मारणाय स्वाहा। ॐ हरिमर्कटमर्कटाय ठं ठं ठं ठं ठं स्तम्भनाय स्वाहा (इति दक्षिणे)। ॐ हरिमर्कटमर्कटाय डं डं डं डं डं आकर्षणाय सकलसम्पत्कराय ॐ उच्चाटने ढं ढं ढं ढं ढं कूर्ममूर्तये पञ्चमुखीहनुमते परयन्त्रपरतन्त्रोच्चाटनाय स्वाहा (इति पश्चिम)। ॐ कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं स्वाहा (इत्युत्तरे)। इति दिग्बन्धः।

ॐ पूर्वकपिमुख पञ्चमुखी हनुमते ठं ठं ठं ठं ठं। सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा। ॐ दक्षिणमुखे पञ्चमुखीहनुमते करालवदनाय नरसिंहाय हां हां हां हां हां सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा॥ ॐ पश्चिमुखे गरुडासनाय पञ्चुमखीवीरहनुमते मं मं मं मं मं सकलविषहराय स्वाहा॥ ॐ उत्तरमुखे आदि वराहाय लं लं लं लं लं नृसिंहाय नीलकण्ठाय पञ्चमुखीहनुमते स्वाहा॥ ॐ अञ्जनीसुताय वायुपुत्राय महाबलाय रामेष्टफाल्गुनसखाय सीताशोक निवारणाय लक्ष्मणप्राणरक्षकाय कपिसैन्यप्रकाशाय सुग्रीवाभिमानदहनाय श्रीरामचन्द्रवरप्रसादकाय महावीर्याय प्रथमब्रह्माण्डनायकाय पञ्चमुखीहनुमते भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनी डाकिनी अन्तररिक्षग्रहपरमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्र सर्वग्रहोच्चाटनाय सकलशत्रु संहारणाय पञ्चमुखीहनुमद्वरप्रसादक सर्वरक्षकाय जं जं जं जं जं स्वाहा।

इंद कवचं पठित्वा तु महाकवचं पठेन्नरः।
एकबारं पठेन्नित्यं सर्वशत्रुनिवारणम्॥18॥

साधक इस कवच को पढ़कर फिर एक बार भी इस महाकवच का नित्य पाठ करता है तो उसके सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं॥18॥

द्विबारं तु पठेन्नित्यं सर्वशत्रुनिवारणम्।
त्रिबारं तु पठेन्नित्यं सर्वसम्पत्करं परम्॥19॥

जो नित्य प्रति इस कवच को दो बार पाठ करता है, उसके समस्त शत्रुओं का निवारण होता है तथा जो प्राणी तीन बार पाठ करता है उसे निखिल सम्पत्तियाँ प्राप्त होते हैं॥19॥

चतुर्बारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशीकरम्।
पञ्चबारं पठेन्नित्यं सर्वरोगनिवारणम्॥20॥

जो प्राणी नित्यप्रति चार बार पाठ करता है वह समस्त लोगों को वश में कर लेता है तथा पाँच बार पढ़ने से समस्त रोगों का निवारण हो जाता है॥20॥

षड्बारं तु पठेन्नित्यं सर्वदैव वशीकरम्।
सप्तबारं तु पठेन्नित्यं सर्वकामार्थसिद्धदम्॥21॥

जो प्राणी छः बार नित्यप्रति इसे पढ़ता है वह सभी देवताओं को वश में कर लेता है तथा जो सात बार पढ़ता है, उसकी समस्त कामनाएँ सिद्ध होती हैं॥21॥

अष्टबारं पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम्।
नवबारं पठेन्नित्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम्॥22॥

जो नित्य प्रति इस कवच का पाठ आठ बार करता है, उसे समस्त सौभाग्य प्राप्त हो जाते हैं तथा जो नौ बार नित्य प्रति पाठ करता है, उसे समस्त ऐश्वर्य प्राप्त हो जाते हैं॥22॥

दशबारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्यज्ञानदर्शनम्।
एकादशं पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिंलभेन्नरः॥23॥

जो साधक नित्यप्रति दश बार पढ़ता है उसे त्रैलोक्य का ज्ञान होता है तथा जो ग्यारह बार पढ़ता है, वह प्राणी समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है॥23॥

कवचं स्मृतिमात्रेण, महालक्ष्मीफलप्रदम्।
तस्माच्च प्रयता भाव्यं कार्यं हनुमतः प्रियम्॥24॥

इस कवच के केवल स्मृति (मात्र) से ही महालक्ष्मी प्राप्त होती है। इसलिए हनुमान जी के इस कवच का पाठ अत्यन्त प्रयत्न के द्वारा करना चाहिए। इस कवच के पाठ से हनुमान जी का प्रिय कार्य करना चाहिए॥24॥

॥इति श्री पञ्चमुखी हनुमत्कवचम्॥

श्री हनुमदादिषट् कवच प्रयोग

आदौ नरैर्मारुतेश्च पठित्वा कवचं शुभम्।
तंतः शत्रुघ्नकवचं पठनीयमिदं शुभम्॥
पठनीयं भरतस्य कवचं परमं ततः।
ततः सोमित्रिकवचं पठनीयं सदा नरैः॥
पठनीयं ततः सीताकवचं भाग्यवर्द्धनम्।
ततः श्रीरामचन्द्रस्य कवचं सर्वदोत्तमम्॥
पठनीयं नरैर्भक्तया सर्ववांछितदायकम्।
एवं षट्कवचान्यत्र पठनीयानि सर्वदा॥
पठनं षट्कवचानां श्रेष्ठं मोक्षैकसाधनम्।
ज्ञात्वात्र मानवैर्भक्त्या कार्यं च पठनं सदा॥
अशक्तेनात्र चत्वारि पठनीयानि सादरम्।
हनुमतश्च सौमित्रेः सीताया राघवस्य च॥
इमानि पठनीयानि चत्वारि कचानि हि।
चतुर्णां कवचानां च पठने मानवास्य च॥
न यद्यत्रावकारशश्चेत्तदा त्रीणि पठेन्नरः।
मारुतेश्चात्र सीतायास्तथा श्रीराघवस्य च॥
त्रयाणां कवचानां च न पाठावसरो यदा।
पठनार्थं मानवाय तदा द्वे कवचे स्मृते॥
मारुतेश्चाथ रामस्य सीताया राघवस्य वा।
नैकमेव पठेच्चात्र श्रीरामकवचं शुभम्॥
अवकाशे कवचानां षट्कमेव सदा नरैः।
पठनीयं क्रमेणैव कर्तव्यो नालसः कदा॥
यदावकाशो नास्त्येव तदा तेषां सुखाप्तये।
मया विशेषः प्रोक्तोऽयं न सर्वेषां मयेरितः॥

इस कवच के बारे में **श्रीमदानंद रामायण** के **मनोहरकांड** में यह उल्लेख मिलता है :

हनुमत्कवच का पाठ करने के उपरांत शत्रुघ्न कवच का पाठ करना शुभ है। फिर भरत कवच और इसके उपरांत सौमित्र कवच का पाठ करना चाहिए। अब भाग्यवर्द्धन के लिए सीता कवच का पाठ करने के बाद सर्वदोत्तम श्रीराम कवच का पाठ करना चाहिए। प्रत्येक दिन इन छह कवचों का पाठ सर्ववांछित फल प्रदान करता

है। इन श्रेष्ठ छह कवचों को पढ़ना मोक्षसाधन का माध्यम है। इसे ज्ञात कर इनको सर्वदा पढ़ना चाहिए। अशक्त होने की स्थिति में हनुमान, लक्ष्मण, सीता व राम का कवच पढ़ना चाहिए। चार कवचों को पढ़ने का अवकाश न मिल सके तो हनुमान, सीता व श्रीराम के तीन कवच पढ़ने चाहिए। तीन कवच के पढ़ने का अवसर न मिल सके तो हनुमान व श्रीराम के दो कवच पढ़ने चाहिए। श्रीराम या किसी एक ही कवच को पढ़कर कर्त्तव्य की इति नहीं होती। अवकाश मिलते ही सदा छह कवचों का क्रमशः पाठ करना शुभ है। इसमें कभी आलस्य नहीं करना चाहिए। विशेष कारणवश किंचित भी अवकाश न मिल सके तो ऐसी स्थिति में ही यह व्यवस्था की गई है। यह सबके लिए या हर समय के लिए नहीं है।

श्री शंत्रुजय हनुमत स्तोत्रम्

ॐ हनुमन्तं महावीरं वायुतुल्यपराक्रंम्।
मम कार्यार्थमागच्छ प्रणमामिमुहुर्मुहुः॥

वायुतुल्य महावीर व पराक्रमी हनुमान को बराबर प्रणाम। प्रार्थना है कि आप मेरे कार्य हेतु जाएं।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीहनुमच्छत्रुञ्जययस्तोत्रमालामंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः। नाना छन्दांसि। श्रीमन्महावीरो हनुमान्देवता। मारुतात्मज ह्रंसौं इति बीजम्। अञ्जनीसूनुह्स्फें इति शक्तिः। ॐ हांहांहां इति कीलकम्। श्रीरामभक्तह्रां इति प्राणः। श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर ह्रां ह्रीं ह्रं इति जीवः। ममारातिपराजय-निमित्तशत्रुञ्जयस्तोत्रमालामंत्रजपे विनियोगः।

करन्यास

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फेंखफेंह्सौंहस्खफेंह्सौं नमो हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ इति बीजादौ सर्वत्र संयोज्य रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः॥

लक्ष्मण प्राणदात्रे मध्याभ्यां नमः॥ अञ्जनीसूनवे अनाभिकाभ्यां नमः॥ सीता शोकविनाशाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ लङ्काप्रासादभञ्जनाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

हृदयादिषडंगन्यास

ॐ हनुमते हृदयाय नमः॥ रामदूताय शिरसे स्वाहा॥ लक्ष्मणप्राणदात्रे शिखायै वषट्॥ अञ्जनीसूनवे कवचाय हुम्॥ सीताशोकविनाशिने नेत्रत्रयाय वौषट्॥ लङ्काप्रासादभञ्जनाय अस्त्राय फट्॥

ध्यान

ॐ ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखैः प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा। सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम्॥ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वारनयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि॥ वज्राङ्गपिङ्गकेशाढ्यं स्वर्ण कुण्डलमण्डितम्। नियुद्ध उपसङ्गात्रं पारावारपराक्रमम्॥ वामहस्तगदायुक्तं पाशहस्त कमण्डलुम्। उद्यछक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विञ्चितयेत्॥ इति ध्वात्वा अरेमल्लचटखेत्युच्चारणेऽथवातोडरमल्लचटखेत्युच्चारणे कपिमुद्रां प्रदर्शयेत्।

न्यास करके व ध्यान धरकर 'अरेमल्ल चटख' या 'तोडरमल्ल चटख' का उच्चारण करें और कपि मुद्रा का प्रदर्शन करें।

मालामंत्र

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रं स्फ्रें ख्फ्रेंहसौंहस्ख्फ्रेंहसौं नमोहनुमते त्रैलोक्याक्रमणपराक्रम श्रीरामभक्त मम परस्य च सर्वशत्रून चतुवर्णसम्भवान पुंस्त्रीनपुंसकान्नानासङ्करजातिजान् कलत्रपुत्रमित्रभृत्यबन्धुसु हत्समेतान् पशुशक्तिसहितान्धनधान्यादि-सम्पत्तियुतान्राज्ञोराजपुत्रसेवकान् मंत्री सचिवसखीन्आत्यन्तिकक्षणेन त्वरया एताद्दिनावधि नानोपायैर्मारयमारय शस्त्रैश्छेदयछेदय अग्निना ज्वालयज्वालय दाहयदाहय अक्षय कुमारवत्पादतलाक्रमणेनानेन शिलातलेनात्रोटयत्रोटय घातयघातय वधवध भूतसङ्घैः सहभक्षयभक्षय क्रुद्धसचेतसा नखैर्विदारयविदारय देशादस्मादुच्चाटयउच्चाटय पिशाचवत्भ्रंशयभ्रंशय भ्रामय भ्रामय भयातुरान् विसंज्ञान सद्यः कुरुकरु भस्मीभूतान् उद्धूलयउद्धूलय भक्तजनवत्सल सीताशोकापहारक सर्वत्रमामेनश्च रक्षरक्ष हांहांहांहंहुं घेघेघेहुफट्स्वाहा॥ ॐ नमोहनुमते महाबलपराक्रममाय महाविपत्तिनिवारकाय भक्तजनमनः कामनाकल्पद्रुमाय दुष्टजनमनोरथस्तम्भनाय प्रभञ्जनप्राणप्रियाय स्वाहा॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रैं ह्रौं ह्रः ममशत्रून् शूलेन च्छेदयछेदय अग्निना ज्वलाल यजवालय दाहयदाहय उच्चाटयउच्चाटय हुंफट् स्वाहास्वाहास्वाहा।

इस प्रकार मूलमंत्र का पाठ करने के बाद ध्यान धरते हुए यह स्तोत्र पढ़ें।

ॐ हनुमते नमः। श्रीमन्तं हनुमन्तमार्तरिपुभिर्भूभृत्तरुभ्राजितं चाल्यद्बालधिबन्धवैरिनिचयं चामीकराद्रिप्रभम्। अष्टौ रक्तपिशङ्गनेत्रनलिनं भ्रूभङ्गमङ्गस्फुरत्प्रोद्यच्चण्डमयूखमण्डलमुखंदुःखापहंदुःखिनाम्॥ कौपीनं कटिसूत्रमौंज्यजिनयुग्देहं विदेहात्मजा प्राणधीशपदारविन्दनिरत स्वानतं-कृतान्तं द्विषाम्। ध्यात्वैवं समराङ्गणस्थितमथानीय स्वहृत्पङ्कजे

सम्पूज्याखिलपूजनोक्तविधिना सम्प्रार्थये प्रार्थितम्। इति ध्यात्वा स्तोत्रं पठेत्। ॐ हनुमन्नञ्जनीसूनो महाबलपराक्रम। लोलल्लांगूलपातेन ममारातीन्निपातय॥ मर्कटाधिप मार्तण्डमण्डलग्रासकारक। लोलल्लां.॥ अक्षक्षपण पिङ्गाक्ष क्षितिजाशुक्षयङ्कर। लो.॥ रुद्रावतार संसारदुःखभारापहारक। लोल.॥ श्रीरामचरणां भोजमधुपायितमानस। लो.॥ वालिकारदक्लान्तसुग्रीवोन्मोचन प्रभो लोल.॥ सीताविरहवारीशमग्नसीतेशतारक। लोल.॥ रक्षोराजप्रतापाग्निदह्यमान जगद्वन। लो.॥ ग्रस्ताशेषजगत्स्वास्थ्य राक्षसाम्भोधिमन्दर। लो.॥ पुच्छगुच्छस्फुरद्धमानलदग्धारिपत्तन। लो.॥ जगन्मनोदुरुल्लंघ्यपारावार विलङ्घन। लो.॥ स्मृतमात्रसमस्तेष्ट पूरक प्रणतप्रिय। लो.॥ रात्रिश्चरचमूराशिकर्तनैकविकर्तन। लो.॥ जानकीजानकीजानिप्रेमपात्र परंतप। लो.॥ भीमादिक महावीरवीर-वेशावतारक। लो.॥ वैदेहीविरहक्लान्त रामरोषैकविग्रह। लो.॥ वज्राङ्गनखदंष्ट्रेश वज्रिवज्रावकुण्ठन। लो.॥ अखर्वगर्वगन्धपर्वतोद्भेदनस्वर। लो.॥ लक्ष्मणप्राणसन्त्राणत्रातास्तीक्ष्णकरान्वय। लो.॥ रामादिविप्रयोगार्तभरताद्यार्तिनाशन। लो.॥ द्रोणाचलसमुत्क्षेप-समुत्क्षिप्तारिवैभव। लो.॥ सीताशीर्वादसम्पन्नसमस्तावयवाक्षत। लोलल्लांगूलपातेन ममारातीन्निपातय॥ इत्येवमश्वत्थतलोपविष्टः शत्रुञ्जयं नाम पठेत्स्वयं यः। स शीघ्रमेवास्तसमस्तशत्रुः प्रमोदते मारुतजप्रसादात्॥

इस शत्रुंजय स्तोत्र को पीपल के नीचे स्वयं पढ़ने वाला अविलंब सर्व शत्रुओं का संहार करता है और मरूतजप के प्रसाद से प्रमुदित रहता है।

नक्श-ए-सुलेमानी

मुस्लिम तंत्र की अति प्रसिद्ध पुस्तक नक्श-ए-सुलेमानी में आतिशी नक्श, आबी नक्श, यंत्र-तंत्र ताबीज, ताबीज बनाने की विधि, अल्लाह के नामों का चमत्कार। गृह क्लेश निवारण, कैद से रिहाई, बाधाएं दूर करने के तंत्र आदि हजारों नक्श दिये गये हैं जिनका प्रयोग करके आप सुखी सम्पन्न एवम् चिन्ता मुक्त हो सकते हैं।

आज ही यह पुस्तक मंगाकर लाभ उठायें। पुस्तक का मूल्य 50 रुपये। बिना एडवांस पुस्तक नहीं भेजी जाएगी। असल की पहचान **महामाया पब्लिकेशन्ज़** और **अमित पाकेट बुक्स** देख कर ले।

अमित पुस्तक भंडार, नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।

श्री हनुमान स्तुति

नमो हनुमते तुभ्यं नमो मारुत सूनवे,
नमः श्रीराम भक्ताय श्यामसांगाय ते नमः।
नमो वानर-वीराय, सुग्रीव-सख्यकारिणे,
सीता शोक विनाशाय-राम मुद्राधराय च॥
रावणान्त कुलच्छेद कारिणे ते नमो नमः,
मेघनाद मखध्वंस कारिणे ते नमो नमः।
वायुपुत्राय वीराय आकाशोदर गामिने,
नरपाल-शिरच्छेद लंका प्रासाद भञ्जिने॥
ज्वलत्कनक वर्णाय दीर्घलांगूल धारिणे,
सौमित्रजयदात्रे च रामदूताय ते नमः।
अक्षय्यवधकर्त्रे च ब्रह्मपाश निवारिणे,
लक्ष्मणांघ्रि महाशक्ति घातक्षत विनाशिने॥
रक्षोध्नाय रिपुध्नाय भूतध्नाय च ते नमः,
ऋक्ष वानर वीरैकप्राणदाय नमो नमः॥
पर सैन्य बलघ्नाय शत्राऽस्त्रघ्नाय ते नमः,
विषघ्नाय द्विषघ्नाय ज्वरघ्नाय च ते नमः।
महाभयरिपुघ्याय भक्त प्राणैक कारिणे,
पर प्रेरितमन्त्राणां, यन्त्राणां स्तम्भकारिणे॥
पयः पाषाणतरण करनाय नमो नमः,
बालार्क मण्डल त्रासकारिणे भवतारिणे।
रिपुमाया विनाशय रामाज्ञा लोक रक्षिणे,
प्रतिग्राम स्थितायाऽथ, रक्षोभूतवधीर्थने।
करान्तशैलशस्त्राय, दुमशस्त्राय ते नमः,
बालैक ब्रह्मचर्याय रुद्रमूर्तिधराय च।
दक्षिणाशाभास्कराय शतचन्द्रोदयात्मने,
कृतक्षत व्यथाध्नाय सर्व क्लेशहराय च।
स्वामिआज्ञाप्रार्थसंग्रामसंख्येसंजयकारिणे,
भक्तानां दिव्यवादेषुसंग्रामे जयदायिने॥
किं कृत्वाबुबुकोच्चारघोरशब्दकराय च,
रावोग्रव्याधि संस्तम्भकारिणे वनधारिणे।
सदा वन फलाहार-निरताय विचक्षतः,
महार्णव शिलाबन्धे सेतु बन्धाय ते नमः॥
नमस्ते नमस्ते महावायु सूनो। नमस्ते नमस्ते भविष्यद् विधातः।
नमस्ते नमस्ते सदाभीष्टदातर्। नमस्ते नमस्तेऽनिशं रामभक्त॥

श्री हनुमान पंचक

इस हनुमान पञ्चक के रचयिता महाकवि श्री चतुरसिंह जी थे। श्री चतुरसिंह जी राजस्थानी, संस्कृत, हिन्दी आदि अनेक भाषाओं के मर्मज्ञ विद्वान थे। मेवाड़ी बोली के तो वे महाकवि थे। मेवाड़ में मीरा के पश्चात् श्री चतुरसिंह ही इतने लोकप्रिय कवि हुए थे। आज भी मेवाड़ी में रचित इनकी रचनाओं का मेवाड़ के घर-घर में प्रचार है।

दोहा

सञ्चक सुख कञ्चक कवच पञ्चक पूरन बान।
रञ्चक रञ्चक कष्ट ना हनुमत पञ्चक जान॥

मत्तगयन्द छन्द

ग्राहि नसाहि पठाहि दई, दिवदेवमहाहि सराहि सिधारी।
वीर समीरन श्री रघुवीरन, धीरहिं पीर गम्भीर विदारी॥
कन्द अनन्द सुअञ्जनिनन्द, सदा खलवृन्दन मन्दजहारी।
भूधर को घर के कर ऊपर निर्जन केजुद की जर जारी॥1॥
बालि सहोदर पालि लयो हरि कालि पतालिहु डालि दई है।
भालि मरालिसि सीय करालि बिडालि निशालि बिहालि भई है॥
डालि डरालि महालिय राय गजालिन चालि चपेट लई है।
ख्यालिहिं शालि दई गन्ध कालि कपाल उत्तालि बहालि गयी है॥2॥
आसुविभावसु पासु गये अरु तांसु सुहासु गरासु धर्‌यो है।
अच्छ सुबच्छन तच्छन तोरि स रच्छन पच्छन पच्छ कर्‌यो॥
आर अपार कु कार पछार समीर कुमार समार भर्‌यो है।
को हनुमान् समान जहान बखानत आज अमान भर्‌यो है॥3॥
अञ्जनि को सुत भञ्जन भीरन सञ्जन रञ्जन पञ्ज रहा है।
रुद्र समुद्रहि छुद्र कियो पुनि क्रुद्ध रसाधर ऊर्द्ध लहा है॥
मोहिन ओप कहो पतऊ तुब जोप दया करु तोप कहा है।
गथ्थ अकथ्थ बनत्त कहा हनुमत्त तु हथ्थ समथ्थ सहा है॥4॥
भान प्रभानन कै अनुमान गये असमान बिहान निहारी।
खान लगे मधवानहु को सुकियो अपमान गुमानहिं गारी॥
प्राण परान लगे लच्छमानतु आनन गानपती गिरधारी।
बान निवाय सुजान महानसु है हनुमान् करान हमारी॥5॥

दोहा

बसुदिशि औं पौराण दृग इक इक आधे आन।
सित नवमी इष इन्दु दिन पञ्चक जन्म जहान॥

दसाक्षरी वीर साधन हनुमान मंत्र प्रयोग

हनुमतोऽतिगुह्यं तु लिख्यते वीरसाधनम्।
स्वबीजं पूर्वमुच्चार्य पवनं च ततो वदेत्॥
नन्दनं च ततो देयं ङेऽवसानेऽनलप्रिया।
दशार्णोऽयं मनुः प्रोक्तो नराणां सुरपादपः॥

अब हनुमान का अति गोपनीय वीरसाधन मंत्र लिखा जा रहा है। प्रथमतः स्व बीज 'हुं', फिर 'पवन', इसके बाद 'नंदन' में चतुर्थी विभिक्ति लगाकर अनलप्रिय 'स्वाहा' का उच्चारण किया जाता है। दस अक्षरीय यह मंत्र मनुष्यों के लिए कल्पवृक्ष है। मंत्र और इसका विधान इस प्रकार है : **हं पवन नंदनाय स्वाहा।**

ब्राह्मेमुहूर्ते चोत्थाय कृतनित्यक्रियो द्विजः।
गत्वा नदीं ततः स्नात्वा तीर्थमावाह्य चाम्भसि।
मूलमंत्रं ततो जप्त्वा सिञ्चेदादित्यसंख्यया॥
ततो वाससी परिधार गङ्गातीरे पर्वते वा
उपविश्य। ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः॥
ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः॥
इत्यादिना करन्यांस हृदयादिषडङ्गन्यासं च
कृत्वा प्राणयामं कुर्यात्।
तथा च।
अकारादिवर्णानुच्चार्यवामनासापुटेन वायुंपूरयेत्।
पञ्चवर्गानुच्चार्य वायु कुम्भयेत्।
यकारादिवर्णानुच्चार्यदक्षिणनासापुटेनवायुरेचयेत्।
एवं वारत्रयंकृत्वामंत्रवर्णैरङ्गन्यासंकृत्वाध्यायेत्।

ब्रह्ममुहूर्त में उठकर नित्य क्रियाओं से निवृत्त होने के पश्चात नदी किनारे स्नान करना चाहिए। अब तीर्थों का आवाहन करते हुए आठ बार मूलमंत्र का जप कर उस जल से उतनी बार मस्तिष्क का सिंचन करना चाहिए। तदंतर वस्त्र धारण करके गंगा किनारे अथवा पर्वत पर बैठकर 'हां अंगुष्ठाभ्यां नमः' व 'ह्रां तर्जनीभ्यां नमः' आदि विधि से करन्यास और हृदयादि षडंगन्यास करने चाहिए, फिर अकारादि सोलह वर्षों को उच्चारते और बाएं नासापुट से वायु को पूर्ण करते हुए प्राणायाम करना चाहिए। अब ककारादि से मकर तक पच्चीस अक्षरों को उच्चारते और दोनों नासपुटों को अवरुद्ध करते हुए दाएं नासापुट से वायु को रेचन करना चाहिए। इस विधि से तीन बार प्राणायाम करने के बाद मंत्र के वर्णों से अंगन्यास करते हुए ध्यान धरना चाहिए।

ध्यान

ध्यायेद्रणे हनुमन्तं कपिकोटिसमन्वितम्। धावन्तं रावणं जेतु दृष्ट्वा सत्वरमुत्थितम्। लक्ष्मणं च महावीरं पतितं रणभूतले। गुरुं च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरुपर्वतम्। हाहाकारैः सदर्पैश्च क पयन्तं जगन्त्रयम्। ब्रह्माण्डं स समावाप्य कृत्वा भीमं कलेवरम्॥ इति ध्यात्वा षट्सहस्त्रं जपेत्। सप्तमदिवसं प्राप्य तदा दिवा रात्रिं व्याप्य जपेत्। ततो महाभयं दत्त्वा त्रिभागशेषासु निशासु नियतमागच्छति। साधको यदि मायां तरति तदेप्सितं वर प्राप्नोति। विद्यां वापि धने वापि राज्यं वा शत्रुनिग्रहम्। तत्क्षणादेव चाप्नोति सत्यं सत्यं सुनिश्चितम्।

इन मंत्रों से ध्यान करने के पश्चात् मूलमंत्र का छह हजार बार जप करना चाहिए। छह दिन जप करने के पश्चात् सातवें दिन को रात-दिन जप करना चाहिए। तब हनुमान रात के चौथे पहर महाभय दिखाते हुए प्रगट होते हैं। यदि साधक माया से मुक्त होने में सफल होता है तो इच्छित वर प्राप्त करता है।

श्री संकटमोचन अष्टक

बाल समय रवि भक्ष लियो तब तीनोहुँ लोक भयो अंधियारो।
ताहि सो त्रास भयो जग को यह संकट काहु सो जात न टारो॥
देवन आनि करी विनती तब छाँडि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥1॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महामुनि साप दियो तब चाहिय कौन विचार विचारो॥
के द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के शोक निवारो।
को नहिं ..... तिहारो॥2॥

अंगद के संग लेन गये सिय खोज कपीस यह वैन उचारो।
जीवत न बचिहौ हमसों जु बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया सुधि प्रान उबारो।
को नहिं ..... तिहारो॥3॥

रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं ..... तिहारो॥4॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत तवै गिरि द्रोन सु वीर उपारो॥
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहिं ..... तिहारो॥5॥

रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं ..... तिहारो॥6॥

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देविहिं पूजि भली विधि सों बलि देउ सबै मिलिमंत्र विचारो॥
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत संहारो।
को नहिं ..... तिहारो॥7॥
काज किये बड़ देवन के तुम वीर महाप्रभु देखि विचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसो नहीं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं ..... तिहारो॥8॥

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय-जय-जय कपि सूर॥

नवग्रह उपासना

ब्रह्माण्ड में विचारण कर रहे ग्रहों में नव ग्रह प्रमुख है और इन्हीं की चाल (गति) पर मानव जीवन निर्भर है। जब ये ग्रह वक्री (कुदृष्टि) होते हैं तो मानव जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है। यदि ग्रह आपके जीवन पर दुष्प्रभाव डाल रहे हैं तो आप निश्चित रूप से परेशान रहेंगे। इन नव ग्रहों को अनुकूल बनाने के लिए इस पुस्तक में वैदिक, तांत्रिक एवम् ज्योतिषीय विधियाँ दी गयी हैं जिन्हें उपयोग में लाकर आप अपना जीवन सुखमय बना सकते हैं।

आज ही यह पुस्तक मंगाकर लाभ उठायें। पुस्तक का मूल्य 50 रुपये। बिना एडवांस पुस्तक नहीं भेजी जाएगी। असल की पहचान **महामाया पब्लिकेशन्ज़** और **अमित पाकेट बुक्स** देख कर ले।

अमित पुस्तक भंडार, नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।

ऋण मोचन मंगल स्तोत्र

मङ्गलो भूमिपुत्रश्य ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः ॥१॥
लोहितो लोहिताङ्गश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥२॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टे कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रद ॥३॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥४॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति-समप्रभम।
कुम्मंर शक्तिहरतं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम ॥५॥
स्तौत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित् ॥६॥
अङ्गारक! महाभान! भगवन्! भक्तवत्सल!
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ॥७॥
ऋणरोगादि-दारिद्रयं ये चाऽन्ये ह्यपमृत्यवः।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥८॥
अतिवक्र! दुराराध्य! भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥९॥
विरिञ्च-शक्र-विष्णूनां मनुष्याणां तुक्रा कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः ॥१०॥
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गताः।
ऋणदारिद्रयदुः खेन शणूणां च भयात्ततः ॥११॥
एभिर्द्वादशभिः श्लौकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ॥१२॥

श्रीराम प्रोक्त हनुमत् कवचम्

विनियोग

ॐ अस्य श्रीहनुमत्कवचस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्री हनुमान्देवता। मारुतात्मजति बीजम्। अञ्जनीसूनुरिति शक्तिः। आत्मनः इति कीलकम्। सकलकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ श्रीरामचन्द्रऋषये नमः शिरसि॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे॥ श्रीहनुमद्देवतायै नमः हृदि॥ मारुतात्मजेति बीजाय नमः गुह्ये॥ अञ्जनीसूनुरिति शक्तये नमः पादयोः॥ आत्मनः इति कीलकाय नमः नाभौ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥

करन्यास

ॐ हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ पवनात्मजाय तर्जनीभ्यां नमः॥ अक्षपद्माय मध्यमाभ्यां नमः॥ विष्णुभक्ताय अनामिकाभ्यां नमः॥ लङ्काविदाहकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ श्रीरामकिङ्कराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

हृदयादिषडंगन्यास

ॐ हनुमते हृदयाय नमः॥ पवनात्मजाज शिरसे स्वाहा॥ अक्षपद्माय शिखायै वषट्। विष्णुभक्ताय कवचाय हुम्॥ लङ्काविदाहकाय नेत्रत्रयाय वौषट्। श्रीरामकिङ्कराय अस्त्राय फट्॥

ध्यान

ध्यायेद्बालविदारकद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखैः प्रशंसियशसं देदीप्यमानं रुचा॥ सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्य क्ततत्त्वप्रियं संरक्तावरुणलोचनं पवनजं पीताम्बरलंकृतम्॥ वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम्। नियुद्धमुपसंक्रम्य पारावारपराक्रमम्। वामहस्ते गदायुक्तं पाशहस्तं कमण्डलुम्। ऊर्ध्वदक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत्॥ स्फटिकाभं स्वर्ण कान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिं। कुण्डलद्वयसंशोभि-मुखाम्बुजहरिं भजेत्॥ हनुमान्पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः। पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः पातु सागरपारगः॥ उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरिप्रियनन्दनः। अधस्ताद्विष्णुभक्तश्च पातुमध्ये च पावनिः॥ अवान्तरदिशः पातु सीताशोकविनाशनः। लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्॥ सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः। भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्॥ नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः। कपोलौ कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः॥ नासाग्रमञ्चसीसूनुः पातु वक्त्रं कपीश्वरः पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुराचितः॥ भुजौ पातु महातेजाः करौ तु चरणायुधः। नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ

पातु कपीश्वरः ॥ वक्षो मुद्रापहारी च पार्श्वे पातु भुजायुधः । लङ्का विभञ्जकः पातु पृष्ठे देशे निरन्तरम् ॥ नाभिं च रामदूतश्च कटिं पात्वनिलात्मजः । गुह्यं पातु कपीशस्तु गुल्फौ पातु महाबलः ॥ अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः । अङ्गान्यमितसत्त्वाढ्यः पातु पांगुली सदा ॥ सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् । हनुमत्वकचं यस्तु पठेद्विद्वान्विचक्षणः ॥ स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विदन्ति । त्रिकालमेककालं वा पठेन्मास्त्र्यं पुनः ॥ सर्वारिष्टं क्षणो जित्वा स पुमाञ्श्रियमाप्नुयात् । अर्धरात्रे जले स्थित्वासप्तवारं पठैद्यदि ॥ क्षयापस्मारकुष्ठादितापज्वरनिवारणम् । अश्वत्थदमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान् ॥ स एव जयमाप्नोति संग्रामेष्वभयं तथा । यः करे धारयेन्नितयं सर्वान्कामान्वाप्नुयात् ॥ लिखित्वा पूजयेद्यस्तु तस्य ग्रहभयं हरेत् । कारागृहे प्रयाणे च संग्रामे देशविप्लवे ॥ यः पठेद्धनुमत्कवचं तस्य नास्ति भयं तथा ॥ यो वाराम्निधिमल्पपल्वलमिवोल्लंघय प्रतापान्वितो वैदेहीघनतापशोकहरणो बैकुण्ठ-भक्तप्रियः । अक्षाद्यर्जितराक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे सोऽयं वानर-पुङ्गवोऽवतु सदा चास्मान्समीरात्मजः ॥

इस हनुमत्कवच को जो कोई व्यक्ति पढ़ता है, उसे मुक्ति मिलनी निश्चित है। इसे तीन माह तक तीन या एक समय पढ़ने वाला क्षण में ही अरिष्टों को जीतता है और लक्ष्मी की प्राप्ति करता है। आधी रात को जल में खड़ा होकर इसे सात बार पढ़ने वाला क्षय, अपस्मार व कुण्ठादि तापज्वरों से मुक्त होता है। रविवार को पीपल के नीचे इस कवच को पढ़ने वाला संग्राम में भयमुक्त होकर विजयी होता है। इसे नित्य हाथ में धारण करने वाले के समस्त मनोरथ सिद्ध होते हैं।

श्री एकादशमुख हनुमद् कवचम्

लोपामुद्रोवाच

कुम्भोद्भव दयासिन्धो श्रुतं हनुमतः परम्।
यन्त्रमंत्रादिकं सर्वं त्वन्मुखोदीरितं मया॥
दयां कुरुमयि प्राणनाथ वेदितुमुत्सहे।
कवचं वायुपुत्रस्य एकादशमुखात्मनः॥
इत्येवं वचनं श्रुत्वा प्रियायाः प्रश्रयान्वितम्।
वक्तुं प्रचक्रमे तत्र लोपामुद्रापितः प्रभुः॥

हे कुंभोद्भव, हे देवसिंधो, मैंने तुम्हारे मुंह से बोले गए हनुमान के सभी परम यंत्र-मंत्रादि सुने। हे प्राणनाथ, दया करके मुझे वायुपुत्र के एकादशमुख कवच के बारे में बताएं। प्रिया के ऐसे विनीत वचन सुनकर लोपामुद्रा से प्रभु (अगस्त्य) बोले .....

अगस्त्योवाच

नमस्कृत्वा रामदूतं हनुमन्तं महामतिम्।
ब्रह्मप्रोक्तं तु कवचं शृणु सुन्दरि सादरम्॥
सनन्दनाय सुमहच्चतुराननभाषितम्।
कवचं कामदं दिव्यं सर्वराक्षोनिर्बहणम्॥
सर्वसम्पत्प्रदं पुण्यं मर्त्यानां मधुरस्वरे॥

हे सुंदरि, रामदूत महामति हनुमान को नमस्कार करके ब्रह्मप्रोक्त कवच के बारे में आदरपूर्वक सुनो। प्रिये, चतुरानन ब्रह्मा ने सर्वकामनाओं को पूरा करने वाले, सर्वराक्षसों का निवारण करने वाले और सर्वसंपत्तियों को प्रदान करने वाले इस पुण्य कवच के बारे में सनंदनादि से मधुर वाणियों में बताया है।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीमदेकादशमुखहनुमत्कवचस्य सनन्दन ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। प्रसन्नात्मा हनुमान्देवता। वायुपुत्रेति बीजम्। मुख्यः प्राण इति शक्तिः सर्वकामनार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ स्फ्रें बीजं शक्तिधृक् पातु शिरो में पवनात्मजः। क्रौं बीजात्मा नयनयोः पातु मां वानरेश्वरः॥ क्षं बीजरूपी कर्णौ में सीताशोकविनाशनः। ग्लौं बीजावाच्यो नासां मे लक्ष्मणप्राणदायकः॥ वं बीजार्थश्च कण्ठं में पातु चाक्षय्यकारकः। ऐं बीजवाच्योहृदयं पातु में कपिनायकः॥ वंबीजकीर्तितः पातु बाहू में चाञ्जनीसुतः ह्रां बीजो राक्षसेन्द्रस्य दर्पहापातु चोदरम्॥ ह्रसौं बीजमयो मध्यं पातु लङ्काविदाहकः। ह्रीं बीजधरो मां पातु गुह्यं देवेन्द्रवन्दितः॥

रं बीजात्मा सदा पातु चोरुवारिधिलङ्घनः। सुग्रीवसचिवः पातु जानुनी मे मनोजवः॥ पादौ पादतले पातु द्रोणाचलधरो हरिः। आपदमस्तकंपातु रामदूतो महाबलः। पूर्वे वानरवक्त्रो मामग्नेयां क्षत्रियान्कृत्। दक्षिणे नारसिंहस्तु नैर्ऋत्यां गणनायकः॥ वारुण्यां दिशि मामव्यात्खगवक्त्रो हरीश्वरः। वायव्यां भैरवमुखः कौबेर्यां पातु मां सदा॥ क्रोडास्यः पातु मां नित्यमी शान्यां रुद्ररूपधृक्। ऊर्ध्वं हयाननः पातु त्वध; शेषमुखस्तथा। रामास्यः पातु सर्वत्र सौम्यरूपी महाभुजः। इत्येवं रामदूतस्य कवचं प्रपठेत्सदा॥ एकादशमुखस्यैतद् गोप्यंवैकीर्तितं मया। राक्षोघ्नं कामदं सौम्यं सर्वसम्पद्विधायकम्॥ पुत्रदं धनंद चोग्रशत्रुसंघविमर्दनम्। स्वर्गापदर्गदं दिव्यं चिन्तितार्थप्रदं शुभम्॥ एतत्कवचमज्ञात्वा मंत्रसिद्धिर्न जायते। चत्वारिंशत्सहस्त्राणि पठेच्छुद्धात्मना नरः॥ एकवारं पठेन्नित्यं कवचं सिद्धिदं पुमान्। द्विवारं वा त्रिवारं वा पठन्नायुष्यमाप्नुयात्॥ क्रमादेकादशादेवमावर्तनजपात्सुधीः। वर्षान्ते दर्शनं साक्षाल्लभते नात्र संशयः यंयं चिन्तयते चार्थं तंतं प्राप्नोति पुरुषः। ब्रह्मोदीरितमेतद्धि तवाग्रे कथितं महत्॥

इन मंत्रों से रामदूत के कवच का सदा पाठ करना चाहिए। मैंने इस गोपनीय एकादशमुख कवच के बारे में तुम्हें बता दिया। यह राक्षसों का नाशक, फलदायक, सौम्य और सर्वसंपत्तिदायक है। यह पुत्र और धन देता है और उग्र शत्रुओं का दमन करता है। इससे स्वर्ग व मोक्ष की सिद्धि होती है। यह दिव्य और शुभ कवच समस्त इच्छित कामनाएं पूरी करता है। इस कवच के ज्ञान बिना मंत्र सिद्धि संभव नहीं। प्रत्येक नर को शुद्धात्म होकर इस कवच को चालीस हजार बार पढ़ना चाहिए। नित्य एक बार पढ़ने से यह समस्त सिद्धियां पूरी करता है।

श्री पंचमुखी वीर हनुमत्वकवचम्

विनियोग

ॐ अस्य श्री पंचमुखी हनुमत्कवच स्तोत्र मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः श्री हनुमत्परमात्मा देवता पंचमुखी हनुमानितिबीजं मं वायु पुत्रोयेति शक्तिः अंजनी सूनुरिति कीलकं श्रीपंच मुखि-वीर हनुमत्प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि
गायत्री हनुमत्परमात्मा देवतायै नमः हृदये
पंचमुखि - हनुमद् बीजायनमः गृह्ये
मं वायुपुत्रायेति शक्तये नमः पादयोः
अंजनी सूनुरिति कीलकाय नमो नाभौ
श्री पंचमुखिवीर हनुमत्प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे कर हृदयादि न्यास-

ॐ रां अंजनी सुताय (अंगु. हृदयाय.)
ॐ रीं रुद्र मूर्त्तये (तर्जनी. शिरसे.)
ॐ सं वायु पुत्राय (मध्यमा. शिखायै.)
ॐ रैं अग्नि गर्भाय (अना. कवचाय.)
ॐ रौं राम दूताय (कनि. नेत्र-त्रयाय)
ॐ रः ब्रह्मास्य निवारणाय (करतल. अस्याम फट्)

इसके पश्चात् कवच जप का विनियोग करें-

पंच वक्त्रहनुमते श्रीरामचन्द्र दूताय अंजनी पुत्राय वायु सुताय महाबलाय सीताशोक दुख निवारणाय लंका दहन-लोकोपद्रव हननाय महाबल प्रचण्डाय फाल्गुन सखाय-कोलाहल प्रशम-सकल ब्रह्माण्ड विश्व रूपाय सप्त समुद्रनिरालम्बलंघनाय पिंगलनयनाय अमित विक्रमायभीम विक्रमाय सूर्य बिम्ब फल सेविताय दंष्ट्रि निरालं कृताय संजीवनी सालंकृताय दशग्रीव मर्दनाय श्रीरामचंद्र पादुकाय प्रथम ब्रह्माण्ड नायकाय लक्ष्मण प्राण दात्रे रक्षकाय अंगद-लक्ष्मणाय महाकपि सैन्य प्राण निर्वाहकाय दश कन्धरविध्वंसनाय रामेष्ट महाफाल्गुनाय सीता समेत रामचन्द्र वर प्रसादकाय षट् प्रयोग साधकाय मम पंचमुखीहनुमत्कवच जपे विनियोगः।

इसके पश्चात पंचमुख हनुमान का ध्यान है। जिसमें उनके 1. कपि वक्त्र 2. नरसिंह वक्त्र 3. गरुड़ वक्त्र 4. वराह वक्त्र एवं 5. शिरस्थ वक्त्र का वर्णन और भुजा आयुध आदि के भिन्न-भिन्न ध्यानों का फल भी निर्दिष्ट है यथा-

ॐ पंचवक्त्रं महाभीमं त्रिपेयनयनैर्युतम्।
सूर्यकोटि-कराभासं कपि वक्त्रं सुतेजसम्॥१॥
बाहु निर्देशभिर्युक्तं सर्व कामार्थं सिद्धियम्।
पूर्व तु वानरं वक्त्रं कोटि सूर्य समप्रभम्॥२॥
दंष्ट्रा कराल वदनं भृकुटि कुटिलेक्षणम्।
आसीनं दक्षिणे वक्त्रे नारसिंह महाद्भुतमम्॥३॥
अत्युग्रतेजो ज्वलितं भीषणं भयनाशनम्।
पश्चिमे गारुड़ं वक्त्रं वज्र तुल्यं महाबलम्॥४॥
सर्व नाग प्रशमनं विषयोग-निवारणम्।
उत्तरे सूकरं वक्त्रं पाताल-सिद्धि दं नृणाम्॥५॥
ऊर्ध्व ध्याननं घोरं दान्वतान्त करं परम्।
येन वक्त्येत्र विपेन्द्र! सर्वा विद्या विनिर्युयः॥६॥
एतत्पंचमुखं तस्य ध्यायताम भंयकरम।
खड्गं त्रिशूलं खट्वांग पाशंग कुश पर्वताः॥७॥
भिन्दि पालं च मुद्राश्च ज्ञानमुद्रा प्रकीर्तिता।
दोर्मुष्टिविगता मुर्ध्नि आयुधैर्दशभिर्भुजैः॥८॥
एतान्यायुध जालानि धरयन्तं भजाम्यहम्।
प्रेतासनोपविष्टं च सर्वाभरण-भूषितम्॥९॥
दिव्य माल्याम्बर धरं दिव्य गान्धानु लेपनम्।
सर्वाश्चर्मयमयं देवं हनुमद् विश्वतो मुखम्॥१०॥
पंचचास्य मच्युतमनेक विचित्र वर्ण,
चक्रं सुसंगख विद्युतं कीपराजवर्यम्।
पीताम्बराहिमुकुटै रूप शोभितांग,
पिडांक्ष माद्यमनिशं मनसा स्मरामि॥११॥
पंचचास्य मच्युतमनेक विचित्र वर्ण,
श्रीशंख चक्र रमणीय भुजांगदेशम्।
पीताम्बरं मुकुट कुण्डल नुपुरांग,
मुद्योतितं कपिवंर ह्यदि भावयामि॥१२॥
चन्द्राभं चरणारविन्द युगलं कौपी नमोच्जीधरं,
नाभ्यां वै कटिसूत्र युक्त वसनं यज्ञोपवीतं शुभम्।
हस्ताभ्याम वलम्बय चांचलि पुटे हारावलीं कुण्डलं,
विभ्रद् दीर्घ शिखां प्रसन्न वदनं वन्देऽञजना नन्दनम्॥१३॥

श्री हनुमान-स्तवन

नमो अंजनी नंदन वायुपूतम्।
सदा मंगलागार श्रीरामदूतम्।
महावीर वीरेश त्रिकाल वेसम्।
घनानंद निर्द्वन्द्व हर्ता क्लेशम्॥1॥
किये काज सुग्रीव के आप सारे,
मिला रामको शोक सन्देह टारे।
गये लांघि वारीश शंका न खाई,
हता पुत्र लंकेश लंका जराई॥2॥
चले जानकी मातु को शीश नाया,
मिले वानरों से हिये हरष छाया।
सिया का संदेश प्रभु को सुनाया।
हिये हरषि श्रीराम ने कंठ लगाया॥3॥
संजीवन जड़ी लाये नागेश काजे,
गई मूर्च्छा राम भ्राता निवाजे।
कहे दीन मेरे हरो दुःख स्वामी,
नमो वायुपुत्रम्, नमामि नमामि॥4॥

सुख-शांति-ऐश्वर्य-समृद्धि के लिये करें नित्य पाठ

सुन्दर काण्ड

पं रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, कुण्डा.

रामचरितमानस पर करोड़ों लोगों की आस्था सर्वादित है। मानस की एक-एक चौपाई मंत्र का रूप धारण कर चुकी है। प्रायः आपने अखण्ड रामचरितमानस का पाठ होते देखा होगा। मानस के अखण्ड पाठ का लाभ लाखों-करोड़ों व्यक्ति उठा चुके हैं और उठाते रहेंगे। व्यक्ति अपनी कामना के अनुसार मानस की एक चौपाई को सम्पुट के रूप में चुन लेता है फिर गौरी-गणेश, कलश आदि की पूजा करके राम पंचायतन् चित्र को सामने रखकर राम-सीता की पूजा करता है। इसके बाद रामचरितमानस की एक प्रति की पूजा की जाती है। अन्य प्रतियों की भी पूजा की जा सकती है। पूजन समाप्त करके व्यक्ति अपनी मनोकामना के अनुसार जिस चौपाई को चुतना है उसका सम्पुट लगाकर मानस का पाठ करता है। सम्पुट प्रत्येक दोहे के पहले और बाद मेंल गाया जाता है। इस प्रकार 24 घण्टों में मानसका संपूर्ण जाप पूर्ण किया जाता है। इस पुण्य कार्य के लिए व्यक्ति जपने बन्धु-बान्धवों का सहयोग भीले सकता है। विश्वास तथा श्रद्धा से किया गया मानस का एक पाठ ही व्यक्ति का अभीष्ट सिद्ध करता है।

मानस में सुन्दर काण्ड का अपना अलग महत्व है। सुन्दर काण्ड किसी स्तोत्र से कम महत्व नहीं रखता। इस काण्ड के पाठ का महत्व सर्वविदित है। एक बार पाठ करने में व्यक्ति को एक घण्टे का समय गता है। यदि मनोवांछित कार्य के लिए किसी विशेष चौपाई का सम्पुट लगाकर पाठ किया जाये तो सवा घण्टा या डेढ़ घण्टा लग सकता है। मेरी जानकारी में सैकड़ों लोग ऐसे हैं जो नित्य सुन्दर काण्ड का पाठ करते हैं। ऐसे तमाम लोगों का विश्वास है कि उनके जीवन की सफलता, उनके कार्यों की सिद्धि तथा समस्त संकटों से मुक्ति सुन्दर काण्ड के पाठ से ही हुई है।

मेरा विश्वास है कि सुन्दर काण्ड का पाठ करने वाला व्यक्ति अपने मनोवांछित उद्देश्य की प्राप्ति कर लेता है। विषम परिस्थितियों में, संकट में, धन-प्राप्ति के लिए सुख-सौभाग्य के लिए, रोगी को ठीक करने के लिए, संतान प्राप्त करने के लिए तथा तमाम भौतिक सुखों को प्राप्त करने के लिए आप सुन्दर काण्ड का पाठ कर सकते हैं।

किसी राम या हनुमान मन्दिर में पाठ करने की व्यवस्था हो सके तो आपको शीघ्र सफलता प्राप्त होगी। वैसे आप घर पर भी कर सकते हैं। जो लोग नित्य पाठ करने में असमर्थ हों उन्हें चाहिए कि वे मंगलवार या शनिवार के दिन प्रातः या सायं सम्पुटित पाठ की योजना बनाइयें। आप चाहें तो परिवार के कई लोग एक साथ बैठकर सस्वर पाठ कर सकते हैं।

सुन्दर काण्ड की प्रकाशित प्रतियाँ सरलता से आपको प्राप्त हो जायेंगी। इस पत्रिका में सम्पूर्ण सुन्दर काण्ड प्रकाशित करना पृष्ठ भरना मात्र होगा। आप रामचरितमानस से या सुन्दरकाण्ड की पत्रिका से पाठ करें यही सुविधाजनक होगा।

तीर्थराज प्रयाग के संगम तट पर बड़े हनुमान जी का जो मन्दिर है उस मन्दिर के आस-पास सुन्दर काण्ड का पाठ करते हुए न जाने कितने लोग मिलेंगे। कभी अवसर मिले तो आप उनसे सुन्दर काण्ड के पाठ का महत्व एवं पाठोपरान्त मिली सफलता के अनगिनत दृष्टांत प्राप्त कर सकते हैं।

प्रयाग में ही नहीं प्रत्येक शहर में, प्रत्येक मन्दिर में न सही तो भी राम मन्दिर या हनुमान मन्दिर में सुन्दर काण्ड का पाठ करने वाले साधक अवश्य मिलेंगे। पूछने पर वे अलौकिक, आश्चर्यजनक एवं अविश्वसनीय कहानियाँ सुनायेंगे।

एक बार चित्रकूट जाने पर हनुमान धारा के पास एक व्यक्ति पर मेरी दृष्टि पड़ी। वह एक शिला पर बैठा सुन्दर काण्ड का पाठ कर रहा था और रोये जा रहा था। उसकी आँखों से टपकते हुए आँसू और आर्त कंठ से निकला हुआ स्वर ही मुझे उसकी ओर आकर्षित कर सका था। मैंने उसके पास ही बैठे दूसरे व्यक्ति से पूछा तो उसने बताया कि वह एक गरीब ब्राह्मण है। उसका इकलौता बेटा मरण शैय्या पर पड़ा है। उसके पास जो कुछ धन था उसे वह अपने पुत्र की चिकित्सा में लगा चुका है। अब इन्हीं हनुमानजी की शरण में आकर सुन्दर काण्ड का पाठ कर रहा है। उस व्यक्ति ने पाठ करने वाले व्यक्ति के बारे में बताया कि उसे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि उसकी प्रार्थना अवश्य सुनी जायेगी।

अथ श्री सुन्दर काण्ड

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाण शान्तिप्रदं,
ब्रह्मा शम्भु फणीन्द्र सेव्यमनिशं वेदान्त वेद्यं विभुं।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं माया मनुष्यं हरिं,
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपाल चूडामणिम्॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये,
सत्यंवदामि च भवानखिलान्तरात्मा।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां में,
कामादि दोष रहितं कुरु मानसं च॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकल गुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

जामवन्त के बचन सुहाय।सुनि हनुमन्त हृदय अतिभाए।।
तब लगिमोहि परिखेहु तुम्ह भाई।सहि दुख कन्द मूल फल खाई।।
जब लगि आवौं सीतहि देखी।होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी।।
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा।चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा।।
सिन्धु तीर एक भूधर सुन्दर।कौतुक कूदि चेढ़उ ता ऊपर।।
बार बार रघुबीर सँभारी।तरकेउ पवनतनय बल भारी।।
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमन्ता।चलेउ सो गा पाताल तुरन्ता।।
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना।एही भाँति चलेउ हनुमाना।।
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी।तैं मैनाक होहि श्रम हारी।।
दोहा- हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।।९।।
जात पवनसुत देवन्ह देखा।जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा।।
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता।पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता।।
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा।सुनत बचन कह पवनकुमारा।।
राम काजु करि फिरि मैं आवौं।सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं।।
तब तव बदन पैठिहउँ आई।सत्य कहउँ मोहि जान दे माई।।
कवनेहुँ जतन देह नहिं जाना।ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना।।
जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा।कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा।।

सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ। तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ।।
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा।।
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा।।
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। माँगा विदा ताहि सिरु नावा।।
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुधि बल मरमु तोर मैं पावा।।
दोहा- राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान।। २।।
निसिचरि एक सिन्धु महुँ रहई। करि माया नभु के खग गहई।।
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं। जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं।।
गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई। एहि बिधि सदा गगनचर खाई।।
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा। तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा।।
ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा।।
तहाँ जाइ देखी बन सोभा। गुंजत चंचरीक मधु लोभा।।
नाना तरु फल फूल सुहाए। खग मृग बृन्द देखि मन भाए।।
सैल बिसाल देखि एक आगें। ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें।।
उमा न कछु कपि कै अधिकाई। प्रभु प्रताप जो कालहि खाई।।
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी। कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी।।
अति उतंग जलनिधि चहु पासा। कनक कोट कर परम प्रकासा।।
छं०-कनक कोट विचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना।
चउहट्ट हट्ट सुबह बीथीं चारु पुर बहु विधि बना।।
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै।
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै।।
बन बाग उपवन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं।
नर नाग सुर गन्धर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं।।
कहुँ माल देह विसाल सैल समान अति बल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं।।
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं।।
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही।।
दोहा- पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह विचार।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार।। ३।।
मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी।।
नाम लंकिनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहि निन्दरी।।

जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा। मोर अहार जहां लगि चोरा॥
मुठिका एक महा कपि हनी। रुधिर बमत धरनीं ढनमनी॥
पुनि संभारि उठी सो लंका। जोरि पानि कर बिनय ससंका॥
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा॥
बिकल होसि तैं कपि कें मारे। तब जानेसु निसिचर संघारे॥
तात मोर अति पुन्य बहूता। देखेउँ नयन राम कर दूता॥

दोहा- तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥४॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिन्धु अनल सितलाई॥
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही॥
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना॥
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा॥
गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं॥
सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा॥

दोहा- रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृन्द तहँ देखि हरष कपिराइ॥ ५॥

लंका निसिचर निकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा॥
मन महुँ तरक करैं कपि लागा। तेहीं समय बिभीषनु जागा॥
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा॥
एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी॥
बिप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषन उठि तहँ आए॥
करि प्रणाम पूँछी कुसलाई। बिप्र कहहु निज कथा बुझाई॥
की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई। मोरें हृदय प्रीति अति होई॥
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी। आयहु मोहि करन बड़भागी॥

दोहा- तब हनुमन्त कही सब राम कथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम॥ ६॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी॥
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मनमाहीं॥
अब मोहि भा भरोस हनुमन्ता। बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं सन्ता॥
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा॥
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीती॥

कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचल सबहीं बिधि हीना॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि निद ताहि न मिलै अहारा॥
दोहा- अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर॥ ७॥
जानतहूँ अस स्वामि बिसारी। फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी॥
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा। पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा॥
पुनि सब कथा बिभीषन कही। जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही॥
तब हनुमन्त कहा सुनु भ्राता। देखी चहउँ जानकी माता॥
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई। चलेउ पवनसुत बिदा कराई॥
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ। बन असोक सीता रह जहवाँ॥
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा। बैठहिं बीति जात निसि जामा॥
कृस तनु सीस जटा एक बेनी। जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी॥
दोहा- निज पद नयन दिएँ मन राम पद कमल लीन।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन॥ ८॥
तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई। करइ बिचार करौं का भाई॥
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा। संग नारि बहु किएँ बनावा॥
बहु बिधि खल सीतहि समुझावा। साम दान भय भेद देखावा॥
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी। मंदोदरी आदि सब रानी॥
तव अनुचरीं करउँ पन मोरा। एक बार बिलोकु मम ओरा॥
तृन धरि ओट कहति बैदेही। सुमिरि अवधपति परम सनेही॥
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा। कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा॥
अस मन समुझु कहति जानकी। खल सुधि नहिं रघुबीर बान की॥
सठ सूनें हरि आनेहि मोही। अधम निलज्ज लाज नहिं तोही॥
दोहा- आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन॥९॥
सीता तैं मम कृत अपमाना। कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना॥
नाहिं त सपदि मानु मम बानी। सुमुखि होति न त जीवन हानी॥
स्याम सरोज दाम सम सुन्दर। प्रभु भुज करि कर सम दसकन्धर॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा। सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा॥
चन्द्रहास हरु मम परितापं। रघुपति बिरह अनल सजातं॥
सीतल निसित बहसि बर धारा। कह सीता हरु मम दुख भारा॥
सुनत बचन पुनि मारन धावा। मयतनयाँ कहि नीति बुझावा॥
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई। सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई॥
मास दिवस महुँ कहा न माना। तौ मैं मारिब काढ़ि कृपाना॥

दोहा- भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृन्द।
सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मन्द॥ १०॥
त्रिजटा नाम राच्छसी एका।राम चरन रति निपुन बिबेका॥
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना।सीतहि सेइ करहु हित अपना।।
सपनें बानर लंका जारी।जातुधान सेना सब मारी॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा।मुंडित सिर खंडित भुज बीसा॥
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई।लंका मनहुँ बिभीषन पाई॥
नगर फिरी रघुबीर दोहाई।तब प्रभु सीता बोलि पठाई।।
यह सपना मैं कहउँ पुकारी।होइहि सत्य गएँ दिन चारी॥
तासु बचन सुनि ते सब डरीं।जनकसुता के चरनन्हि परीं॥
दोहा- जहँ तहँ गईं सकल सब सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच॥ ११॥
त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी।मातु बिपति संगिनि तैं मोरी॥
तजौं देह करु बेगि उपाई।दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई॥
आनि काठ रचु चिता बनाई।मातु अनल पुनि देहि लगाई॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी।सुनै को श्रवन सूल सम बानी॥
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि।प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि॥
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी।अस कहि सो निज भवन सिधारी॥
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला।मिलिहि न पावक मिलिहि न सूला॥
देखिअत प्रगट गगन अंगारा।अवनि न आवत एकउ तारा॥
पावकमय ससि स्रवत न आगी।मानहुँ मोहि जानि हतभागी॥
सुनह बिनय मम बिटप असोका।सत्य नाम करु हरु मम शोका।।
नूतन किसलय अनल समाना।देहि अगिनि तन करहिं निदाना।।
देखि परम बिरहाकुल सीता।सो छन कपिहिं कलप सम बीता।।
दोहा- कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ॥ १२॥
तब देखी मुद्रिका मनोहर।राम नाम अंकित अति सुन्दर॥
चकित चितव मुदरी पहिचानी।हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी॥
जीति को सकइ अजय रघुराई।माया तें असि रचि नहिं जाई॥
सीता मन बिचार कर नाना।मधुर बचन बोलेउ हनुमाना॥
रामचन्द्र गुन बरनैं लागा।सुनतहिं सीता कर दुख भागा॥
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई।आदिहु तें सब कथा सुनाई॥
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई।कही सो प्रगट होति किन भाई॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ।फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ॥

राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुना निधान की॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी॥
नर बानरहि संग कहु कैसें। कही कथा भइ संगति जैसे॥

दोहा- कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास॥ १३॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुँ जलजाना॥
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी॥
कोमलचित कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई॥
सहज बानि सेवक सुखदायक। कबहुँक सुरति करत रघुनायक॥
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता॥
बचनु न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ हौं निपट बिसारी॥
देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन बिनीता॥
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपा निकेता॥
जनि जननी मानहु जियँ ऊना। तुम्ह ते प्रेम राम के दूना॥

दोहा- रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर॥ १४॥

कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता॥
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू। काल निसा सम निसि ससि भानू॥
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा॥
जे हित रहे करत तेइ पीरा। उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा॥
कहेहू तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं यह जान न कोई॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं॥
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही॥
कह कपि हृदयँ धीर धरु माता। सुमिरु राम सेवक सुखदाता॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई। सुनि मम बचन तजहु कदराई॥

दोहा- निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु।
जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु॥ १५॥

जौं रघुबीर होति सुधि पाई। करते नहिं बिलंबु रघुराई॥
राम बान रबि उएँ जानकी। तम बरूथ कहँ जातुधान की॥
अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा॥
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं। तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं॥

हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना।जातुधान अति भट बलवाना॥
मोरें हृदय परम संदेहा।सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा॥
कनक भूधराकार सरीरा।समर भयंकर अति बल बीरा॥
सीता मन भरोस तब भयऊ।पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ॥

दोहा- सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल॥ १६॥

मन सन्तोष सुनत कपि बानी।भगति प्रताप तेज बल सानी॥
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना।होहु तात बल सील निधाना॥
अजर अमर गुननिधि सुत होहू।करहुँ बहुत रघुनायक छोहू॥
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना।निर्भर प्रेम मगन हनुमाना॥
बार बार नाएसि पद सीसा।बोला बचन जोरि कर कीसा॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता।आसिष तव अमोघ बिख्याता॥
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा।लागि देखि सुन्दर फल रूखा॥
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी।परम सुभट रजनीचर भारी॥
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं।जो तुम्ह सुख मानहु मन माही॥

दोहा- देखि बुद्धि निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु।
रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु॥ १७॥

चलेउ नाइ सिर पैठेउ बागा।फल खाएसि तरु तोरैं लागा॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे।कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे॥
नाथ एक आवा कपि भारी।तेहिं असोक बाटिका उजारी॥
खाएसि फल अरु बिटप उपारे।रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे॥
सुनि रावन पठए भट नाना।तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना॥
सब रजनीचर कपि संघारे।गए पुकारत कछु अधमारे॥
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा।चला संग लै सुभट अपारा॥
आवत देखि बिटप गहि तर्जा।ताहि निपाति महाधुनि गर्जा॥

दोहा- कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि॥ १८॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना।पठएसि मेघनाद बलवाना॥
मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही।देखिअ कपिहि कहाँ कर आही॥
चला इंद्रजित अतुलित जोधा।बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा॥
कपि देखा दारुन भट आवा।कटकटाइ गर्जा अरु धावा॥
अति बिसाल तरु एक उपारा।बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा॥
रहे महाभट ताके संगा।गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा॥
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा।भिरे जुगल मानहुँ गजराजा॥

मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई। ताहि एक छन मुरुछा आई॥
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभञ्जन जाया॥

दोहा- ब्रह्म अस्त्र तेहिं साँधा कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार॥ १९॥

ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिं मारा। परतिहुँ बार कटकु संघारा॥
तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ। नागपास बाँधेसि लै गयऊ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी। भव बंधन काटहिं नर ग्यानी॥
तासु दूत कि बंध तरु आवा। प्रभु कारज लगि कपिहिं बँधावा॥
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए। कौतुक लागि सभाँ सब आए॥
दसमुख सभा दीखि कपि जाई। कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई॥
कर जोरें सुर दिसिप बिनीता। भृकुटि बिलोकत सकल सभीता॥
देखि प्रताप न कपि मन संका। जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका॥

दोहा- कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद।
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ विषाद॥ २०॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा। केहि कें बल घालेहि बन खीसा॥
की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही। देखउँ अति असंक सठ तोही॥
मारे निसिचर केहिं अपराधा। कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा॥
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासु बल बिरचति माया॥
जाकें बल बिंरचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा॥
जा बल सीस धरत सहसानन। अंडकोस समेत गिरि कानन॥
धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता। तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता॥
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा। तेहि समेत नृप दल मद गंजा॥
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली। बधे सकल अतुलित बलसाली॥

दोहा- जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि॥ २१॥

जानउँ मैं तुम्हारी प्रभुताई। सहसबाहु सन परी लराई॥
समर बालि सन करि जसु पावा। सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा॥
खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा। कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा॥
सब कें देह परम प्रिय स्वामी। मारहिं मोहि कुमारग गामी॥
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे। तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे॥
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा। कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा॥
बिनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन॥
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी। भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी॥
जाकें डर अति काल डेराई। जो सुर असुर चराचर खाई॥

तासों बयरु कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहें जानकी दीजै॥
दोहा- प्रनतपाल रघुनायक करुनासिंधु खरारि।
गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारी॥ २२॥
राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू॥
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका। तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका॥
राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देखु बिचारि त्यागि मद मोहा॥
बसन हीन नहिं सोह सुरारी। सब भूषन भूषित बर नारी॥
राम बिमुख संपति प्रभुताई। जाइ रही पाई बिनु पाई॥
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं। बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं॥
सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी। बिमुख राम त्राता नहिं कोपी॥
संकर सहस बिष्नु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही॥
दोहा- मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान।
भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान॥२३॥
जदपि कही कपि अति हित बानी। भगति बिबेक बिरति नय सानी॥
बोला बिहसि महा अभिमानी। मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी॥
मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही॥
उलटा होइहि कह हनुमाना। मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना॥
सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना। बेगि न हरहुँ मूढ़ कर प्राना॥
सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए॥
नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिअ दूता॥
आन दंड कछु करिअ गोसाँई। सबहीं कहा मंत्र भल भाई॥
सुनत बिहसि बोला दसकंधर। अंग भंग करि पठइअ बंदर॥
दोहा- कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ॥२४॥
पूँछहीन बानर तहँ जाइहि। तब सठ निज नाथहि लइ आइहि॥
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई। देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई॥
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना। भइ सहाय सारद मैं जाना॥
जातुधान सुनि रावन बचना। लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना॥
रहा न नगर बसन घृत तेला। बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला॥
कौतुक कहँ आए पुरबासी। मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी। नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी॥
पावक जरत देखि हनुमंता। भयउ परम लघुरूप तुरंता॥
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं। भई सभीत निशाचर नारी॥

दोहा- हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास।।२५।।
देह बिसाल परम हरुआई।मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई।।
जरइ नगर भा लोग बिहाला।झपट लपट बहु कोटि कराला।।
तात मातु हा सुनिअ पुकारा।एहिं अवसर को हमहि उबारा।।
हम जो कहा यह कपि नहिं होई।बानर रूप धरें सुर कोई।।
साधु अवग्या कर फलु ऐसा।जरइ नगर अनाथ कर जैसा।।
जारा नगरु निमिष एक माहीं।एक बिभीषन कर गृह नाहीं।।
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा।जरा न सो तेहि कारन गिरिजा।।
उलटि पलटि लंका सब जारी।कूदि परा पुनि सिंधु मझारी।।
दोहा- पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि।
जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि।।२६।।
मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा।जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा।।
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ।हरष समेत पवनसुत लयऊ।।
कहेहु तात अस मोर प्रनामा।सब प्रकार प्रभु पूरनकामा।।
दीन दयाल बिरिदु संभारी।हरहु नाथ मम संकट भारी।।
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु।बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहुं।।
मास दिवस महुँ नाथु न आवा।तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा।।
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना।तुम्हहू तात कहत अब जाना।।
तोहि देखि सीतलि भइ छाती।पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती।।
दोहा- जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह।।२७।।
चलत महाधुनि गर्जेसि भारी।गर्भ स्त्रवहिं सुनि निसिचर नारी।।
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा।सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा।।
हरषे सब बिलोकि हनुमाना।नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना।।
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा।कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा।।
मिले सकल अति भए सुखारी।तलफत मीन पाव जिमि बारी।।
चले हरषि रघुनायक पासा।पूँछत कहत नवल इतिहासा।।
तब मधुबन भीतर सब आए।अंगद संमत मधु फल खाए।।
रखवारे जब बरजन लागे।मुष्टि प्रहार हनत सब भागे।।
दोहा- जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज।।२८।।
जौं न होति सीता सुधि पाई।मधुबन के फल सकहिं कि खाई।।
एहि बिधि मन बिचार कर राजा।आइ गए कपि सहित समाजा।।

आइ सबन्हि नावा पद सीसा।मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा।।
पूँछी कुसल कुसल पद देखी।राम कृपाँ भा काजु बिसेषी।।
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना।राखे सकल कपिन्ह के प्राना।।
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ।कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ।।
राम कपिन्ह जब आवत देखा।किएँ काजु मन हरष बिसेषा।।
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई।परे सकल कपि चरनन्हि जाई।।

दोहा- प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज।
पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज।।२९।।

जामवंत कह सुनु रघुराया।जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया।।
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर।सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर।।
सोइ बिजई बिनई गुन सागर।तासु सुजसु त्रैलोक उजागर।।
प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू।जन्म हमार सुफल भा आजू।।
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी।सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी।।
पवनतनय के चरित सुहाए।जामवंत रघुपतिहि सुनाए।।
सुनत कृपानिधि मन अति भाए।पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए।।
कहहु तात केहि भाँति जानकी।रहति करति रच्छा स्वप्रान की।।

दोहा- नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं केहिं बाट।।३०।।

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही।रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही।।
नाथ जुगल लोचन भरि बारी।बचन कहे कछु जनककुमारी।।
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना।दीन बंधु प्रनतारति हरना।।
मन क्रम बचन चरन अनुरागी।केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी।।
अवगुन एक मोर मैं माना।बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना।।
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा।निसरत प्रान करहिं हठि बाधा।।
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा।स्वास जरइ छन माहिं सरीरा।।
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी।जरैं न पाव देह बिरहागी।।
सीता कै अति बिपति बिसाला।बिनहिं कहें भलि दीनदयाला।।

दोहा- निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति।।३१।।

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना।भरि आए जल राजिव नयना।।
बचन कायँ मन मम गति जाही।सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही।।
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई।जब तव सुमिरन भजन न होई।।
केतिक बात प्रभु जातुधान की।रिपुहि जीति आनिबी जानकी।।
सुनु कपि तोहि समान उपकारी।नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी।।

प्रति उपकार करौं का तोरा।सनमुख होइ न सकत मन मोरा।।
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं।देखेउँ करि बिचार मन माहीं।।
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता।लोचन नीर पुलक अति गाता।।

दोहा- सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख, गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल, त्राहि त्राहि भगवंत।।३२।।

बार बार प्रभु चहइ उठावा।प्रेम मगन तेहि उठब न भावा।।
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा।सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा।।
सावधान मन करि पुनि संकर।लागे कहन कथा अति सुंदर।।
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा।कर गहि परम निकट बैठावा।।
कहु कपि रावन पालित लंका।केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका।।
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना।बोला बचन बिगत अभिमाना।।
साखामृग कै बड़ि मनुसाई।साखा तें साखा पर जाई।।
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा।निसिचर गन बधि बिपिन उजारा।।
सो सब तव प्रताप रघुराई।नाथ न कछू मोरि प्रभुताई।।

दोहा- ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं, जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभावँ बड़वानलहि, जारि सकइ खलु तूल।।३३।।

नाथ भगति अति सुखदायनी।देहु कृपा करि अनपायनी।।
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी।एवमस्तु तब कहेउ भवानी।।
उमा राम सुभाउ जेहिं जाना।ताहि भजनु तजि भाव न आना।।
यह संबाद जासु उर आवा।रघुपति चरन भगति सोइ पावा।।
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृंदा।जय जय जय कृपाल सुखकंदा।।
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा।कहा चलैं कर करहु बनावा।।
अब बिलंबु केहि कारन कीजे।तुरत कपिन्ह कहुँ आयसु दीजे।।
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी।नभ तें भवन चले सुर हरषी।।

दोहा- कपिपति बेगि बोलाए, आए जूथप जूथ।
नाना बरन अतुल बल, बानर भालु बरूथ।।३४।।

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा।गर्जहिं भालु महाबल कीसा।।
देखी राम सकल कपि सेना।चितइ कृपा करि राजिव नैना।।
राम कृपा बल पाइ कपिंदा।भए पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा।।
हरषि राम तब कीन्ह पयाना।सगुन भए सुंदर सुभ नाना।।
जासु सकल मंगलमय कीती।तासु पयान सगुन यह नीती।।
प्रभु पयान जाना बैदेहीं।फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं।।
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई।असगुन भयउ रावनहि सोई।।
चला कटकु को बरनैं पारा।गर्जहिं बानर भालु अपारा।।

नख आयुध गिरि पादपधारी। चले गगन महि इच्छाचारी।।
केहरिनाद भालु कपि करहीं। डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं।।
छं०-चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे।
मन हरष सब गंधर्ब सुर मुनि नाग किंनर दुख टरे।।
कटकहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावंही।।
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई।
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई।।
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी।
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी।।
दोहा- एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर।।३५।।
उहाँ निसाचर रहहिं संसका। जब तें जारि गयउ कपि लंका।।
निज निज गृहँ सब करहिं बिचारा। नहिं निसिचर कुल केर उबारा।।
जासु दूत बल बरनि न जाई। तेहि आएँ पुर कवन भलाई।।
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी। मंदोदरी अधिक अकुलानी।।
रहसि जोरि कर पति पग लागी। बोली बचन नीति रस पागी।।
कंत करष हरि सन परिहरहु। मोर कहा अति हित हियँ धरहु।।
समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहिं गर्भ रजनीचर धरनी।।
तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई।।
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई।।
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें।।
दोहा- राम बान अहि गन सरिस, निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि, जतनु करहु तजि टेक।।३६।।
श्रवन सुनी सठ ता करि बानी। बिहसा जगत बिदित अभिमानी।।
सभय सुभाउ नारि कर साचा। मंगल महुँ भय मन अति काचा।।
जौं आवइ मर्कट कटकाई। जिअहिं बिचारे निसिचर खाई।।
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा। तासु नारि सभीत बड़ि हासा।।
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई। चलेउ सभाँ ममता अधिकाई।।
मंदोदरी हृदयँ कर चिंता। भयउ कंत पर बिधि बिपरीता।।
बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई। सिंधु पार सेना सब आई।।
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू। ते सब हँसे मष्ट करि रहहू।।
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं।।

दोहा- सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास।।३७।।
सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुशासन।।
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहउँ हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो परनारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा- काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।३८।।
तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेश्वर कालहु कर काला।।
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता।।
गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिंधु मानुष तनुधारी।।
जन रंजन भंजन खल ब्राता। बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता।।
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा। प्रनतारति भंजन रघुनाथा।।
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही।।
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा। बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा।।
जासु नाम त्रय ताप नसावन। सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन।।
दोहा- बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस।।३९क।।
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात।।३९ख।।
माल्यवंत अति सचिव सयाना। तासु बचन सुनि अति सुख माना।।
तात अनुज तव नीति बिभूषन। सो उर धरहु जो कहत बिभीषन।।
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ। दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ।।
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी। कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी।।
सुमति कुमति सब कें उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं।।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना।।
तव उर कुमति बसी बिपरीता। हित अनहित मानहु रिपु प्रीता।।
कालराति निसिचर कुल केरी। तेहि सीता पर प्रीति घनेरी।।
दोहा- तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार।।४०।।

बुध पुरान श्रुति संमत बानी।कही बिभीषन नीति बखानी।।
सुनत दसानन उठा रिसाई।खल तोहि निकट मृत्यु अब आई।।
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा।रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा।।
कहसि न खल अस को जग माहीं।भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं।।
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती।सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती।।
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा।अनुज गहे पद बारहिं बारा।।
उमा संत कै इहइ बड़ाई।मंद करत जो करइ भलाई।।
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा।रामु भजें हित नाथ तुम्हारा।।
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ।सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ।।

दोहा- रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि।
मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि।।४१।।

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं।आयूहीन भए सब तबहीं।।
साधु अवग्या तुरत भवानी।कर कल्यान अखिल कै हानी।।
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा।भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा।।
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं।करत मनोरथ बहु मन माहीं।।
देखिहउँ जाइ चरन जलजाता।अरुन मृदुल सेवक सुखदाता।।
जे पद परसि तरी रिषिनारी।दंडक कानन पावनकारी।।
जे पद जनकसुताँ उर लाए।कपट कुरंग संग धर धाए।।
हर उर सर सरोज पद जेई।अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई।।

दोहा- जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ।
ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ।।४२।।

एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा।आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा।।
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा।जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा।।
ताहि राखि कपीस पहिं आए।समाचार सब ताहि सुनाए।।
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई।आवा मिलन दसानन भाई।।
कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा।कहइ कपीस सुनहु नरनाहा।।
जानि न जाइ निसाचर माया।कामरूप केहि कारन आया।।
भेद हमार लेन सठ आवा।राखिअ बाँधि मोहि अस भावा।।
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी।मम पन सरनागत भयहारी।।
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना।सरनागत बच्छल भगवाना।।

दोहा- सरनागत कहुँ जे तजहिं निजअनहित अनुमानि।
ते नर पावँर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि।।४३।।

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू।आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू।।
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं।जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।।

पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजनु मोर तेहि भाव न काऊ।।
जौं पै दुष्टहृदय सोइ होई। मोरें सनमुख आव कि सोई।।
निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।
भेद लेन पठवा दससीसा। तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा।।
जग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिषु महुँ तेते।।
जौं सभीत आवा सरनाईं। रखिहउँ ताहि प्रान की नाईं।।

दोहा- उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत।।४४।।

सादर तेहि आगें करि बानर। चले जहाँ रघुपति करुनाकर।।
दुरिहि ते देखे द्वौ भ्राता। नयनानंद दान के दाता।।
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी। रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी।।
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन। स्यामल गात प्रनत भय मोचन।।
सिंध कंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन मन मोहा।।
नयन नीर पुलकित अति गाता। मन धरि धीर कही मृदु बाता।।
नाथ दसानन कर मैं भ्राता। निसिचर बंस जनम सुरत्राता।।
सहज पापप्रिय तामस देहा। जथा उलूकहि तम पर नेहा।।

दोहा- श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर।।४५।।

अस कहि करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा।।
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा। भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा।।
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भगत भयहारी।।
कहु लंकेस सहित परिवारा। कुसल कुठाहर बास तुम्हारा।।
खल मंडलीं बसहु दिनु राती। सखा धरम निबहइ केहि भाँती।।
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती। अति नय निपुन न भाव अनीती।।
बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ बिधाता।।
अब पद देखि कुसल रघुराया। जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया।।

दोहा- तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहुँ मन बिश्राम।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम।।४६।।

तब लगि हृदयँ बसत खल नाना। लोभ मोह मच्छर मद माना।।
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरें चाप सायक कटि भाथा।।
ममता तरुन तमी अँधिआरी। राग द्वेष उलूक सुखकारी।।
तब लगि बसति जीव मन माहीं। जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं।
अब मैं कुसल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे।।
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला। ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला।।

मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ।सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ।।
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा।तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा।।
दोहा- अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेब्य जुगल पद कंज।।४७।।
सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ।जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ।।
जौं नर होइ चराचर द्रोही।आवै सभय सरन तकि मोही।।
तजि मद मोह कपट छल नाना।करउँ सद्य तेहि साधु समाना।।
जननी जनक बंधु सुत दारा।तनु धनु भवन सुहृद परिवारा।।
सब कै ममता ताग बटोरी।मम पद मनहि बाँध बरि डोरी।।
समदरसी इच्छा कछु नाहीं।हरष सोक भय नहिं मन माहीं।।
अस सज्जन मम उर बस कैसें।लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें।।
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें।धरउँ देह नहिं आन निहोरें।।
दोहा- सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम।
ते नर प्रान समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम।।४८।।
सुनु लंकेस सकल गुन तोरें।तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें।।
राम बचन सुनि बानर जूथा।सकल कहहिं जय कृपा बरूथा।।
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी।नहिं अघात श्रवनामृत जानी।।
पद अंबुज गहि बारहिं बारा।हृदयँ समात न प्रेमु अपारा।।
सुनहु देव सचराचर स्वामी।प्रनतपाल उर अंतरजामी।।
उर कछु प्रथम बासना रही।प्रभु पद प्रीति सरित सो बही।।
अब कृपाल निज भगति पावनी।देहु सदा सिव मन भावनी।।
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा।मागा तुरत सिंधु कर नीरा।।
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं।मोर दरसु अमोघ जग माहीं।।
अस कहि राम तिलक तेहि सारा।सुमन बृष्टि नभ भई अपारा।।
दोहा- रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड।
जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड।।४९क।।
दोहा- जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ।।४९ख।।
अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना।ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना।।
निज जन जानि ताहि अपनावा।प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा।।
पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी।सर्बरूप सब रहित उदासी।।
बोले बचन नीति प्रतिपालक।कारन मनुज दनुज कुल घालक।।
सुनु कपीस लंकापति बीरा।केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा।।
संकुल मकर उरग झष जाती।अति अगाध दुस्तर सब भाँती।।

कह लंकेस सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु सोषक तव सायक।।
जद्यपि तदपि नीति असि गाई। बिनय करिअ सागर सन जाई।।
दोहा- प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि।।५०।।
सखा कहि तुम्ह नीकि उपाई। करिअ दैव जौं होइ सहाई।।
मंत्र न यह लछिमन मन भावा। राम बचन सुनि अति दुख पावा।।
नाथ दैव कर कवन भरोसा। सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा।।
कादर मन कहुँ एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा।।
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा। ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा।।
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिंधु समीप गए रघुराई।।
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई।।
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए। पाछें रावन दूत पठाए।।
दोहा- सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह।
प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह।।५१।।
प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ। अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ।।
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने। सकल बाँधि कपीस पहिं आने।।
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। अंग भंग करि पठवहु निसिचर।।
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए। बाँधि कटक चहु पास फिराए।।
बहु प्रकार मारन कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे।।
जो हमार हर नासा काना। तेहि कोसलाधीस कै आना।।
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए। दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए।।
रावन कर दीजहु यह पाती। लछिमन बचन बाचु कुलघाती।।
दोहा- कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार।
सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार।।५२।।
तुरत नाइ लछिमन पद माथा। चले दूत बरनत गुन गाथा।।
कहत राम जसु लंकाँ आए। रावन चरन सीस तिन्ह नाए।।
बिहसि दसानन पूँछी बाता। कहसि न सुक आपनि कुसलाता।।
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी।।
करत राज लंका सठ त्यागी। होइहि जव कर कीट अभागी।।
पुनि कहु भालु कीस कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई।।
जिन्ह के जीवन कर रखवारा। भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा।।
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी। जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी।।
दोहा- की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर।
कहसि न रिपु दल तेज बहुत चकित चित तोर।।५३।।

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें।मानहु कहा क्रोध तजि तैसें।।
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा।जातहिं राम तिलक तेहि सारा।।
रावन दूत हमहि सुनि काना।कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना।।
श्रवन नासिका काटैं लागे।राम सपथ दीन्हें हम त्यागे।।
पूँछिहु नाथ राम कटकाई।बदन कोटि सत बरनि न जाई।।
नाना बरन भालु कपि धारी।बिकटानन बिसाल भयकारी।।
जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा।सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा।।
अमित नाम भट कठिन कराला।अमित नाग बल बिपुल बिसाला।।

दोहा- द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि।
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि।।५४।।

ए कपि सब सुग्रीव समाना।इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना।।
राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं।तृन समान त्रैलोकहि गनहीं।।
अस मैं सुना श्रवन दसकंधर।पदुम अठारह जूथप बंदर।।
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं।जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं।।
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा।आयसु पै न देहिं रघुनाथा।।
सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला।पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला।।
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा।ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा।।
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका।मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका।।

दोहा- सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम।
रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संग्राम।।५५।।

राम तेज बल बुधि बिपुलाई।सेष सहस सत सकहिं न गाई।।
सक सर एक सोषि सत सागर।तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर।।
तासु बचन सुनि सागर पाहीं।मागत पंथ कृपा मन माहीं।।
सुनत बचन बिहसा दससीसा।जौं असि मति सहाय कृत कीसा।।
सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई।सागर सन ठानी मचलाई।।
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई।रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई।।
सचिव सभीत बिभीषन जाकें।बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें।।
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी।समय बिचारि पत्रिका काढ़ी।।
रामानुज दीन्ही यह पाती।नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती।।
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन।सचिव बोलि सठ लाग बचावन।।

दोहा- बातन्ह मनहि रिझाह सठ जनि घालसि कुल खीस।
राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्नु अज ईस।।५६क।।
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग।
होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग।।५६ख।।

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई।कहत दसानन सबहि सुनाई।।
भूमि परा कर गहत अकासा।लघु तापस कर बाग बिलासा।।
कह सुक नाथ सत्य सब बानी।समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी।।
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा।नाथ राम सन तजहु बिरोधा।।
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ।जद्यपि अखिल लोक कर राऊ।।
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही।उर अपराध न एकउ धरिही।।
जनकसुता रघुनाथहि दीजे।एतना कहा मोर प्रभु कीजे।।
जब तेहिं कहा देन बैदेही।चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही।।
नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ।कृपासिंधु रघुनायक जहाँ।।
करि प्रनामु निज कथा सुनाई।राम कृपाँ आपनि गति पाई।।
रिषि अगस्ति कीं साप भवानी।राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी।।
बंदि राम पद बारहिं बारा।मुनि निज आश्रम कहुँ पगु धारा।।

दोहा- बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।।५७।।

लछिमन बान सरासन आनू।सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू।।
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती।सहज कृपन सन सुंदर नीती।।
ममता रत सन ग्यान कहानी।अति लोभी सन बिरति बखानी।।
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा।ऊसर बीज बएँ फल जथा।।
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा।यह मत लछिमन के मन भावा।।
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला।उठी उदधि उर अंतर ज्वाला।।
मकर उरग झष गन अकुलाने।जरत जंतु जलनिधि जब जाने।।
कनक थार भरि मनि गन नाना।बिप्र रूप आयउ तजि माना।।

दोहा- काटेहिं पइ कदरी करइ कोटि जतन कोउ सींच।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच।।५८।।

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे।छमहु नाथ सब अवगुण मेरे।।
गगन समीर अनल जल धरनी।इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी।।
तव प्रेरित मायाँ उपजाए।सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए।।
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई।सो तेहि भाँति रहें सुख लहई।।
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही।मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही।।
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी।सकल ताड़ना के अधिकारी।।
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई।उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई।।
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई।करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई।।

दोहा- सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ।।५९।।

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई।लरिकाई रिषि आसिष पाई।।
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे।तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे।।
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई।करिहउँ बल अनुमान सहाई।।
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ।जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ।।
एहिं सर मम उत्तर तट बासी।हतहु नाथ खल नर अघ रासी।।
सुनि कृपाल सागर मन पीरा।तुरतहिं हरी राम रनधीरा।।
देखि राम बल पौरुष भारी।हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी।।
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा।चरन बंदि पायोधि सिधावा।।

छं०-निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ।।
यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ।।
सुख भवन संसय समन दवन विषाद रघुपति गुन गना।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना।।

दोहा- सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सदर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान।।६०।।

।। इति सुन्दर काण्ड सम्पूर्ण ।।

श्री हनुमान वंदना स्तोत्र

रामचरितमानस के रचियता भक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदासजी रचित हनुमान जी की वन्दना का यह स्तोत्र उनकी 'विनय पत्रिका' पुस्तक से लिया गया है। अत्यन्त सुगम संस्कृत, एक प्रकार से लगभग हिन्दी, में है यह स्तोत्र, अतः आपको शीघ्र ही याद हो जाएगा।

जयति वातसंजात विख्यात विक्रम
वृहद्बाहु बल विपुल बालधि विसाला॥
जातरूपाचलाकार विग्रह लसल्लोल
विद्युल्लता ज्वालमाला॥
जयति बालार्कवरदन पिंगलनयन
कपीश कर्कश जटाजूटधारी।
विकट भ्रकुटी वज्रदर्शन नख
वैरि मदमत्त कंजर पुंज कुंजरारी॥
जयति भीमार्जुन व्याल सूदन
गर्वहर धनंजय रथत्राण केतू।
भीष्म द्रोण कर्णादि पालित
कालदृक् सुयोधन चमू निधन हेतू॥
जयति गतराजदातार हंतार
संसार संकट दनुज दर्पहारी।
ईति अतिभीति ग्रह प्रेत चौरानल
व्याधि बाधा शमन घोर मारी॥
जयति निगमागम व्याकरण करणलिपि
काव्य कौतुक कला-कोटि सिंधो।
सामगायक भक्तकामदायक वामदेव
श्रीराम प्रिय प्रेम बंधो॥
जयति धर्मांशु संदग्ध संपाति
नवपक्ष लोचन दिव्य देह दाता।
कालकलि पासंताप संकुल सदा
प्रणत तुलसीदास तात माता॥

श्री हनुमान नमस्कार स्तोत्र

नमो हनुमते तुभ्यं नमो मारुतसूनवे।
नमः श्रीरामभक्ताय श्यामास्याय च ते नमः ॥1॥
नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे।
लंकाविदाहनार्थाय हेलासागरतरिणे ॥2॥
सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च।
रावणान्तकुलच्छेदकारिणे ते नमो नमः ॥3॥
मेघनादमदध्वंसकारिणे ते नमो नमः।
अशोकवनविध्वंसकारिणे भयहारिणे ॥4॥
वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने।
वनपालशिरच्छेद लंकाप्रसादभञ्जिने ॥5॥
ज्वलत्कनकवर्णाय दीर्घलांगूलधारिणे।
सौमित्रिजनदात्रे च रामदूताय ते नमः ॥6॥
अक्षस्य वाकर्त्रे च ब्रह्मपाशनिवारिणे।
लक्ष्मणांगमहाशक्तिघ तक्षतविनाशिने ॥7॥
रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय च ते नमः।
ऋक्षवानरवीरौघप्राणदाय नमो नमः ॥8॥
परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः।
विषघ्नाय द्विषघ्नाय ज्वरघ्नाय च ते नमः ॥9॥
महाभयरिपुघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे।
परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां स्तम्भकारिणे ॥10॥
पयः पाषाणतरणकारणाय नमो नमः।
बालार्कमण्डलग्रासकारिणे भवतारिणे ॥11॥
नखायुधाय भीमाय दन्तायुधसाराय च।
रिपुमायाविनाशाय रामात्रालोकरक्षिणे ॥12॥
प्रतिग्रामस्थितायाथ रक्षोभूतवधार्थिने।
करालशैलशस्त्राय द्रुमशस्त्राय ते नमः ॥13॥
बालैकब्रह्मचर्याय रुद्रमूर्तिधराय च।
विहंगमाय सर्वाय वज्रदेहाय ते नमः ॥14॥

कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च।
दक्षिणाशाभास्कराय शतचन्द्रोदयात्मने ॥15॥
कृत्याक्षतव्यथाघ्नाय सर्वक्लेशहराय च।
स्वाम्याज्ञापर्थसंग्रामसंख्ये संजयधारिणे ॥16॥
भक्तान्तदिव्यवादेषु संग्रामे जयदायिने।
किलकिलाबुबुकोच्चार घोरशब्दकराय च ॥17॥
सर्पाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे वनचारिणे।
सदावनफलाहार संतृप्ताय विशेषतः ॥18॥
महार्णव शिलाबद्ध सेतुबन्धाय ते नमः।
वादे विवादे संग्रामे भये घोरे महावने ॥19॥
सिंहव्याघ्रादिचौरेभ्यः स्तोत्रपाठाद्भयंनहि।
दिव्येभूतभये व्याधौ विषे स्थावरजंगमे ॥20॥

अथ श्री हनुमल्लांगूलास्त्र स्तोत्र

यह स्तोत्र हनुमान उपासना का एक विशिष्ट प्रभावशाली स्तोत्र है। इस स्तोत्र का नियमित रूप से पाठ करने वाले साधक के समस्त शत्रुओं, विरोधियों, आलोचकों तथा व्याधियों का समूल नाश हो जाता है। निरंतर पाठ करने के परिणामस्वरूप वांछित कार्यों की सफलतापूर्वक सिद्धि भी इसी स्तोत्र द्वारा स्वयंमेव हो जाती है।

'श्री हनुमल्लांगूलास्त्र स्तोत्र' का अन्य प्रचलित नाम **'शत्रुजंय स्तोत्र'** भी है। इस स्तोत्र में हनुमान जी के लंगूर रूप की आराधना की जाती है। विधिपूर्वक साधना हेतु हनुमान जी की पंचोपचार पूजन करके इष्ट सिद्धि हेतु इस स्तोत्र का ग्यारह दफा पाठ करना चाहिए तथा एक पाठ से हवन करना चाहिए। एतदर्थ साधक को सफलता मिलती है।

विनियोग-

ओं अस्य श्री हनुमल्लांगूल शत्रुन्जय स्तोत्र मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री हनुमान रूद्रो देवता हं बीजं स्वाहा शक्तिः, हा हा हा इति कीलकम् मम् सर्वारक्षयार्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद करन्यास करें-

ॐ ह्रीं रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ हं अक्षयकुमार विध्वंसकाय मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ हैं लंकाविदाहकाय अनामिकाभ्यां नमः,

ॐ ह्रौं रूद्रावताराय कनिष्ठकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रः सकलरिपु संहारणाय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः,
ॐ ह्रां आंजनेयाय हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं रामदूताय शिरसे स्वाहा,
ॐ ह्रं अक्षयकुमार विध्वंसकाय शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं लंकाविदाहकाय कवचाय हुम्,
ॐ ह्रौं रूद्रावताराय नेत्राभ्यां वौषट्।
ॐ ह्रः सकलरिपु संहारणाय अस्त्राय फट्,

ॐ ऐं श्रौं ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रौं हस्फ्रें खफ्रें,
हस्त्रौं हस्ख्रें ह्रसौं नमो हनुमते।

त्रैलोभ्याक्रमण पराक्रम श्रीराम भक्त मम परस्य च,
सर्व शत्रुन् चतुर्वर्ण सम्भवान पुंस्त्रीनपुंसकान।
भूत भविष्यद् क्वथानान् दूरस्थान,
पुंस्त्रीनपुंसकान् भूत भविष्यद् वर्तमानान् दूरस्थान।
समीपस्थान् नाना नामधेयान् नाना संकट जातीयान्-
कलत्रपुत्रमित्रमृत्य बन्धु सुहृत्समेतान्,
प्रभुशक्ति सहितान् धन-धान्यादि संपित्तयुतान्।
राज्ञो राजसेवकान् मंत्रि सचि सखीना त्यन्तिकान्,
क्षणेन त्वष्टया एतद दिनावधि नानोपायर मारय-मारय
अस्त्रैः छेदय छेदय अग्निना ज्वालय ज्वालय दाहय दाहय,
अक्षयकुमारवत् पादतलाक्रमणेन आत्रोटय आत्रोटय।
घातय घातय भक्तजनवत्सल सीता-थोक पहारक,
सर्वत्र मामेन च रक्ष रक्ष हा हा हा हुं हुं हुं।
भूत संघै सह भक्षय भक्षय क्रुद्ध चेतसा,
नखैर्विधारय विदारद दाशादश्मादू उच्चाटाय उच्चाटाय।
पिशाचवद् भ्रंशय भ्रंशय, घे घे घे हुं हुं हुं फट् स्वाहा।
ओं नमो भगवते श्री हनुमते महाबल पराक्रमाय,
महाविपत्ति निवारणाय भक्त-जन मनः सकल्पनाय।
कल्पद्रुमाय दुष्टजन मनोरथः स्तम्भनाय,
प्रभंजन प्राणप्रियाय स्वाहा।

अथ ध्यानम्

श्रीमन्तं हनुमन्तमान्त रिपुमिद् भूमृत्तनुभ्राजितं,
बाल्गद्-बालधिबद्धवैरिनिचयं चामिकटाद्रिप्रभम्।
रोषारक्त-पिशंगः नेत्र-नलिनं भ्रूमंगमंग-स्फुटत्,
प्रौद्यच्चण्ड-मयूख-मण्डल मुखं दुःखपाहं दुःखिनाम् ॥१॥
कौपीनं कटिसूत्र-मौज्यजिन युग्देहं विदेहात्मजा,
प्राणाधीशयदारविन्द निहतं स्वान्तं कृतान्तं द्विषाम्।
ध्यात्वैवं समरांगणे स्थितमकानीय स्वहत्पंकजे,
सम्पूज्याखिल पूजनोक्तविधिना सम्प्रार्थयेत्प्रार्थितम् ॥२॥
ओं हनुमन् अन्जनीसुतो महाबलपराक्रम,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥३॥
अक्षक्षपण पिंगाक्षदित्रिजासुक्षयङ्कर,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥४॥
मर्कटाधिप मार्तण्डमण्डलग्रासकारक,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥५॥
रूद्रावतार संसारदुःख भारापहारक,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥६॥
श्रीरामचरणाम्भोज मधुपापितमानस,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥७॥
बालिकाल कोटदक्रान्त सुग्रीवोन्मोचन प्रभो,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥८॥
सीता विरह वारीशम् अग्नि सीते शतारक,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥९॥
रक्षोराज प्रजापाग्नि दहयमान जगर्द्धित्,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥१०॥
ग्रसताशेष जगत्स्वास्थ राक्षसाम्भोधिमन्दर,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥११॥
पुच्छगुच्छ स्फुप्द्धूम ध्वजदग्ध निकेतन,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥१०॥
जगन्मनोदुरूल्लंघय पारावार विलंघन,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥१३॥

स्मृति मात्र समस्तेष्टपूरणा! प्रणतप्रिय,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥१४॥
रात्रिचरणभूराशि कर्त्तनैक विकतेन,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥१५॥
जानकी जानकी जानी प्रेम पात्र परन्तप,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥१६॥
भीमादिक महावीर वीरवेशादितारक,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥१७॥
वैदेहि विरहाक्रान्तं रामरोषं कविग्रह,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥१८॥
वज्रांगनखदंष्ट्रेश वज्रिवज्रावकुण्ठन,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥१९॥
अखर्व गर्व गन्धर्व पर्वतोद्भेदनेश्वर,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥२०॥
लक्ष्मण प्राण संस्त्राणं त्रातः तीक्ष्णकरान्वय,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥२१॥
रामादि विप्रयोगार्त भरताद्यार्तिनाशन,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥२२॥
द्रोणाचल सुभत्क्षेय समुत् क्षिप्तारिभैव,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥२३॥
सीताशीर्वाध सम्पन्न समस्ताभ्यवांछित,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥२४॥
वात पित्त कफ श्वास ज्वारादि व्याधिनाशन,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥२५॥
ॐ इत्येवमश्वतथतलोपविष्टः शत्रुंजयं नाम पठेत्सत्वं यः,
स शीघ्रमेवास्तसमस्त शत्रु, प्रमोदत्ते मरूतज प्रसीदात्॥२६॥

अथ श्री हनुमान लहरी

आध्यात्मिक गंगा की धारा में 'हनुमान लहरी' भक्ति सागर की वह प्रचण्ड वेगमयी तरंग है जो अर्न्तमन को झंझोड़ कर आत्मा के अंदर हनुमद् भक्ति का झंझावत उत्पन्न करके तन-मन को पूर्णतः हनुमानमयी बना देती है। 'हनुमान लहरी' में दोहों के साथ छप्पय, रोला, हरिगीतिका छन्दों तथा सोरठों का इतना अद्भुत प्रयोग किया गया है जिसके प्रभाव से भक्ति की अजस्त्रधारा बहने लगती है। इस 'हनुमान लहरी' को लयपूर्वक गायन करके इसका प्रत्यक्ष चमत्कार देखा जा सकता है।

दोहा

गुरुपद पंकज धारि उर, सुर-नर शीश नवाय।
मारुत सुत बलवीर कहं, ध्यावत चित मन लाय॥
प्रथम वन्दि सियराम पद, अवध नारि नर संग।
बन्दौ चरण सुध्यान धरि, हनुमत कंचन रंग॥
मन चित देइ सुनौ विनै, हौं तुम दीन दयाल।
और नहिं कछु वासना, दासहिं कहु निहाल॥
तात बड़ाई रावरी, बिछुवत जोति अनन्द।
सब विधि हीन मलीन मति, अहै दीन ब्रजनन्द॥
जानै जग दातव्यता, नाथ मोर सरवस्य।
पै बिरलै कोउ जानि हैं, यह अति गूढ़ रहस्य॥
जय जय दारूण दुःखदलन, महावीर रणधीर।
कर गहि लेउ उबार प्रभु, आय जुरी अति भीर॥
गदगद गिरा गुमान तिज, जुगल पानि करि जोर।
हनुमत अस्तुति करत हैं, सिगरी भांति निहोर॥

छप्पय छन्द

जै सुत पवन दयानिधान दारिद दुःख भंजन।
जैति अंजनि तनय सदा सन्तन मन रंजन॥
जैति वीर सिरताज लाज राखउ मम आजू।
जै जै रघुवर दास जासु साजेब शुभ काजू॥
प्रभु जस अरि बन्धुसु कहं कियो पार दुःख सिन्धु सों।
हनुमन्त मेरो दुःख दूर करो होउ सहाय सु बन्धु सों॥

रोला छन्द

जैति जैति दुःख हरन सरन अब मोको दीजै।
जैति जैति हनुमन्त अन्त थारो न पईजै॥
जै अंजनि सुत वीर धीर अति धरम धुरन्धर।
जय जय रघुकुल कुमुद चेट जय मच्छक रविकर॥
जय मारुत सुत तेजवान दुःख-द्वन्द दलैया।
जय सीता सुख मूल तूल सम लंक जलैया॥
रघुवर कर सबकाज लाल तुम आप संवारो।
रुचिर वाटिका दशकन्धर कर नाथ उजारो॥
बानर दल कहं विजय तात तुम आप दिवायो।
लंका कहं सन्धान करी सीता सुधि पायो॥
सुगरीवहिं पहं राम आनि शुभं सखा बनायो।
लाय विभीषन नाथ निकट तुम अभय करायो॥
सागर उतरेउ पार मेल मुद्रिका मुख माहीं।
सुन शुभमय संवाद अचरज कोउ नाहीं॥
लाय सजीवनि भूरि लखन कहं जीवित कीनो।
शोक जलधि सो आप काढ़ि रघुवर कहं लीनो॥
रघुपति सादर सखा भाषि उर लावत भयउ।
सकल शोक तत्काल हृदय सों बाहर गयऊ॥
श्रीमुख शैरे विशद गुणन को भाष्यो स्वामी।
भरत बाहु बल होय तोहि कह अन्तरयामी॥
भाखि सुखद संवाद तात भय भरत नसायो।
हरषि सुजस तत्काल अवध नारी-नर गायो॥
रघुपति कर कछु काज तात तुम बिन नहिं सरितो।
सुरपुर मो जय जैति शब्द तुम बिन को भरितो॥
दोहा-देइ बड़ाई बानरन, असुरन को बध कीन।
तो सम को प्रिय सीय की, जासु शोक हर लीन॥
जै-जै शंकर सुजन जैति जै केसरि नन्दन।
जै-जै पवनकुमार जयति रघुवर पद वन्दन॥
जय-जय जनककुमारी प्यारी यह रघुपति पायक।
जैति-जैति जै जैति तात सुर साधु सहायक॥
सकल द्वार सों हार हाय तुम द्वारहिं आयउं।
दान शीलता देखि रावरी हिय सुख पायउं॥

यादर सो महरूम तात अब कहां सिधारूं।
विपत काल में अहो नाथ अब काहि पुकारूं॥
कर गहि लेउ उबार नाथ हूँ दास तिहारो।
कर गहि लेउ उबार नाथ कछु है न सहारो॥
कर गहि लेउ उबार नाथ निज ओर निहारी।
कर गहि लेउ उबार नाथ सिगरी विधि हारी॥
गहि कर अजउं अबारु नाथ भव-सिन्धु अथाहै।
गहि कर अजउं अबारु नाथ व्रज डूबन चाहै॥
द्रवहु-द्रवहु यदि काल नाथ मोको कोउ नाहीं।
द्रवहु-द्रवहु यहि काल हार आयउं तुव पाहीं॥
द्रवहु-द्रवहु हनुमत कपि दल के सिरताजू।
द्रवहु-द्रवहु कपिराज ताज तुम सन्त समाजू॥
विनवत हौं कर जोर अजौं टारहु मम संकट।
विनवत हौं कर जोर नाथ काटहु मम कंटक॥
विनत हो हे नाथ दया कर रन ते हेरहु।
विनत हो हे नाथ यहां दारुण दुःख टेरहु॥
पद गहि विनवौं नाथ तोहिं कहं कस नहिं भावै।
पद गहि विनवौं हाय नाथ तुव दया न आवै॥
पद गहि विनवौं हाय अजहु मो अभय कीजै।
पद गहि विनवौं हाय अजहु सुख सम्पति-दीजै॥
सुख सागर आनन्द धन सन्तन के सिर मौर।
दुःख वन पावक नाथ तुम, सिर पर सोहत खौर॥

रोला छन्द

आज जुरयो यहि काल मोहि पै दारुण सोको।
सूझत ना तिहुं लोक मोहि तोसो कोउ मोको॥
स्वास्थ हित सब जगत मांझ राखत है प्रीती।
पै रौरी हे नाथ अहै अति नूठी रीती॥
हाय-हाय है नाथ हाय अब मों न बिसारहु।
हाय-हाय है नाथ हाय अब कोप निवारहु॥
धन बल विद्या हाय कछु नहीं मो ढिंग साई।
कवन सम्पदा कवन तात कब तो बिन पाई॥
दीन हीन सब भांति हूजिये वेग सहायक।
फेरिये कृपा-कटाक्ष आप सब विधि सब लायक॥

सुखद कथा तुव हाय नाथ कस दीन सुभाखै।
सदा सुचरन पाहिं चित्त आपन कस राखै॥
काम क्रोध मद लोभ मोह मोहिं सदा सतावैं।
चित्त वित्त सो हीन दीन कस तो कहं पावैं॥
अजहूं होय सहाय मोर सबकाज संवारहु।
गयउं सकल विधि हारि हाय अब मोहि सभारहुं॥
सदा कहत सब लोग आप कहं संकटमोचन।
सदा कहत सब लोग आप दारुन दुःखमोचन॥
अपनहिं ओर निहारि नाथ मों कहं जनि हेरहु।
आय जुरेउ दुःख विकट ताहि कहें तुरतहिं टेरहु॥
और कहौ कत नाथ तोहिं कह बहुत बुझाई।
और कहौ कत हाय मोहि सों कहि नहि जाई॥
सदन गुनन के खान दीन हित जन-सुखदायक।
पवनपुत्र दुःख देख अजहुं प्रभु होहु सहायक॥

सोरठा

अजहूं होय सहाय, तात निवारो दुख सब।
कहा कहो समुझाय, अजहुं न बिगरेउ काज कछु॥

हरिगीतिका छन्द

बहु भांति विनय बहोरि हे प्रभु जोरि कर भाखत अहौं।
तुव चरण रत मम मन रहे कछु और वर जासो लहौं॥
रघुवरी पायन पदुम पावन भृंग मोहि बनाइये।
भव-सिन्धु अगम अगाध सो प्रभु पार अजहु लगाइये॥
तुम तजि कहों कासों विपिति अब नाथ को मेरी सुनै।
रावरि भरोस सुवास तजि प्रभु और को कछु न गुनै॥
वैरी समाज विनाश कर हनुमान मोहि विजही करो।
मेरी ढिठाई दोष अवगुन पै न चित सांई धरौ॥
जब लगि सकल न गुनान तजि नर आइ राउर पद गहै।
तब लगि दावानल पाप को बहुत भांति तन मन ही दहै॥
जग लगि न रावरि होय नर सब बांति मन कर्म वचन ते।
तब लगि न रघुवर दास होत करोर जोखिम यतन ते॥
यहि मान जिय परमान निहचै सरन राउर हम गहै।
परलोक लोक भरोस तजि नित नाथ का दरशन चहै॥

हम अपनि ओर निहोर बहु विधि नाथ नित विनती करो।
हरषाय सादर नाथ तुम गन गात निज हियरो धरों॥
जनि करहुं मोहि अनाथ नाथ सुदास हूँ मैं रावरो।
हनुमान हैं शुचि पतित पावन दास जो पै पावरो॥
अबहुं करो सनाथ नाथ तो जगत मोहि तोहि का कहै।
यह रुचिर पावन स्वामि सेवक नेह नातो क्यों रहै॥

दोहा

विजय चहैं निज काज महं हनुमत कहं सिनाय।
लखि मेरी अज दुरदसा, द्रवहु अजहुं तुम धाय॥

सोरठा

हार देत सब काज, नाथ रावरे हाथ महं।
सजहु सकल शुभ साज, भजहु जानि अब मोहि तजि॥
पंगु भइ मो बुद्ध, अकथ कथा कस कहि सकौं।
करहु काज मम सिद्ध, और कहा तोसौं कहौ॥
सुनै न समुझे रीत, मगन बयो मन प्रेम महं।
अब न सिखावहु नीत, यासो मोहि न काज कछु॥
नहिं दर छांड़ब हाय, मारहु या जीवत रखहु।
ब्रजनन्दन बिलखाय, भाखत साखी दैं सियहिं॥
पाहि पाहि भगवन्त, अब सुधि लीजै दास की।
दीजै दरस तुरन्त, करिये कृतारथ दीन जन॥
मांगत दोउ कर जोरि, अभै दान तुम सन सदा।
बारहिं बार निहोरि, कहत करहु फुर मो वचन॥
जो याको चित लाय करे, पाठ शुचि प्रेम सों।
ताकर सकल बलाय, हरहु दरहु दारुण विपति॥

दोहा

'हनुमान लहरी' पढ़त, हिय धरि पवनकुमार।
सुजन दया करि दास पै, छमि हैं चूक अपार॥

श्री हनुमंत बीसा सिद्धि

प्राय: हनुमान उपासना और साधना के रूप में संकट निवारण हेतु **'हनुमान चालीसा'** का पाठ करना श्रेयस्कर माना जाता है। यहां हम पाठकों के लिए इससे भी ज्यादा सहज उपाय के रूप में **'श्री हनुमंत बीसा प्रयोग'** बता रहे हैं। इस बीसा का विधिवत् प्रयोग करने से जहां एक ओर साधक के समस्त कष्टों का सहज में ही निवारण हो जाता है वहीं दूसरी और इसकी नियमित साधना करते रहने से साधक को अनेकानेक अद्‌भुत और चमत्कारी पारलौकिक शक्तियां सहज में ही प्राप्त हो जाती हैं। योगीराज यशपाल भारती ने ''हनुमंत बीसा'' की रचना की थी जिसका प्रभाव भी हनुमान चालीसा की भांति ही है। किंतु स्थानाभाव के कारण उसे यहां प्रकाशित नहीं किया जा सका।

विधि-श्री हनुमंत बीसा की जप विधि अत्यंत ही सहज और सरल है। परन्तु सावधानीपूर्वक विधि-विधान से प्रयोग करना अवश्य ही अपेक्षित है।

सर्वप्रथम किसी भी मंगलवार को **'श्री हनुमंत बीसा यंत्र'** को बनाकर एक फ्रेम में जड़वा लें। अब किसी साफ-सुथरे स्थान पर एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर इस बीसा यंत्र को स्थापित कर दें। फिर माता जानकी (सीता) एवम् श्रीरामचंद्र भगवान की तस्वीर स्थापित करके पहले उनका पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् सवा पाव का आटे का रोटड, दो लड्डू, पताका, लंगोट, जनेऊ, खड़ाऊँ, एक नारियल (जटादार), सिंदूर, चमेली का तेल तथा सवा रूपया किसी हनुमान मंदिर में जाकर हनुमान जी की प्रतिमा को अर्पण कर दें। अब घर आकर बीसा यंत्र का पंचोपचार पूजन करें। पूजन के समय हनुमान बीसा मंत्र का लगातार जाप करते रहें। (साधना उत्तराभिमुख होकर तथा लाल कम्बल के आसन पर बैठकर ही करें।) (साधनाकाल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें।)

अब लयपूर्वक श्री हनुमंत बीसा मंत्र का सस्वर पाठ आरम्भ करें। पाठ समाप्ति पश्चात् वहीं सो जावें। इस प्रकार यह क्रिया बीस दिनों तक निरंतर करें। इक्कीसवें दिन हवन क्रिया करें जिसमें श्री हनुमंत बीसामंत्र का पाठ करते हुए इक्कीस आहुतियां देवें। इक्कीस ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान-दक्षिणा देवें तथा अखण्ड रामायण का पाठ भी करावें।

इस प्रकार से विधिपूर्वक अनुष्ठान करने से साधक के समस्त संकटों का निवारण अवश्य ही हो जाएगा। यह एक सिद्ध अनुभूत सफल प्रयोग है।

श्री हनुमंत बीसा यंत्र

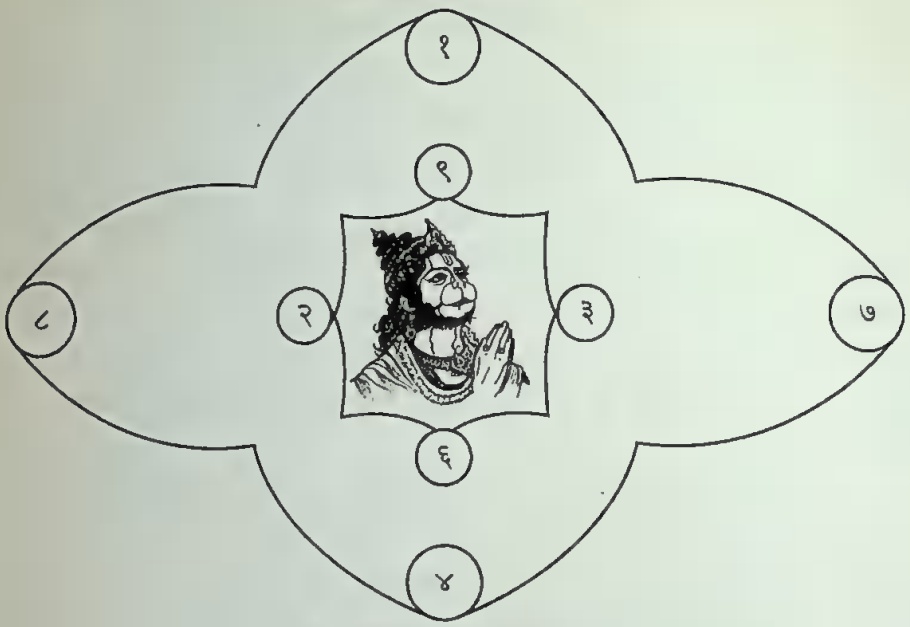

श्री हनुमंत बीसा मंत्र

"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रों ह्रः श्री हनुमन्ते नमः रं राम भक्त हं हनुमन्ता सर्व सिद्धि प्रदः सर्व संकटादि नाशकः अं अंजनीपुत्र आंजनेय मम सहाय कुरू-कुरू स्वाहा॥"

श्री हनुमान चालीसा अनुष्ठानम्

सर्वकार्य सिद्धि हेतु '**श्री हनुमान चालीसा अनुष्ठानम्**' एक सरल व शीघ्र फलदायी तन्त्र साधना है। पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ यदि इस साधना को विधिपूर्वक सम्पन्न किाय जावे तो वांछित फल की प्राप्ति अवश्य होती है। इस साधना को विधिपूर्वक सम्पन्न किया जावे तो वांछित फल की प्राप्ति अवश्य होती है।

श्री हनुमान चालीसा के अनुष्ठान से साधक की मनोकामना पूरी होती है, पर हनुमान जी से स्त्री की मांग या विवाह की प्रार्थना नहीं करनी चाहिये। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, विद्या, बुद्धि, शत्रु नाश, आजीविका लायक धन प्राप्ति की प्रार्थना करने पर हनुमान जी अवश्य साधक की कामना पूर्ण करते हैं।

श्री हनुमान चालीसा अनुष्ठान के लिये यदि हनुमान चालीसा याद नहीं है तो

सबसे पहले 50-100 पढ़कर याद कर ले। फिर किसी मंगलवार या शनिवार को यह अनुष्ठान कर सकते हैं। अनुष्ठान के दिन आसन बिछाकर श्री हनुमान जी तथा श्रीराम पंचायत के चित्र स्थापित करे और उनका पंचोपचार (पांच प्रकार से) या षोडशोपचार (सोलह प्रकार से) विधि से पूजन करें। हनुमान जी को कन्दमूल फल तथा मिष्ठान में मोतीचूर के लड्डू, बेसन की बनी वस्तुयें, रोट, पुऐ आदि प्रिय हैं और सिन्दूर का तिलक और लाल रंग की लंगोट प्रिय है। साधक के वस्त्र भी लाल रंग के हों तो उत्तम है।

फिर आचमन, प्राणायाम, आवाहन, संकल्प-हनुमान चालीसा का 108 पाठ करने का करे। यह सब करने के पश्चात् श्री हनुमान जी का ध्यान करें-

अतुलित बलधामं हैमशैलाभ देहं।
दनुजयनकृशानु ज्ञानिनामग्रगण्यम्॥
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं।
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

अतुल बल के धाम, सोने के पर्वत (सुमेरू) के समान कीर्तियुक्त शरीर वाले, दैत्यरूपी वन को ध्वंस करने के लिये अग्नि रूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी, श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त श्री हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

फिर हनुमान चालीसा की प्रत्येक चौपाई के साथ 'स्वाहा' लगाकर हवन करें। हवन के पश्चात् हनुमान चालीसा का पाठ प्रारंभ करे।

श्री हनुमान चालीसा

।। दोहा ।।

श्री गुरू चरन सरोज रज, निज मनुमुकुर सुधारि।
बरनऊँ रघुवर विमल जसु, जो दायक फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु क्लेश विकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।।
महावीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन विराज सुवेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
शंकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग वन्दन।।
विद्यावान गुणी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे।।
लाय संजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो यश गावै। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गए अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। हे परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस वर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसाँई। कृपा करहु गुरूदेव की नाईं।।
जो शत बार पाठ कर कोई। छूटहिं बंदि महासुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजे नाथ हृदय महँ डेरा।।

।। दोहा ।।

पवनतय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

अथ श्री हनुमत् साठिका

महावीर हनुमान की उपासना करने की यूं तो अनेकानेक विधियां प्रचलित हैं। जिसमें '**हनुमान चालीसा**' का पाठ करना सर्वाधिक सरल और प्रबल उपाय माना जाता है। चालीसा में चालीस दोहों के अंतर्गत अराध्य देव की महिमा का गुणगान किया जाता है। '**हनुमान चालीसा**' की भांति '**हनुमान साठिका**' भी होती है। साठ अर्द्धालियों की साठिका में साठ पंक्तियों में हनुमान जी की महिमा का बखान किया गया है। अतएव इसे चालीसा से भी कई गुना शक्तिशाली माना गया है। इस '**साठिका**' का नियमित पाठ करने से समस्त कष्ट व्याधियों का निवारण हो जाता है। हनुमान जी की प्रतिमा अथवा तस्वीर के समक्ष धूपबत्ती तथा घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन सायं '**हनुमान साठिका**' का नियमित पाठ करने वाला व्यक्ति हनुमान जी की विशेष कृपा प्राप्त करता है और अनेक सिद्धियों का स्वामी बन जाता है।

हनुमान साठिका

चौपाइयाँ

जय जय जय हनुमान अडंगी, महावीर विक्रम बजरंगी।
जय कपीश जय पवन कुमारा, जय जगबंदन शील आगारा॥
जय आदित्य अमर अविकारी, अरि मरदन जय-जय गिरधारी॥
अंजनि उदर जन्म तुम लीन्हा, जय जयकार देवतन कीन्हा॥
बाजै दुन्दुभि गगन गम्भीरा, सुर मन हर्ष असुर मन पीरा॥
कपि के डर गढ लंक सकानी, छूटि बन्दि देवतन जानी॥
ऋषि समूह निकट चलि आये, पवन तनय के पद सिर नाये॥
बार बार अस्तुति करि नाना, निर्मल नाम धरा हनुमांना॥
सकल ऋषिन मिलि अस मत ठाना, दीन बताय लाल फल खाना॥
सुनत वचन कपि मन हर्षाना, रविरथ उदय लाल फल जाना॥
रथ समेत कपि कीनि अहारा, सूर्य बिना भये अति अंधियारा॥
विनय तुम्हार करैं अकुलाना, तब कपीरा की अस्तुति ठाना॥
सकल लोक वृत्तान्त सुनावा, चतुरानन तब रवि उगलावा॥
कहा बहोरि सुनो बलशीला, रामचन्द्र करि हैं बहुलीला॥
तब तुम उन कर करव सहाई, अबहीं बराहु कानन में जाई॥
अस कहि विधि निजलोक सिधारा, मिले सखा संग पवनकुमारा॥

खेलें खेल महा तरू तोरें, ढेर करें बहु पर्वत फोरें॥
जेहि गिरिचरण देहि कपि धाई, गिरि समेत पातालहिं जाई॥
कपि सुग्रीव बालि को त्रासा, निरख रहे राम धनु आसा॥
मिले राम तहं पवन कुमारा, अति आनन्द सप्रेम दुलारा॥
मणि मुंदरी रघुपति सो पाई, सीता खोज चले सिर नाई॥
शत योजन जलनिधि विस्तारा, अगम अपार देवतन हारा॥
जिमि सर गोखुर सरिस कपीशा, लांघि गये कपि कहि जगदीशा॥
सीता चरण सीस तिन नाये, अजर अमर के आशिष पाये॥
रहे दनुज उपवन रखवारी, एक से एक महाभट भारी॥
जिन्हें मारि पुनि कहेउ कपीसा, दहेउ लंक कोप्यो भुज बीसा॥
सिया बोध दैं पुनि फिर आये, रामचंद्र के पद सिर नाये॥
मेरु उपारि आपु छिन माहीं, बांधे सेतु निमिष इक माहीं॥
लक्ष्मण शक्ति लागी जबहीं, राम बुलाय कहा पुनि तबहीं॥
भवन समेत सुखेण लै आये, तुरत सजीवन को पुनि धाये॥
मग महं कालनेमि कह मारा, अमित सुभट निशिचर संहारा॥
आनि सजीवन गिरि समेता, धरि दीन्हीं जहं कृपा निकेता॥
फनपति केर शोक हरि लीना, वर्षि सुमन सुर जय जय कीना॥
अहिरावण हरि अनुज समेता, ले गयो तहां पाताल निकेता॥
जहां रहे देवी अस्थाना, दीन चहै बलि काढि कृपाना॥
पवन तनय प्रभु कीन गुहारी, कटक समेत निशाचर मारी॥
रीछ कीशपति सबे बहोरी, राम लखन कीने इक ठोरी॥
सब देवतन की बन्दि छुड़ाये, सो कीरति मुनि नारद गाये॥
अक्षय कुमार दनुज बलवाना, सानकेतु कहं सब जग जाना॥
कुम्भकरण रावण कर भाई, ताहि निपात कीन्ह कपि राई॥
मेघनाद पर शक्ति मारा, पवन-तनय तब सों बरियारा॥
रहा तनय नारान्तक जाना, पल मंह ताहि हते हनुमाना॥
जहं लगि मान दनुज कर पावा, पवन-तनय सब मारि नसावा॥
जय मारुत-सुत जय अनुकूला, नाम कुशानु शोक सम तूला॥
जह जीवन पर संकट होई, रवि तम सम सों संकट खोई॥
बन्दि परै सुमिरै हनुमाना, संकट कटै धरै जो ध्याना॥
जाको बांध बाम पद दीन्हा, मारुत सुत व्याकुल बहु कीन्हा॥
जो भुजबल का कीन कृपाला, आछत तुम्हें मोर यह हाला॥
आरत हरन नाम हनुमाना, सादर सुरपति कीन बखाना॥
संकट रहै न एक रती को, ध्यान धरे हनुमान जती को॥

धावहु देखि दीनता मोरी, कहौं पवनसुत युगकर जोरी॥
कपिपति बेगि अनुग्रह करहू, आतुर आई दुसह दुख हरहू॥
राम शपथ में तुमहिं सुनाया, जवन गुहार लाग सिय जाया॥
पैज तुम्हार सकल जग जाना, भव-बंधन भंजन हनुमाना॥
यह बंधन कर केतिक बाता, नाम तुम्हार जगत सुख दाता॥
करौ कृपा जय जय जगस्वामी, बार अनेक नमामि नमामि॥
भौमवार कर होम विधाना, सुन नर मुनि वांछित फल पावै॥
जयति जयति जय जय जग स्वामी, समरथ पुरुष सुअन्तर जामी॥
अंजनि तनय नाम हनुमाना, सो तुलसी के प्राण, समाना॥

॥ दोहे॥

जय कपीश सुग्रीव तुम, जय अंगद हनुमान।
राम लखन सीता सहित, सदा करौ कल्यान॥
बन्दौं हनुमत नाम यह, मंगलवार प्रमाण।
ध्यान धरै नर निश्चय, पावै पद कल्याण॥
जो नित पढ़ै यह साठिका, तुलसी कहैं विचारि।
रहै न संकट ताहि को, साक्षी हैं त्रिपुरारि॥

श्री बजरंग चालीसा

हनुमान चालीसा की भांति ही बजरंग चालीसा का महत्व और प्रभाव समान रूप से प्रभावशाली होता है।

॥ दोहा॥

बजरंगी तुम्हरो नाम है, पवनपुत्र हनुमान।
कृपा कीजिए नाथ अब, दास आपुनो जान॥

अनुपम वीर अंजनी नन्दन, खल दल नाशक दुष्ट निकन्दन।
पवन-पुत्र वीर बजरंगी, सियाराम भक्तन कर संगी।
रघुनायक पावन गुण गायक, शिव अवतार जगत सुखदायक।
तन विशाल पर सिन्दुर सोहत, लाल लँगोट भक्त मन मोहत।
भाल तिलक सिर मुकुट विराजत, कानन कुण्डल जगमग शोभित।
कर विशाल अरू पिंगल लोचन, दशनकुलिश सम दुःख विमोचन।
हस्त गदा धवला गिरि धारण, ब्रह्मसूत्र पर सुभग सँवारण।
रामभक्त तनु परम विशाला, उर शुचि सीय समर्पित माला।

बज्र अंग वर-निधि बल-सागर, अजर अमर गुणज्ञान विशारद।
बाल ब्रह्मचारी बल धामा, महिमा विश्व विदित अभिरामा।
जन्मत लपकि ग्रस्यो रवि जाई, अन्धकार चहुँ दिशि जग छाई।
सुर मुनि तब बहु विनती कीन्हयो, तब प्रभु आप उगल रवि दीन्हयो।
जबहिं दुखित सुग्रवहिं जान्यो, राम मिलाये अगम सुख मान्यो।
तुहिं कपि सिन्धु लांघ गए ऐसे, छोटी-सी नाली हो जैसे।
सूक्ष्म रूप तजि जब तुम गर्जे, प्रलयकाल जनु बादल गर्जे।
सुरसा जीत सिन्ध भये पारा, मुष्टि प्रहार लकनिहिं मारा।
जाय विभीषण दर्शन दीयो, रघुपति भक्त परम हित कीयो।
सीता की सुधि लीन्ही जाकर, आयसु मांगि विपिन फल खाकर।
तरूहिं तोरि किया युद्ध अपारा, अक्षय कुमार आदि संहारा।
लूम फिराय चढ़े गढ़ लंका, तनिक नहीं लाए मन शंका।
वीरन मार रावण तड़पायो, लाह बनाकर लंक जलायो।
चूड़ामणि सीता से लीनी, हर्ष सहित रघुपति को दीनी।
पहले वैद्य फिर संजीवनी लाए, लखण जिआय राम हर्षाए।
अहिरावण प्रभु को हर लीना, जा पातल मार उसे दीना।
रामलखण निज कन्ध चढ़ायो, सब सेना के हृदय सुख छायो।
निज हिय माल तोरि बिखरायो, रोम-रोम रामहिं दिखलायो।
परथ-रथ चढ़ि विजय करायी, देवन तब दुन्दुभी बजायी।
भीम का मद चूर किया पल में, कौन जीत सके है बल में।
श्री बजरंग हनहुँ अरि तुरन्ता, गदा बज्र से धाहु हनुमन्ता।
श्री बजरंग चरित जो ध्यावत, अष्ट सिद्धि नव निधि वह पावत।
श्री हनुमते नमः जो जापत, ताहि कोई व्याधी नहीं व्यापत।
जय गिरिधर रघुपति पर किंकर, करण शमन सब रोग भयंकर।
नमो नमामि दुष्ट-ग्रह-गञ्जन, अञ्जनि नन्दन सर्व-भय भञ्जन।
जय बलवन्त भक्त जन रक्षक, भूत प्रेत दानव-दल-तक्षक।
काटहु बन्धन अलख निरंजन, अरि बल खण्डहु खलदल गंजन।
पुनि-पुनि विनवहुँ पद धर शीशा, एक तुम्हारहिं आस कपीशा।
करहु नाथ मम कष्ट विमोचन, संकट काटहु संकट मोचन।
जन दुख हरहु राम पद पायक, करहु कृपा सिय हिस सुख दायक।
उठहु वेगि अब हे! कपिराजा, चलहु करहु पूरन जन काजा।
हरहु विपति प्रभु मुझ अनाथ की, जय बोलूं बजरंग बली की।

॥ दोहा ॥

यह बजरंग चालीसा, पाठ करे धरि ध्यान।
हों पूर्ण सब कामना, बढ़े जगत में मान॥

आरती श्री हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांके।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥१॥
दे बीरा रघुनाथ पठाए। लंका जारि सिया सुधि लाए॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जाप पवनसुत बार न लाई॥२॥
लंका जारी असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे॥३॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्राण उबारे॥४॥
पैठि पाताल तोरि जमकारे। अहिरावण की भुजा उखारे॥५॥
बाएं भुजा असुरदल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे॥६॥
सुर नर मुनिजन आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारें॥७॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई॥८॥
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ पर पद पावै॥९॥

हनुमान सिद्धि प्राप्त करने का सर्वाधिक प्रभावशाली उपाय
पारद शिवलिंग

श्री हनुमान जी इस परम गुह्य विद्या पारद साधना के योगी साधक थे और उन्होंने पारद शिवलिंग के अनन्थ प्रयोग भी किये थे।

लिंगकोटिसहस्त्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाभ्दवेत॥
ब्रह्महत्या सहस्त्राणि गौहत्यायाः शतानि च।
तत्क्षणाद्विलयं यांति रसलिंगस्य दर्शनात्॥
स्पर्शनात्प्राप्यत मुक्तिरिति सत्यं शिवोदितम्।

अर्थात्–करोड़ों शिवलिंगों के पूजन से जो फल प्राप्त होता है, उससे भी कई करोड़ गुना अधिक फल रसंलिंग (पारद शिवलिंग) की पूजा और उसके दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है। हजारों ब्रह्म हत्याओं और सैंकड़ों गौहत्याओं के पाप तो पारद शिवलिंग के दर्शन मात्र से ही दूर हो जाते हैं। पारद शिवलिंग (रसलिंग) के स्पर्श मात्र से मोक्ष प्राप्ति होती है। ऐसे सत्य वचनों को स्वयं श्री महादेव जी ने कहा है।

शिव तथा शक्ति दोनों के संयोग से ही सृष्टि का निर्माण होता है, इसी का प्रतीक शिवलिंग है। भारतवर्ष में द्वादश ज्योर्तिलिंगों का विशेष महत्त्व है। शिवलिंग की पूजा सिद्धिदायक होती है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों, शास्त्रों तथा पुराणों में पारद शिवलिंग की पूजा को ही सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। इस समग्र ब्रह्माण्ड में सर्वश्रेष्ठ दिव्य वस्तु के रूप में पूजित रससिद्ध पारद शिवलिंग के प्रभाव से समस्त दैहिक, दैविक और भौतिक प्रगति स्वयं सिद्ध हो जाती है। रसलिंग (पारद शिवलिंग) का नित्य पूजन और दर्शन करने से "धर्मार्थ काम मोक्षाणाम् आरोग्यं प्रदायकं"–अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के साथ आरोग्यता की प्राप्ति सहज में हो जाती है।

पारद एक विशिष्ट तरलरूपी धातु है और स्वयंसिद्ध पदार्थ है। यह धातु भी है तथा द्रव्य भी है। विशिष्ट शास्त्रोक्त व तांत्रोक्त गोपनीय विधियों से अनेक संस्कार

युक्त पारद शिवलिंग का निर्माण किया जाता है। कहा गया है कि यदि पारा सिद्ध हो जाए और उसका विग्रह(पारद लिंग) बनाकर विधिवत् पूजनादि किया जावे तो संसार भर में से रोग-दोष, द्वैष तथा दरिद्रता से सहज मुक्ति प्राप्त होती है।

पारद की उत्पत्ति भोलेनाथ शंकर के वीर्य (रस) से हुई है। इस पारद की प्रशंसा में देवतुल्य मनीषियों, महर्षियों और रससिद्ध आचार्यों ने साठ से भी अधिक दुर्लभ ग्रन्थों की रचना की है। अशुद्ध और दोषी पारा विभिन्न संस्कारों द्वारा शोधित हो जाने पर दैव-सिद्धि, देह-सिद्धि और लौह-सिद्धि प्रदायक होता है। विशिष्ट विधि से संस्कारित इस अद्भुत पारद को बंधित करके जिस देवी-देवता का विग्रह बनाया जाता है। वह स्वयं सिद्ध और चमत्कारी होता है।

पारद के तांत्रोक्त बाईस संस्कार माने गये हैं किंतु प्रचलित मान्यता के अनुसार अट्ठारह संस्कार माने जाते हैं। सम्पूर्ण अट्ठारह संस्कार युक्त पारा - 'पारस' में परिवर्तित होकर लौह-सिद्ध अर्थात् लोहे को सोने में बदल देने वाला बन जाता है। किंतु आधुनिक काल में इन सम्पूर्ण अट्ठारह संस्कारों का ज्ञाता रसायन योगी कोई नजर में नहीं आया।

'रत्न समुच्चय' में पारद शिवलिंग की अपार महिमा के विषय में विषद् उल्लेख है कि पारदेश्वर विग्रह की नियमित आराधना करने से समस्त रोग-दोषादि का नाश होता है। इस ग्रन्थ के अनुसार मानव को वृद्धावस्था में रोग-रहित रखने मेंकोई भी वनस्पति या धातु समर्थ नहीं है क्योंकि सभी वस्तुएं पानी में गीली होती हैं, आग में जलती हैं, ताप से सूखती हैं। किन्तु पारद ही एकमात्र वस्तु है जो इन सबसे प्रभावित नहीं होता है। यदि पारद को विशेष प्रक्रिया से बांधकर, स्थिरिकरण प्रदान करने में सक्षम हो जाएं तो वह अमृत हो जाता है और इस बद्ध पारद के द्वारा शिवलिंग का निर्माण किया जाए तो ऐसे रससिद्ध पारदेश्वर विग्रह की आराधना करने वाले साधक को विद्या, बुद्धि, धन-सम्पत्ति, सुख-शांति, समृद्धि, ऐश्वर्य, लोकप्रियता और समस्त सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती है।

'रसेन्द्र चूड़ामणि' के अनुसार 'रस-रस' ऐसा कहने मात्र से ही मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। विशुद्ध तथा प्रबल ऊर्जावान पारद शिवलिंग के दर्शन कर कल्याणप्रद धर्म को प्राप्त करता है। विशेष शास्त्रीय तथा तांत्रोक्त विधियों से बद्ध पारद द्वारा निर्मित पारदेश्वर विग्रह (पारद लिंग) की नियमित पूजा-अर्चना करने वाले मनुष्य के लिए इस भौतिक जगत में कुछ भी अप्राप्य नहीं है। पारद रोगों को समाप्त करने वाला तथा दरिद्रता का नाश करने वाला है तथा सांसारिक मनुष्यों को, वृद्धावस्था नष्ट करके यह नवयौवन तथा नवजीवन प्रदान करता है। इसके साथ-साथ यह अष्टसिद्धियों को भी देने वाला है।

प्राचीनतम तांत्रिक ग्रन्थों के अनुसार करोड़ों शिवलिंगों की पूजा से जो फल प्राप्त होता है, उससे भी कई करोड़ गुनाफल पारदेश्वर विग्रह (पारद शिवलिंग) की नियमित पूजा-अभिषेक और दर्शन करने मात्र से ही सहज में प्राप्त हो जाता है।

भगवान भोलेनाथ महादेव शिव शंकर के शरीर से उत्पन्न हुए इस श्रेष्ठतम वीर्य रस पारद की तुलना ब्रह्माण्ड के किसी भी पदार्थ से नहीं की जा सकती है। पारद शब्द की व्याख्या करें तो प = विष्णु, अ = कालिका, र = शिव, तथा द = ब्रह्मा के बीजाक्षर आश्चर्यजनक चमत्कारिक तथा सिद्धि प्रदायक पदार्थों में पारद शिवलिंग का विशेष महत्त्व है। रससिद्ध पारद अष्टदोषादि से मुक्त, सप्त कंचुकिरहित, निर्मल, स्निग्ध तथा कांतिवान है।

भगवान शंकर को पारा अत्यधिक प्रिय है तथा रस राज पारद भोले बाबा का शक्ति रूपी विग्रह होने के कारण ही समस्त सुरासुर तथा देवी-देवताओं के लिए अनुकरणीय एवम् वन्दनीय है। इस अद्‌भुत तथा अलौकिक शक्ति सम्पन्न पारदेश्वर विग्रह को इन समस्त चमत्कारिक तथा अद्‌भुत गुणों के कारण ही पारदलिंग को मृत्युंजय तथा अमृतेश्वर भी कहा जाता है।

पारद शिवलिंग के दर्शन एवम् पूजनादि करने से मनुष्य को अति आनन्द की अनुभूति होती है एवम् समस्त सांसारिक बाधाओं से भी मुक्ति मिल जाती है, अर्थात् यह काया (दैहिक), वाणी (वाचिक) तथा मानसिक पापों को हरने वाला है। यह दैहिक, दैविक तथा भौतिक रोगों से रक्षा करता है। यह वात, पित्त तथा कफ जनित दोषों को भी दूर रखता है। यह सुख-शांति, समृद्धि, धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य, यश, कीर्ति, सफलता, विद्या, ज्ञान और बुद्धि प्रदान करने वाला है। अतएव ऐसे महिमा युक्त, दिव्य तथा अद्‌भुत अलौकिक गुण सम्पन्न तथा महिमामयी रसराज, रससिद्ध भगवान पारदेश्वर (पारद शिवलिंग) के नित्य दर्शन और पूजन सर्वश्रेष्ठ है। इससे जीवन आनंदमयी, निरोगी तथा धन-धान्य से भरपूर रहेगा और मनुष्य की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होंगी।

बागभट्ट के अनुसार जो मनुष्य पारदेश्वर विग्रह (पारदलिंग) की भक्ति पूर्वक पूजा-अभिषेक तथा नित्य दर्शन करता है, उसे तीनों लोकों में स्थित समस्त ज्योर्तिलिंगों एवम् शिवलिंगों के पूजन का फल मिलता है। इस अद्‌भुत तथा दिव्य पारद शिवलिंग का मात्र नित्य दर्शन करना ही महापुण्यदायी है। पारदेश्वर विग्रह के दर्शन से, सौ अश्वमेघ यज्ञ करने, करोड़ों गायों का दान करने तथा सहस्त्रों मन स्वर्णदान करने से भी अधिक फल मिलता है।

पारद शिवलिंग संसार में एक अद्वितीय, अलौकिक, अद्‌भुत, अकथनीय, अकल्पनीय, अवर्णनीय और अप्रत्याशित रूप से सहस्त्रों मन स्वर्णदान करने से भी अधिक फल मिलता है।

पारद शिवलिंग संसार में एक अद्वितीय, अलौकिक, अद्‌भुत, अकथनीय, अकल्पनीय, अवर्णनीय और अप्रत्याशित रूप से चमत्कारिक अत्यन्त दुर्लभ दिव्य वस्तु है।

इस मिथ्या संसार में बहुत कुछ है जो कि प्रयत्न करने पर मिल भी जाता है। लेकिन मंत्रसिद्ध, संस्कारित, चैतन्यवान, प्रबल ऊर्जावान तथा प्राण-प्रतिष्ठित युक्त दोष-मुक्त शुद्ध संस्कारित पारद से निर्मित पारद शिवलिंग का प्राप्त होना तो परम सौभाग्य का सूचक है।

प्रदोष व्रत काल और श्रावण मास में प्रत्येक सोमवार को प्रात: इस दिव्य पारद शिवलिंग की विशेष पूजा तथा लिंगाभिषेक करने से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। जहाँ पारदेश्वर विग्रह (पारदलिंग) है, वहां पर रिद्धि-सिद्धि, शुभ-लाभ, सुख-शांति, धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य, कीर्ति और स्वयं भू महालक्ष्मी का स्थायी निवास होता है। वहीं पर समस्त देवी-देवता और सिद्धियों वास होता है। यह अलौकिक पारद शिवलिंग जिस किसी भी घर, ऑफिस, दुकान, फैक्ट्री, व्यापार स्थल अथवा पूजा स्थल में स्थापित होता है और प्रतिदिन इसकी पूजा तथा अभिषेक किया जाता है, उस स्थान से अनिष्ट-आपदाएं, रोग-दोष, द्वैष-क्लेश, दरिद्रता और भूत-प्रेतादि ऊपरी बाधाएं स्वत: ही दूर रहती है। उस जगह पर किसी भी प्रकार के तांत्रिक प्रयोगों का दुष्प्रभाव कतई भी नहीं पड़ सकता है।

शताश्वमेद्येन कृतेन पुण्यं गौकोटिभी: स्वर्णसहस्प्रदानात्।
नृणां भवेत्सूतक दर्शनेन यत्सर्वतीर्थेषु कृताभिषेकात्॥

अर्थात्-जो पुण्य सौ अश्वमेघ यज्ञ करने से तथा करोड़ों गायों का दान करने से एवम् एक हजार तोला सोने का दान करने से तथा समस्त तीर्थों में स्नान करने से प्राप्त होता है। वही पुण्य पारद शिवलिंग के दर्शन मात्र से सहज में ही प्राप्त हो जाता है।

पारद शिवलिंग का पूजन सर्व कामप्रद, मोक्षप्रद तथा शिव स्वरूप बनाने वाला है। यह अद्भुत पारदलिंग समस्त पापों का नाश करके जीवों को संसार के समस्त सुख-ऐश्वर्य, वैभव तथा मोक्ष प्रदान करता है। इस अद्भुत शिवलिंग को घर, ऑफिस, दुकान, फैक्ट्री, कार्यालय, संस्थान, व्यापार स्थल अर्थात् किसी भी स्थान पर विधिपूर्वक स्थापित करके नित्य इस पारदेश्वर का दर्शन-पूजन करने से समस्त प्रकार के वास्तुदोष स्वयं ही समाप्त हो जाते हैं।

पारदयोगी महाबली लंकेश्वर रावण राज

पारदेश्वर शिवलिंग संसार का एक अद्वितीय और देवताओं की तरफ से मनुष्यों को मिला हुआ वरदान है। संत-महर्षियों ने कहा है कि सब कुछ प्राप्य है लेकिन शास्त्रोक्त विधि से सिद्ध, शोधित, संस्कारित तथा स्वर्णग्रास युक्त प्राण-प्रतिष्ठित यह स्वरूप मिलना अत्यन्त कठिन तथा सौभाग्य का ही सूचक है।

इस पारदलिंग के दर्शन मात्र से ही समस्त पापों का क्षय होकर, सौभाग्य जाग्रत होने लग जाता है। शास्त्रों के अनुसार परम प्रतापी, योगीराज महाबलशाली लंकेश्वर रावण तंत्र द्रष्टा, वैज्ञानिक, वेदपाठी, विद्वान पण्डित तो था ही, वह रससिद्धयोगी भी था और पारद शिवलिंग का निर्माता भी था। उसने इसकी पूजा-आराधना करके ही समस्त दिव्य शक्तियों तथा अकूत सम्पदा को प्राप्त किया और अपनी लंका को

स्वर्णमयी भी पारदेश्वर की कृपा से ही बना सका। इसलिए कि पारद से स्वर्ण निर्माण तब भी किया जाता है और आज भी किया जाता है।

स्वामी सच्चिदानंद के अनुसार जो भी व्यक्ति इस पारदराज की विधिपूर्वक स्थापना अपने घर, निवास, दुकान, फैक्ट्री, ऑफिस, फार्म हाऊस अथवा व्यापार स्थल में करके प्रतिदिन दर्शन-पूजन करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर अनेक सिद्धियों और धन-सम्पत्ति तथा ऐश्वर्यादि प्राप्त करके सुखशांति पाता है।

आधुनिक वर्तमान मशीनी युग में भी रससिद्द तथा प्रबल चैतन्यवान पारदेश्वर शिवलिंग चमत्कारी प्रभाव लिए एक श्रेष्ठ साधना तथा आश्चर्यजनक रूप से शीघ्र सफलतादायी सहज उपाय है।

पारद शिवलिंग के अनुभूत प्रयोग

पारद शिवलिंग का महत्त्व, इसकी विशेषताओं तथा इसके प्रयोगों के विषय में यदि विस्तारपूर्वक वर्णन किया जावे तो एक विशाल ग्रन्थ तैयार हो सकता है। तथापि कुछेक अनुभूत प्रयोगों का संक्षिप्त वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। इन प्रयोगों को अनेकों लोगों पर सफलतापूर्वक परीक्षण करने के पश्चात् पूर्ण विश्वास के साथ यहां प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि पाठक हमारे अनुभवों से लाभ प्राप्त कर सकें।

विवाह बाधा निवारण हेतु प्रयोग

विवाह न हो पाने अथवा विवाह में अनावश्यक विलम्ब या बाधा उत्पन्न होने की समस्या हरेक परिवार में बनी हुई है। घर में अविवाहित लड़का अथवा लड़की के विवाह बाधा निवारणार्थ मंत्रसिद्ध चैतन्य पारदलिंग को घर के पूजा-स्थल में विधिपूर्वक स्थापित करके अविवाहित जातक शीघ्र विवाह की कामना के साथ इक्कीस दिनों तक पारद शिवलिंग की पूजा-उपासना, आराधना तथा अभिषेक करते हुए श्रद्धापूर्वक साधना करे तो चमत्कारी रूप से विवाह सम्बन्ध तय हो सकता है।

तांत्रिक दोष निवारण हेतु प्रयोग

कई बार ईर्ष्यावश, लोगवश, द्वैषवश अथवा अन्य किसी भी दुर्भावनावश कोई शत्रु अथवा प्रतिद्वन्दी अभिचार-कर्म या तांत्रिक प्रयोग (टोना-टोटका) करा देते हैं, जिसके कारण जन-धन हानि, आर्थिक-मानसिक तथा शारीरिक पीड़ा और मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करते हुए जीवन नरक समान हो जाता है। यदि आपको लगता है कि ऐसा ही कुछ आपके साथ भी हुआ है तो आप शीघ्र ही मंत्र सिद्ध, चैतन्य, प्रबल ऊर्जावान पारद शिवलिंग को घर में स्थापित करके योग्य ब्राह्मणों से उस पर रूद्राभिषेक करवाकर नित्य पूजा-उपासना करना आरंभ कर देवें। चूंकि समस्त भूत-प्रेतादि बाधाएं तथा अवायवीय दुष्ट शक्तियां स्वयं शिव के अधीन हैं। अतएव पारदलिंग की साधना से आपके ऊपर किये गये तांत्रिक प्रयोग का दुष्प्रभाव तत्काल समाप्त हो जाएगा।

धन-सम्पत्ति, सुख-समृद्धि, ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु प्रयोग

आधुनिक युग में मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता और आकांक्षा एकमात्र धन ही है। प्रबल चैतन्यवान मंत्रसिद्ध पारदलिंग पर प्रतिदिन दुग्ध मिश्रित जल का अभिषेक करते हुए नियमित श्रद्धापूर्वक निम्नांकित मंत्र का अधिकाधिक जाप मंत्रसिद्ध रूद्राक्ष माला से करने से आर्थिक अभाव तथा दरिद्रता दूर होकर अप्रत्याशित रूप से धन का आगमन होने लग जाता है।

ॐ ह्रीं तेजसे श्रीं कामसे क्रीं पूर्णत्व सिद्धिं देहि पारदाय क्रीं श्रीं ह्रीं ॐ॥

तीनों महादेवीयों (यथा : ह्रीं = दुर्गा, श्रीं = महालक्ष्मी तथा क्रीं = कालिका) की शक्तियों तथा बीजाक्षरों से युक्त यह मंत्र स्वयं सिद्ध तथा मनोकामना सिद्धि के लिए अत्यन्त प्रभावी माना गया है।

पारद शिवलिंग की उपासना विधि

पारदेश्वर शिवलिंग की पूजन विधि सहज और सरल होने के साथ-साथ शीघ्र फलदायी भी है।

किसी भी सोमवार अथवा गुरूवार के दिन किसी पवित्र स्थान अथवा पूजा-स्थल पर पारद शिवलिंग को स्थापित करके जल, दुग्ध तथा पंचामृत से स्नानादि करवाकर पंचोपचार पूजन (गंध-पुष्प-धूप-दीपक-नैवेद्य) करके श्रद्धापूर्वक बिल्वपत्र, आक, धतूरा इत्यादि चढ़ावें तथा प्रतिदिन मंत्रसिद्ध चैतन्य रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र का 108 दफा जाप करने से कुछ ही दिनों में आश्चर्यजनक रूप से चमत्कारिक अनुभूति होने लगती है। मंत्र इस प्रकार से है-

ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भू भुर्वः स्वः ॐ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् उर्वारूकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौं ॐ॥

समग्र ब्रह्माण्ड की सर्वाधिक प्रभावशाली दिव्य वस्तु पारद शिवलिंग प्रत्येक हिन्दू परिवार के लिए एक अत्यंत आवश्यक और अनिवार्य धरोहर है। हमने रससिद्ध पारद शिवलिंग के अनेकों सफल प्रयोग स्वयं भी किये तथा अन्य लोगों को भी कराकर आशानुकूल परिणाम प्राप्त किये हैं।

जो व्यक्ति जीवन में निरंतर असफलताएं प्राप्त करके निराश हो चुके हों तथा जीवन में उत्तरोत्तर प्रगति के प्रबल आकांक्षी हों तो उन्हें अपने घर, दुकान, फैक्ट्री

अथवा ऑफिस में इस अद्‌भुत, मंत्रसिद्ध, चैतन्य तथा प्रबल ऊर्जावान पारद शिवलिंग को विधिपूर्वक स्थापित करके इसका नियमित दर्शन तथा पूजनादि करके मनोवांछित लाभ अवश्य उठाना चाहिए। कलियुग में पारदेश्वर शिवलिंग से अधिक प्रभावी तथा चमत्कारी दिव्य वस्तु और कोई भी नहीं है।

- विशेष -

इस प्रकार का मंत्र सिद्ध चैतन्य प्रबल ऊर्जावान रससिद्ध पारद शिवलिंग प्राप्त करने में यदि आपको कठिनाई महसूस हो तो सीधे ही लेखक से पत्र-व्यवहार करके नियमानुसार इस रससिद्ध पारदेश्वर विग्रह को प्राप्त किया जा सकता है।

जब हनुमानजी ने पारद शिवलिंग का प्रयोग किया

श्री हनुमानजी ने नारद से कहा, "अब सावधान होकर बैठो वत्स! मैं पूजा आरम्भ करता हूँ। सामग्री रत्नमय स्वर्ण-पात्र में स्वयमेव उपस्थित होती रहेगी। तुम उपयोग करते रहना। सभी देवताओं की स्थापना के लिए अलग-अलग मंडप या आसन की आवश्यकता नहीं है। तुम एक सीधा और एक उल्टा त्रिकोण विग्रह बना दो।"

नारद जी ने झट से दो त्रिकोण बना दिये। फिर आचार्य ने एक पारद शिवलिंग का आवाहन किया। तत्काल उनकी हथेली पर दीप्तिमान पारद शिवलिंग प्रकट हो गया। वह लंवगोलाकार हरित नील स्वर्णिम आभायुक्त तथा शुभ तुषार के मूल रंग का था। उसको स्थापित करने के लिए आचार्य ने एक हिंगल (गंधक) के आसन की इच्छा की। वह भी शीघ्र उपस्थित हो गया। पारद लिंग की विशेषता यह है कि इसमें सभी देवताओं की पूजा हो जाती है, जैसे गौरी-गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र, वरुण, यम, कुबेर, नवग्रह, षोडश मातृकाएँ, अष्ट वसु, द्वादश आदित्य, चन्द्र आदि। इसकी प्राण प्रतिष्ठा करने की आवश्यकता कभी नहीं पड़ती, क्योंकि इसमें महामाया छिन्नमस्ता तथा भगवान महाकाल सदा स्थिर रहते हैं।

आचार्य ने सर्वप्रथम श्री गणेशजी की, फिर एक-एक करके समस्त देवी-देवताओं की पूजा उसी पारद लिंग में यजमान से कराई। तत्पश्चात् उन्होंने भक्ति-भावपूर्वक मंत्रोच्चार आद्यशक्ति महामाया छिन्नमस्ता देवी का आह्वान किया। तत्काल आसन रूप हिंगल (गंधक) द्रवित होकर ऊपर की ओर उठा और पारद लिंग के चारों ओर लिपटता हुआ उसके ऊपर स्वयं एक ऐसा विग्रह बन गया, जिससे आभास होता था कि वह पारद लिंग को अपने में लील जाने का प्रयत्न कर रहा है।

हनुमान की कृपा प्राप्ति हेतु

सिद्ध हनुमान माला

हनुमान जी को 'मूंगे की माला' सर्वाधिक प्रिय है और यही कारण है कि हनुमत् उपासना करने वाले साधक व तांत्रिक महावीर हनुमान की कृपा प्राप्ति हेतु मूंगे की माला धारण किये हुए रहते हैं।

वर्तमान भौतिकवाद के युग में भाग-दौड़ की जिंदगी के चलते जब मनुष्य अपने इष्टदेव की विधि विधान से पूजा-उपासना करने में भी असमर्थता महसूस करता है तो किसी ऐसे सरल-सुलभ साधन की आवश्यकता महसूस होती है जिससे इष्टदेव की कृपा बनी रहे।

हमारे केन्द्र ने इन्हीं सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए शुद्ध व असली मूंगे के दानों से **'सिद्ध हनुमान माला'** की विधिपूर्वक निर्मित करके प्राण-प्रतिष्ठा करके अनेकों दफा सफलतापूर्वक प्रयोग किये हैं। इस सिद्ध माला को धारण करने वाले पर हनुमान जी की असीम कृपा बनी रहती है। हनुमान जी की कृपा प्राप्ति एवं सर्वकामना सिद्धि हेतु इस अद्‌भुत माला को अवश्य धारण करना चाहिए।

घर बैठे आप भी पुण्य कमाइये

क्या आप अपने पूर्वजों की विद्यारूपी अमूल्य धरोहर को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाकर अपने पूर्वजों का नाम युगों-युगों तक अमर करने के इच्छुक हैं ? यदि हां, तो इस पावन-पुनीत कार्य में हम आपको पूर्ण रूप से सहयोग करेंगे।

यदि आपके पास ज्योतिष-अंक ज्योतिष-हस्तरेखा विज्ञान-तंत्र-मंत्र-यंत्र-रत्न शास्त्र-वास्तु शास्त्र-रमल शास्त्र-सामुद्रिक शास्त्र-प्रश्न फल ज्योतिष-अंगलक्षण विद्या-मुखाकृति विज्ञान-पांव रेखा शास्त्र-मस्तक विद्या-सम्मोहन-अलौकिक साधना-महाविद्या-वशीकरण साधना-शाबर मंत्र शास्त्र-इन्द्रजाल-गण्डे-ताबीज-टोने-टोटके-स्वप्नफल विज्ञान-नाड़ी ज्योतिष-शकुन अपशकुन-बौद्ध तंत्र-जैन तंत्र-मुस्लिम तंत्र-सिक्ख तंत्र-इल्मेनजूम-काला जादू-मैस्मेरिज्म-फेंगशुई-चीनी ज्योतिष-अफ्रीकी जादू-फलित ज्योतिष इत्यादि किसी भी धर्म, मजहब तथा देश की कोई भी अलौकिक विद्या से संबंधित अनुपयोगी अथवा पुराना ग्रन्थ, मैग्जीन, पुस्तक, पाण्डुलिपि, हस्तलिखित ग्रन्थ अथवा उक्त विषयों पर आधारित अन्य कोई प्रकाशित/अप्रकाशित सामग्री जिसका आप उपयोग नहीं कर पा रहें हों तो कृपया आप उसे हमें सौंपियें। हम उसका 'सर्वजन: हिताय' सदुपयोग करेंगे।

आपकी इस पहल से अन्यानेक लाखों लोग लाभान्वित हो सकते हैं तथा जो व्यक्ति इस प्रकार के ग्रंथ स्वयं खरीद पाने में सक्षम नहीं हैं उन्हें भी इससे फायदा हो सकता है। जो ज्ञान अब तक आपके पास ग्रंथ/पुस्तकाकार रूप में निरर्थक छिपा हुआ पड़ा है, यदि आप उस सामग्री को हमें सौंपे तो हमारे माध्यम से इस ज्ञान से पूरा देश ही नहीं अपितु पूरा विश्व परिचित होकर लाभ उठा सकता है। आपके द्वारा किया गया यह विद्यादान का पुण्य अश्वमेघ यज्ञ से प्राप्त पुण्य से भी कहीं अधिक होगा। इस महादान को करके आप भी घर बैठे पुण्य कमा सकते हैं और हमारे महान उद्देश्य में अपना सार्थक योगदान दे सकते हैं।

कृप्या अपनी ग्रन्थ/पुस्तक सामग्री हमें निम्न पते पर भिजवाएं-

फ्यूचर पॉइण्ट
पोस्ट बॉक्स ❸
गंगापुर सिटी-322201 (राजस्थान)
☎ (07463) 235525

प्रमोद सागर
तंत्र-मंत्र-यंत्र विशेषज्ञ
प्रख्यात ज्योतिर्विद
फेंगशुई व पिरामिड विशेषज्ञ

घर बैठे अपनी मनपसंद पुस्तकें (डाक) V.P.P. द्वारा मंगवाएँ

1. शुद्ध जन्म पत्री कैसे बनाएँ? (डा० मान) 400से ज्यादा पेज	110.00
2. लाल किताब (अनिष्ट ग्रहों के उपायों सहित)	100.00
3. लाल किताब और चमत्कारी टोटके (उपाय हर राशि के)	85.00
4. भृगु ज्योतिष (400 पेज)	110.00
5. जन्म कुंडली द्वारा भविष्य जानिये	70.00
6. वास्तु शास्त्र (इंजि के०के०शर्मा)	100.00
7. भारतीय वास्तू शास्त्र	85.00
8. वास्तु शास्त्र तथा हम व हमारा भवन	50.00
9. हस्त रेखा शास्त्र (500 चित्रों सहित) [पराशर]	50.00
10. हस्त रेखा शास्त्र (कीरो) 192 पेज	60.00
11. हस्त रेखा ज्ञान (डा० मान) 304 पेज	100.00
12. आपके रंग, तिल व हस्ताक्षर क्या कहते हैं	50.00
13. आपकी हस्त, मस्तक व पाद रेखायें बोलती है व भाग्य खोलती है	10.00
14. संपूर्ण भाग्य दर्पण (डा० मान)	150.00
15. अंक ज्योतिष और आपका व्यवसाय (डा० मान)	85.00
16. चमत्कारी अंक ज्योतिष (डा० मान)	60.00
17. कब होगा आपका भाग्योदय (डा० मान)	150.00
18. अंक ज्योतिष	50.00
19. रत्नों के चमत्कार	50.00
20. रत्न ज्योतिष	50.00
21. स्वप्न ज्योतिषफल	50.00
22. प्रश्नफल ज्योतिष	50.00
23. राशियों द्वारा प्रेम विवाह	50.00
24. संपूर्ण मुहूर्त ज्योतिष दीपिका	50.00
25. आयु एवं भाग्य दीपिका	50.00
26. रुद्राक्ष पहनिये भाग्य बदलिये	50.00
27. चाणक्य नीति	50.00
28. मनु स्मृति	50.00
29. विदुर नीति	50.00
30. जन्मांग और वर्षफल विचार	50.00

कोई भी पुस्तक घर बैठे मंगवाने के लिए पुस्तक का पूरा मूल्य एडवांस M.O. अवश्य भेजें, बिना एडवांस पुस्तकें नहीं भेजी जाएगी।

NOV 2003 — पुस्तक मंगवाने का पता — 2212696

अमित पाकेट बुक्स, नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर

राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त विद्वान लेखक प्रमोद सागर रत्न ज्योतिष, तंत्र-मंत्र-यंत्र, वास्तु, फेंगशुई और गुह्यविद्या के स्थापित हस्ताक्षर हैं। पिछले अल्पसमय में ही आपने तत्संबंधी अनेकों पुस्तकें देश को दी हैं। वे प्रयोगधर्मी और अनुभववाद पर भरोसा करते हैं। हनुमान सिद्धि ऐसी ही एक पुस्तक है जिसमें अनुभव और प्रयोगों का सम्मीश्रण है। पाठकों के लिए संग्रहणीय पुस्तक है।

श्री चौक वाले बालाजी

गंगापुर सिटी (राजस्थान)

महामाया पब्लिकेशन्स

जालन्धर-दिल्ली